हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

बिलासपुर, बुधवार 9 अप्रैल 2025

सुशासन तिहार 2025

श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

संवाद से समाधान तक

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

समस्याओं का समाधान
आपके शहर, आपके ग्राम

08 अप्रैल से 31 मई, 2025

सुशासन तिहार 2025

आवेदन क्रमांक: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐
Y Y M L L L L L L A A A A A

जिला: .... विकासखण्ड: ....

ग्राम पंचायत: .... ग्राम: ....

विभाग का नाम: .... मांग/शिकायत: ....

आवेदक का नाम: .... मोबाइल नं.: ....

आवेदन का विषय

आवेदन का विवरण

आवेदक का हस्ताक्षर

आवेदन क्रमांक: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐
Y Y M L L L L L L A A A A A

आवेदक का नाम: ....

प्रभारी अधिकारी का नाम व हस्ताक्षर: ....

नोटः कृपया एक फॉर्म में एक ही शिकायत दर्ज करें, एक से अधिक शिकायत के लिए अलग-अलग फॉर्म भरें।

YY: वर्ष, M: मोड, LLLLLL: लोकैलिटी कोड, AAAAA: आवेदन क्रमांक

प्रथम चरणः
समस्या संबंधी आवेदन
(08 से 11 अप्रैल, 2025)

द्वितीय चरणः
आवेदनों का निराकरण
(लगभग 01 माह)

तृतीय चरणः
समाधान शिविर
(05 से 31 मई, 2025)

आवेदन करने के लिए स्कैन करें

आवेदन नगरीय निकाय/ ग्राम पंचायत कार्यालय या वेबसाइट के माध्यम से कर सकते हैं।

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

- हरिभूमि को मिली रिपोर्ट में हर दिन सामने आ रहे चौंकाने वाले तथ्य
- बगैर दिनांक और उम्र का उल्लेख किए बच्चों के नाम पर चढ़ा दी जमीन
- पक्षकारों ने भी किया स्वीकार कभी कोर्ट नहीं गए फिर भी बंट गया खाता

भारतमाला प्रोजेक्ट के तहत जमीनों के टुकड़े कर मुआवजा लेने के लिए खाता विभाजन का ऐसा मामला सामने आया है, जैसा शायद देश में कहीं नहीं हुआ हो। अजब गजब खाता विभाजन का मामला अभनपुर के ग्राम टोकरो का है। यहां बगैर ऑनलाइन पंजीयन, बगैर ईश्तहार, बगैर डिजिटल बी-1 के ही खाते का विभाजन कर दिया गया, वह भी तब जब कोई भी पक्षकार कोर्ट में उपस्थित तक नहीं हुआ।

मुआवजा डकारने का ऐसा खेल... हाथ से लिखे बी-1 से कर दिए जमीन के टुकड़े

हरिभूमि न्यूज ▸▸| रायपुर

भारतमाला-3

हैरानी का विषय यहीं समाप्त नहीं होता, जिन खातेदारों के नाम खाते का विभाजन किया गया, उनकी उम्र और खाता विभाजन के दिनांक का विवरण भी दर्ज नहीं किया गया है। खास बात यह भी कि तमाम कारनामों को अंजाम भारतमाला प्रोजेक्ट के तहत रायपुर विशाखापट्टनम एक्सप्रेस वे की अधिसूचना जारी होने के महीनेभर के भीतर दिया गया। हरिभूमि को मिली पांच सौ पन्नों की रिपोर्ट में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आ रहे हैं। सिर्फ टोकरो ही नहीं, नियमों को दरकिनार कर खाता विभाजन नायकबांधा, सातपारा से ▸▸| शेष पेज 6 पर

हाथ से बना दिया बी-1 का पेपर

कम्प्यूटर और लैपटॉप के युग में हाथ से लिखे बी-1 का मामला भी अचरज में डालता है। ग्राम टोकरो में की गई गड़बड़ी के संबंध में प्रस्तुत जांच रिपोर्ट से पता चलता है पटवारी ने दिनांक का उल्लेख किए बगैर हाथ से लिखा हुआ बी-1 प्रस्तुत कर दिया। जबकि खासा विभाजन के लिए ऑनलाइन और डिजिटल हस्ताक्षरित बी-1 फार्म संलग्न किया जाना था। इस तरह तमाम नियमों को दरकिनार कर दिया गया।

इसलिए उम्र और दिनांक दर्ज नहीं

खाता विभाजन से लेकर नामांतरण और रजिस्ट्री के प्रकरण में उम्र और दिनांक का उल्लेख करना जरूरी होता है। चुंकि टोकरो में पटवारी हल्का नंबर 24 में जिन खातेदारों के नाम खाते का विभाजन किया जाना था, उनमें कुछ कम उम्र के बच्चे भी थे। इसलिए उम्र का उल्लेख नहीं किया गया। चुंकि यह कारनामा अधिसूचना जारी होने के बाद किया गया, इसलिए जिम्मेदारों ने तारीख डालना भी मुनासिब नहीं समझा।

ईओडब्ल्यू जुटा रही तथ्य

राज्य सरकार ने भारतमाला प्रोजेक्ट में जांच का जिम्मा ईओडब्ल्यू को सौंप दिया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ईओडब्ल्यू ने प्रकरण से जुड़े दस्तावेजों के लिए शासन से संपर्क किया है। जल्द ही भारतमाला प्रोजेक्ट की जांच ईओडब्ल्यू शुरु कर सकती है। जांच में तेजी आने के साथ ही यह तय है कि प्रकरण में जिनकी भूमिका संदिग्ध है, उनकी मुश्किलें बढ़ेंगी।

खबर संक्षेप

सुकमा मुठभेड़ मामले की याचिका पर सुनवाई टाली

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह अगस्त 2018 की एक घटना की स्वतंत्र जांच के लिए दायर याचिका पर जुलाई में सुनवाई करेगा। इसमें सुकमा जिले में मुठभेड़ में 15 कथित माओवादियों को मार गिराया गया था। न्यायमूर्ति बीआर गवई की पीठ ने कहा, हम जुलाई में इस पर सुनवाई करेंगे।

गोल्डी बराड़ से जुड़े ठिकानों पर एनआईए के छापे

नई दिल्ली। एनआईए ने हरियाणा और उत्तर प्रदेश में बब्बर खालसा इंटरनेशनल के आतंकवादी सतिंदरजीत सिंह उर्फ गोल्डी बराड़ से जुड़े ठिकानों पर तलाशी ली। यह तलाशी दिसंबर 2024 में गुरुग्राम के सेक्टर-29 में वेयरहाउस क्लब और ह्यूमन क्लब पर हुए ग्रेनेड हमलों के मामले में एजेंसी की जांच के सिलसिले में ली गई।

मलाइका के खिलाफ फिर से जमानती वारंट

मुंबई। मुंबई की अदालत ने 2012 में प्रवासी भारतीय व्यवसायी से अभिनेता सैफ अली खान द्वारा कथित रूप से मारपीट किए जाने संबंधी मामले में गवाह के तौर पर पेश नहीं होने पर अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा के खिलाफ फिर से जमानती वारंट जारी किया है। मलाइका घटना के वक्त मौजूद थीं।

ब्रह्माकुमारीज की दादी रतनमोहिनी का निधन

जयपुर। राजस्थान के सिरोही जिले के आबूरोड स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रमुख तथा ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासक राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी का निधन हो गया है। वह 101 वर्ष की थीं। उन्होंने अहमदाबाद के एक अस्पताल में सोमवार देर रात अंतिम सांस ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

अपना खोया किला पाने के लिए गुजरात में कांग्रेस की कार्यसमिति

कांग्रेस की जिला कमेटियों को मिलेगी ताकत, धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति से मुकाबले का संकल्प

हरिभूमि न्यूज ▸▸| अहमदाबाद

कांग्रेस की सर्वोच्च नीति निर्धारक इकाई कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) ने भविष्य की रूपरेखा, जिला कांग्रेस कमेटियों को सशक्त बनाने समेत संगठन की मजबूती, जवाबदेही तय करने और आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों पर मंथन किया। विस्तारित कार्य समिति की इस बैठक में अधिवेशन से संबंधित प्रस्तावों पर विचार-विमर्श किया गया। इधर, बैठक में प्रस्ताव पारित कर धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति से मुकाबले का संकल्प लिया गया।

कांग्रेस ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की विरासत का उल्लेख करते हुए मंगलवार को भाजपा पर तीखा प्रहार किया और कहा कि सत्तारूढ़ दल की धार्मिक ध्रुवीकरण और विभाजन की राजनीति का वह पटेल के मार्ग का अनुसरण करते हुए मुकाबला करेगी। कांग्रेस की यहां 'सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय स्मारक' पर आयोजित विस्तारित कार्य समिति की बैठक में पूर्व उप प्रधानमंत्री की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक विशेष प्रस्ताव भी पारित किया गया। बैठक के बाद कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने संवाददाताओं से कहा, आज, हमने ऐतिहासिक सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक पर एक विस्तारित कार्य समिति की बैठक की। यह बैठक पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है, क्योंकि इस वर्ष महात्मा गांधी के कांग्रेस की अध्यक्षता की 100वीं वर्षगांठ और सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती मनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि बैठक में पटेल को लेकर एक विशेष प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव में कहा गया, आज धार्मिक ध्रुवीकरण और सांप्रदायिकता की विचारधारा देश को ▸▸| शेष पेज 6 पर

चिंतन-मंथन

- गुजरात में कांग्रेस का दो दिन का मंथन
- कांग्रेस की संगठनात्मक मजबूती लक्ष्य
- संगठन की मजबूती, जवाबदेही तय करने पर चर्चा

आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों पर मंथन

खड़गे ने भाजपा-संघ पर बोला हमला

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर तीखा हमला बोला। खड़गे ने आरोप लगाया कि पिछले कई सालों से कई राष्ट्रीय नायकों को लेकर एक सोचा समझा षड्यंत्र चलाया जा रहा है। उन्होंने यहां पार्टी की विस्तारित कार्य समिति की बैठक में यह भी कहा कि सरदार पटेल की विचारधारा आरएसएस के विचारों के विपरीत थी और यह हास्यास्पद है कि आज इस संगठन के लोग सरदार पटेल की विरासत पर दावा करते हैं। खरगे ने यह दावा भी किया कि आज सांप्रदायिक विभाजन के जरिये देश के बुनियादी मसलों से ध्यान भटकाया जा रहा है।

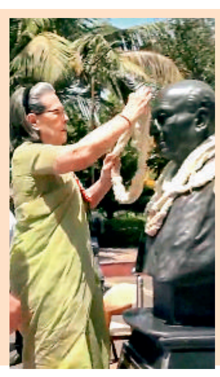

पायलट बोले- भाजपा को देंगे चुनौती

कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने कहा कि जिला कांग्रेस कमेटियों को नया स्वरूप प्रदान किया जाएगा। जिला अध्यक्षों को अधिक राजनीतिक ताकत देकर हर गांव, मंडल व बूथ तक पहुंचने का प्रयास होगा। पायलट ने कहा कि कांग्रेस एकजुट होकर भारतीय जनता पार्टी को मजबूत चुनौती देगी और आने वाले चुनावों में जीत हासिल करेगी।

आखिर गुजरात क्यों?

गुजरात में कांग्रेस का आखिरी अधिवेशन 1961 में भावनगर में हुआ था, अब 64 साल बाद कांग्रेस ने एक बार फिर अगर गुजरात का रुख किया है तो इसके पीछे कहीं न कहीं गुजरात में अपना दरका हुआ किला फिर से पाने की चाहत है। दरअसल, देश की आजादी की लड़ाई के इतिहास से निकली कांग्रेस जानती है कि देश के आजादी के इतिहास और उसके बाद भारत के स्वरूप में गुजरात की कितनी बड़ी भूमिका रही है। दरअसल, 2014 में पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने लंबे समय से सत्ता में रही कांग्रेस को बाहर करने के लिए जिस गुजरात मॉडल का नरेटिव दिया, उस मॉडल का तोड़ने के लिए गुजरात जीतने की जरूरत है।

आज अधिवेशन

9 अप्रैल को सुबह साढ़े नौ बजे रिवर फ्रंट पर कांग्रेस अधिवेशन होगा। सुबह ध्वजारोहण होगा। अधिवेशन के अंत में मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और राज्यों के सीएम और पूर्व सीएम अपनी बात रखेंगे।

सैर-सपाटे के दौरान हादसा

अमृतधारा जलप्रपात में डूबने से एसईसीएल के दो अफसरों की मौत

हरिभूमि न्यूज ▸▸| बैकुण्ठपुर/मनेन्द्रगढ़

- नहाते समय पैर फिसलने से गहराई में समा गई दो जिंदगी

एमसीबी जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल अमृतधारा जलप्रपात में मंगलवार को सैर-सपाटे के दौरान बड़ा हादसा हो गया। एसईसीएल हल्दीबाड़ी कॉलरी में पदस्थ दो युवा अधिकारी जलप्रपात के नीचे गहरे पानी में डूब गए, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। मृतकों की पहचान शुभम मनहर उम्र 32 वर्ष निवासी शहडोल, मध्य प्रदेश और पृथ्वीराज उम्र 36 वर्ष निवासी तेलंगाना के रूप में हुई है। मृतक असिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत बताए जा रहे हैं।

जानकारी के अनुसार 8 अप्रैल को करीब 3 बजे एसईसीएल के 8 अधिकारी-कर्मचारियों का दल छुट्टी के दिन पिकनिक मनाने अमृतधारा पहुंचा था। पिकनिक के दौरान दोनों अधिकारी जलप्रपात के नीचे स्नान के लिए उतरे, लेकिन गहराई और बहाव का अंदाजा न होने के कारण पानी में डूबते चले गए। ▸▸| शेष पेज 6 पर

लापरवाही पड़ी भारी

अमृतधारा जलप्रपात में पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। सुरक्षा के लिहाज से प्रशासन ने चेतावनी बोर्ड लगाए हैं और स्नान से बचने की अपील की है बावजूद इसके लोग लापरवाही करते हुए गहरे पानी में उतर जाते हैं। मंगलवार की यह घटना भी सावधानी की अनदेखी का नतीजा साबित हुई, जिसने दो घरों के चिराग असमय ही बुझा दी।

'नो प्रॉफिट नो लॉस' को बनाया वसूली का औजार, शुल्क निर्धारण का नियम नहीं इसलिए खुद तय कर डाली अनाप-शनाप राशि

हरिभूमि न्यूज ▸▸| रायपुर

हरिभूमि फॉलोअप

ट्यूशन फीस की तरह निजी मेडिकल कालेज में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों के हास्टल, मेस और ट्रांसपोर्टिंग शुल्क निर्धारण करने का सिस्टम नहीं है। केवल नो प्रॉफिट नो लॉस के आधार पर कालेज प्रबंधन इस शुल्क का निर्धारण करता है। राज्य के तीन निजी मेडिकल कालेज ने इसी सिस्टम को वसूली का हथियार बना डाला और सुविधाओं के नाम पर अनाप-शनाप राशि तय कर डाली। इतना ही नहीं, यह फीस केवल सुविधाभोगी विद्यार्थियों से लेनी थी, मगर कालेज वालों ने सबसे इसकी वसूली कर डाली। निजी मेडिकल कालेजों को ▸▸| शेष पेज 6 पर

मामला तीन निजी मेडिकल कालेजों में विद्यार्थियों से अतिरिक्त वसूली का

भेजी जा चुकी कॉपी

चिकित्सा शिक्षा संचालक एवं फीस विनियामक समिति के सदस्य डा. यूएस पैकरा ने बताया कि छात्र हित में लिए गए निर्णय का पालन करने कॉपी तीनों कालेजों को भेजी जा चुकी है। तीनों कालेजों पर 10-10 लाख का जुर्माना भी किया गया है, जिसकी अदायगी एक माह के भीतर करना होगा। ऐसा नहीं होने पर कालेज की मान्यता समाप्त करने की अनुशंसा भी की गई है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को अतिरिक्त शुल्क वापसी के लिए भी सिस्टम बनाने पर विचार किया जाएगा।

बड़े खर्च का बहाना

अनाप-शनाप फीस की वसूली के लिए निजी कालेजों द्वारा संचालन में बड़ा खर्च होने का बहाना बनाया जाता है। जानकार सूत्रों का कहना है कि किसी भी कालेज को नुकसान नहीं उठाना पड़ रहा है। राज्य के एक बड़े निजी मेडिकल कालेज का टर्नओवर प्रत्येक वर्ष डेढ़ सौ करोड़ का है। सामान्य विद्यार्थियों से मोटी फीस के अलावा एनआरआई कोटे के नाम पर एक करोड़ से ज्यादा शुल्क लिया जाता है। अतिरिक्त वसूली की जद में एमबीबीएस के साथ इन कालेजों में एमडी-एमएस की पढ़ाई करने वाले डाक्टर भी आते हैं।

भाजपा नेता के आवास पर 'विस्फोट' से हड़कंप

एजेंसी ▸▸| चंडीगढ़

विपक्ष ने आप सरकार को घेरा

पंजाब के जालंधर जिले में भारतीय जनता पार्टी के नेता मनोरंजन कालिया के आवास पर एक 'विस्फोट' किया गया, जिससे इलाके में दहशत फैल गई। कालिया पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं भाजपा की पंजाब इकाई के पूर्व अध्यक्ष हैं। वह भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं। पुलिस ने बताया कि जालंधर में शास्त्री मार्केट के पास कालिया के आवास के बाहर सोमवार देर रात करीब एक बजे तेज आवाज सुनी गई। पुलिस उपायुक्त मनप्रीत सिंह ने बताया कि इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि फोरेंसिक टीम मामले की जांच कर रही है। कालिया ने पत्रकारों से कहा कि यह हथगोले से किया गया विस्फोट हो सकता है।

ईपीएफओ के कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए बड़ा फैसला

अब केवल चेहरा दिखाने से ही जनरेट हो जाएगा यूएएन नंबर

हरिभूमि न्यूज ▸▸| नई दिल्ली

ईपीएफओ के तहत आने वाले कर्मचारियों के लिए सरकार ने एक और अच्छी खबर का एलान किया है। केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने मंगलवार को बताया कि सेवानिवृत्ति कोष निकाय ईपीएफओ की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में शामिल कर्मचारी अब केवल चेहरे की पहचान कराकर ही सार्वभौमिक भविष्य निधि खाता संख्या (यूएएन) ▸▸| शेष पेज 6 पर

क्या होगा फायदा

नई प्रक्रिया के लाभ यह है कि इसमें आधार की 100 प्रतिशत पुष्टि होती है। अब उमंग ऐप के माध्यम से आसानी से अपना यूएएन सक्रिय कर सकते हैं। चेहरा प्रमाणीकरण का उपयोग करने से ओटीपी-आधारित प्रमाणीकरण की सुरक्षा मिलती है।

कैसे जनरेट होगा यूएएन

उमंग एप खोलना होगा। फेस ऑथेंटिकेशन के जरिए यूएएन आवंटन और एक्टिवेशन के चरणों का पालन करना होगा। आधार-आधारित सत्यापन के बाद, यूएएन जनरेट हो जाएगा और मोबाइल नंबर पर एसएमएस के जरिए इसे भेज दिया जाएगा।

पेंशन में देरी पर बैंकों को देना होगा 8 फीसदी ब्याज

हरिभूमि न्यूज ▸▸| नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक के एक हालिया निर्देश में रिटायर केंद्रीय और राज्य सरकार के कर्मचारियों को पेंशन बांटने के लिए जिम्मेदार सभी बैंकों को अब पेंशन भुगतान में किसी भी देरी के लिए 8 फीसदी प्रति वर्ष का ब्याज देना अनिवार्य है। आरबीआई के मास्टर सर्कुलर में बढ़ोतरी इस आवश्यकता का उद्देश्य पेंशनभोगियों को उनके बकाया के देर से ▸▸| शेष पेज 6 पर

बुजुर्गों का रखा गया ख्याल

सर्कुलर में कहा गया है, पेंशन डिस्ट्रिब्यूट करने वाले सभी एजेंसी बैंकों को सलाह दी जाती है कि वे पेंशनभोगियों, खासकर उन पेंशनभोगियों को जो वृद्ध हैं। उनके लिए विचारशील और सहानुभूतिपूर्ण ग्राहक सेवा प्रदान करें।

आरबीआई ने जारी किए निर्देश

बैंकों को आरबीआई से निर्देशों की वेट किए बिना पेंशन भुगतान पूरा करने का निर्देश दिया गया है, इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जाता है कि पेंशनभोगियों को अगले महीने के भुगतान चक्र में उनका लाभ मिले। बैंकों से बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने का आग्रह किया है।

चिंतन

राज्यपाल अपनी 'शक्ति' के दायरे में ही काम करें

रा राज्यपाल और मुख्यमंत्री के बीच टकराव का देश में पुराना इतिहास रहा है। ताजा मामला तमिलनाडु का है, जिसमें सुप्रीम अदालत ने तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि को संवैधानिक आईना दिखाया है। उच्चतम न्यायालय ने राज्यपाल आरएन रवि द्वारा रोके गए और राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रखे गए 10 विधेयकों को मंजूरी दे दी, साथ ही राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए राज्यपालों के लिए समयसीमा भी तय कर दी है। उच्चतम न्यायालय ने सख्त लहजे में कहा, 'दस विधेयकों को राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रखने का राज्यपाल का कदम गैरकानूनी और मनमाना है, इसलिए इसे खारिज किया जाता है। तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पारित 10 विधेयकों को उस तारीख से स्वीकृत माना जाएगा जिस दिन इन्हें राज्यपाल के समक्ष पुनः प्रस्तुत किया गया था। शीर्ष अदालत ने तमिलनाडु के राज्यपाल को पुनः भेजे गए विधेयकों को पारित माने जाने के लिए संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत प्रदत्त अधिकार का इस्तेमाल किया है। समय सीमा निर्धारण का शीर्ष अदालत का अपनी तरह का पहला आदेश है। न्यायालय ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल द्वारा कार्य निर्वहन किए जाने को लेकर कोई स्पष्ट समयसीमा निर्धारित नहीं है। कोई निश्चित समयसीमा न होने के बावजूद, अनुच्छेद 200 को इस तरह से नहीं पढ़ा जा सकता कि यह राज्यपाल को उन विधेयकों पर कार्रवाई नहीं करने की अनुमति देता है, जिन्हें उनके सम्मुख संस्तुति के लिए प्रस्तुत किया गया है। पीठ ने समयसीमा तय करते हुए कहा कि किसी विधेयक पर मंजूरी रोककर उसे मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से राष्ट्रपति के लिए सुरक्षित रखने की अधिकतम अवधि एक माह होगी। यदि राज्यपाल ने मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह के बिना सहमति को रोकने का फैसला किया है तो विधेयकों को तीन महीने के अंदर विधानसभा को लौटाया जाना चाहिए। समयसीमा का पालन नहीं होने पर अदालतों में न्यायिक समीक्षा होगी। समय सीमा के निर्धारण से विधानसभा व राजभवन के बीच जानबूझकर टकराव की स्थिति पैदा नहीं हो सकेगी। सुप्रीम कोर्ट का यह सराहनीय पहल है। अतीत में अनेक बार राज्यपाल और मुख्यमंत्री के बीच टकराव की स्थिति बनी है। गैर भाजपा शासित राज्यों में राज्यपालों की भूमिका सवालों के घेरे में रहे हैं। अतीत में केरल, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, पंजाब आदि राज्यों में चुनी हुई सरकार व राजभवन के बीच टकराव देखने को मिला है। जब केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी, तब सबसे अधिक अनुच्छेद 356 कर दुरूपयोग देखने को मिला था। जनता पार्टी की अल्प समय की सरकार के समय भी राज्यपाल ने अपनी शक्ति का दुरूपयोग किया था। तमिलनाडु व छत्तीसगढ़ के मामले में पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि राज्य का निर्वाचित प्रमुख नहीं होने के नाते, राज्यपाल विधानसभा सत्र की वैधता पर संदेह नहीं कर सकते या सदन द्वारा पारित विधेयकों पर अपने फैसले को अनिश्चित काल तक रोक नहीं सकते। राज्यपाल को विधानसभा से पारित क़ानून पर सवाल-जवाब करने का अधिकार नहीं है। या तो वे विधेयक पर हस्ताक्षर करें या इस वापस करें। राज्य की विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को राज्यपालों द्वारा दबाए रखना 'आग से खेलने वाला' कदम है जो 'चिंता का विषय' है। अब सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि राज्यपाल 'पूर्ण वीटो' या 'आंशिक वीटो' (पॉकेट वीटो) की अवधारणा नहीं अपना सकते। राज्यपाल अपनी संवैधानिक शक्ति के दायरे में ही काम करें तो गरिमा बनी रहेगी।

ऑनलाइन गेमिंग एप्स

मुरारी गुप्ता

अकर्मण्यता के जाल में युवा ऊर्जा

ज यपुर जिले के कुणाल सिंह को कुछ सालों पहले आईपीएल देखने का चस्का लगा था। मोबाइल पर आईपीएल देखते-देखते वह इसी खेल से जुड़े ऑनलाइन गेम एप में रजिस्टर हो गया। अब क्रिकेट देखने के साथ एप पर खेलने का चस्का लगा। क्रिकेट से ज्यादा एप का शौक पैदा हुआ। कुछ पैसे खाते में आने लगे। उसका चस्का और बढ़ा। पैसा जीतने और हारने के खेल में उसने अपना घर गिरवी रख दिया। घर गिरवी रखने के बाद अब उसकी मानसिक हालात ऐसी है कि वह पागलों की तरह व्यवहार करने लगा है। आये दिन घर में पत्नी और बच्चों के साथ मार-पीट और जैसे-तैसे उधार लेकर नशा उसका रूटीन बन गया है। सड़क के ऊपर चमचमाते बोर्डों पर बड़ी खेल और फिल्म शख्सियतों की तस्वीरों के साथ दिखाए जा रहे रातों-रात अमीर होने के सपनों में देश के युवा किसी गहरी,अनजानी और अकर्मण्यता की सुनसान गली में धंसते जा रहे हैं। यह ऐसी संकरी गली है, जिसकी संकरी दीवारों पर चमचमाते ख्वाब उगे हुए हैं, मगर उनकी जड़ें उंगली भर भी नहीं है। यह लत की संकरी गली है, जिसमें वापसी का कोई रास्ता नहीं है। कई बार यह संकरी गली जीवन के बर्बाद होने और आत्महत्या के महासागर में भी मिल जाती है। तकनीक के विकास के साथ ऑनलाइन गेमिंग एप्स युवाओं के जीवन का दिलचस्प अंग बन चुके हैं। हालांकि, ये एप्स मनोरंजन और कौशल विकास के कुछ अवसर प्रदान कर सकते हैं, लेकिन इनके बढ़ते प्रभाव ने समाज में अनके तरह की चिंताएं पैदा कर दी है। ऑनलाइन सट्टेबाजी, फैंटेसी गेम्स और अन्य प्लेटफॉर्म्स ने नई पीढ़ी को आर्थिक और मानसिक रूप से बुरी तरह झकझोर दिया है। दुर्भाग्य की बात यह है कि जिन्हें युवा पीढ़ी अपना भाग्य समझती है, अपना सितारा समझती है, वे सितारे ही इन गेम्स को प्रमोट करते नजर आते हैं। इनमें कुछ तो पद्मश्री प्राप्त सितारे भी हैं। बड़ी सेलिब्रिटीज और क्रिकेट खिलाड़ियों द्वारा इनका प्रचार किए जाने से इन गेम्स को सामाजिक स्वीकृति मिल रही है। यह एक गंभीर मुद्दा है। ऑनलाइन गेमिंग एप्स का सबसे बड़ा नकारात्मक प्रभाव युवाओं की उत्पादकता पर पड़ रहा है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि गेमिंग की लत नई पीढ़ी में एकाग्रता की कमी के साथ उनमें मानसिक तनाव और आक्रामकता को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत में लॉटरी गैर कानूनी है। देश में लॉटरी रेगुलेशन एक्ट-1998 लागू है। ये एक्ट साफ तौर पर लॉटरी खेलने पर प्रतिबंध लगाता है। हालांकि इसमें एक छूट दे रखी है कि अगर राज्य सरकारें अपनी आधिकारिक लॉटरी चलाना चाहें, तो ऐसा कर सकती हैं। हालांकि कुछ राज्यों में अब भी लॉटरी चल रही हैं, लेकिन फैंटेसी गेम्स के नाम पर अब कई ऑनलाइन गेम्स चल रहे हैं, जिसे वैधानिक छूट भी प्राप्त है। हालांकि कुछ राज्य सरकारों ने इन फैंटेसी गेम एप्स पर भी प्रतिबंध लगा रखा है। इन गेम्स को कौशल आधारित खेल बताया जाता है, जिसमें गेम खेलने वाला कथित तौर पर अपने कौशल का उपयोग कर टीम बनाता है, और गेम खेलता है। ऑनलाइन गेमिंग के साथ अंतर केवल इतना है कि यह अब डिजिटल हो गया है और बड़ी-बड़ी हस्तियां इसे प्रमोट कर रही हैं। विज्ञापनों में दिखाया जाता है कि ये गेम्स मनोरंजन और कौशल के लिए हैं, लेकिन असल में ये जुए को ही बढ़ावा देते हैं। युवाओं पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वे अपने आदर्शों को फॉलो करते हैं। बड़ा सवाल क्या यह है कि क्या यह नैतिक रूप से उचित है? बड़ी हस्तियों का समाज पर प्रभाव होता है। यदि वे नैतिक जिम्मेदारी निभाएं, तो समाज में सकारात्मक बदलाव लाए जा सकते हैं। राज्य को ऑनलाइन गेमिंग एप्स को नियंत्रित करने के लिए सख्त कानून बनाने चाहिए। गेमिंग रेगुलेशन बनाकर एक स्पष्ट कानून बनाना चाहिए जिससे इन एप्स की गतिविधियों को नियंत्रित किया जा सके। सेलिब्रिटीज को ऐसे गेम्स के प्रचार से रोका जाए। इन प्लेटफॉर्म्स पर 21 वर्ष से कम आयु के लोगों की भागीदारी पर रोक लगनी चाहिए। युवाओं को सिखाया जाए कि कैसे सही तरीके से निवेश किया जाए और आर्थिक नुकसान से बचा जाए। समाज के स्तर भी जागरूकता की आवश्यकता है। माता-पिता को बच्चों पर नजर रखने की जरूरत है। स्कूलों और कॉलेजों में ऑनलाइन गेमिंग की लत से बचने के उपायों पर चर्चा होनी चाहिए। ऑनलाइन गेमिंग एप्स, विशेष रूप से सट्टा आधारित खेल, समाज के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुके हैं। यदि सरकार और समाज ने समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया, तो यह समस्या और विकराल रूप धारण कर सकती है। एक पूरी पीढ़ी अकर्मण्यता की शिकार हो सकती है, जिसका खामियाजा अंततः देश और समाज को होगा।

(लेखक उपन्यासकार और डीडी न्यूज में संपादक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

विश्लेषण

ऋतुपर्ण दवे

ट्रंप के टैरिफ से सकते में दुनिया

उनके व्यवसाय को जापानियों से मिली चुनौतियों के चलते 1990 के दशक की घटना है जिससे क्रुद्ध ट्रंप अब पलटवार कर रहे हैं। यह अर्से से उनके मन में पाला हुआ मंसूबा है। वास्तव में ट्रंप के मन में जापानियों की प्रतिभा को लेकर पनपा ईर्ष्या भाव ही आज उनके टैरिफ की असल वजह है। वो मानते हैं कि जब मुक्त व्यापार अस्तित्व में नहीं था तब जापान, अमेरिका के बाजार में जबरदस्त पैठ बना रहा था, लेकिन अपने यहां व्यापार करना असंभव सा कर दिया था। बस यही टीस बिजनेसमैन ट्रंप को घर कर गई। कहीं बदली हुई परिस्थितियों में अमेरिका ही हाशिए पर न चला जाए? अच्छा होता कि इतनी सी बात को तो ट्रंप समझ पाते!

ट्रं प के मन में टैरिफ को लेकर आया विचार एकाएक नहीं है। उनके व्यवसाय को जापानियों से मिली चुनौतियों के चलते 1990 के दशक की घटना है, जिससे क्रुद्ध ट्रंप अब पलटवार कर रहे हैं। यह अर्से से उनके मन में पाला हुआ मंसूबा है। वास्तव में ट्रंप के मन में जापानियों की प्रतिभा को लेकर पनपा भाव ही आज उनके टैरिफ की असल वजह है। वो मानते हैं कि जब मुक्त व्यापार अस्तित्व में नहीं था तब जापान, अमेरिका के बाजार में जबरदस्त पैठ बना रहा था, लेकिन अपने यहां व्यापार करना असंभव सा कर दिया था। बस यही टीस बिजनेसमैन ट्रंप के मन में घर कर गई और उनके मन में एक गांठ बन गई। हालांकि उसी दौर में उन्हें नकदी की जबरदस्त जरूरत हुई और मजबूरन जापान की ओर आस भरी निगाहों से देखने लगे, लेकिन ट्रंप 1980 के दशक से ही इस बात से बखूबी वाकिफ थे कि मशहूर जापानी निवेशक रॉकफेलर अमेरिकी ब्रांड्स और संपत्तियों के अधिग्रहण का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इससे उनके नजरिये में ऐसा बदला जो आज आयात पर टैरिफ के सच के रूप में हम सबके सामने है। यहीं से उनके दिमाग में अमेरिका का राष्ट्रपति बनने का मंसूबा भी बना और वो लंबी रणनीतियों और विचारों को लोगों से सार्वजनिक मंच पर जाहिर भी करने लगे।

वर्ष 1987 में ट्रंप की किताब 'ट्रंप- द आर्ट ऑफ द डील' में अमेरिकी व्यवसाय पर उनकी विस्तृत सोच के साथ मंशा भी झलकती है। लोकप्रिय द ओपरा शो के होस्ट ओपरा विनफ्रे के साथ भी तभी एक लाइव कार्यक्रम में उनका साफ-साफ कहना कि अमेरिकी विदेश व्यापार नीति को वो कैसे सबसे अलग तरीके से संभालेंगे और इससे अमेरिका के लिए सही कीमत वसूलेंगे उनका रणनीतिक शो था। इतना ही नहीं ट्रंप ने अपने विचारों को एक खुली चिट्ठी के रूप में अमेरिका के सर्वाधिक लोकप्रिय तीन समाचार पत्रों में भी बतौर विज्ञापन प्रकाशित करवाया, जिसमें उनके एक लाख डॉलर खर्च हुए थे। मतलब उनका नजरिया पहले ही साफ हो चुका था। यहां यह भी नहीं भूलना चाहिए कि उनकी सोच और वास्तविकता में तब और अब में काफी फर्क है। आज अमेरिका का सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी चीन है न कि जापान। 1990 के दशक के युवा रियल एस्टेट डेवलपर डोनाल्ड ट्रंप की सोच आज भी वही है, जबकि धरातल पर समय के साथ काफी कुछ बदल गया है, लेकिन ट्रंप हैं कि मानते ही नहीं। बतौर राष्ट्रपति और व्यवसायी ऐसी सोच अंतरराष्ट्रीय हितों के खिलाफ हो सकती है। जैसा कि साफ झलक रहा है, इससे अमेरिका में विदेशी व्यापारिक निवेश घटेगा जिसका अंतरराष्ट्रीय गठबंधन पर भी असर पड़ेगा। सौ देशों की अमेरिकी 'डिस्काउंटेड रेसिप्रोकल टैरिफ' वाली सूची में भारत भी शामिल है, जिस पर 26 प्रतिशत टैरिफ है जो कई एशियाई देशों की तुलना में कम है। भले ही भारत पर इसका प्रभाव अभी कम पड़े, लेकिन भविष्य को लेकर इसकी कोई गारंटी भी तो नहीं कि कब और कितना बढ़ जाए? इधर चीन ने भी अमेरिका पर 34 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, जिस पर तिलमिलाए ट्रंप ने 9 अप्रैल तक

इसे वापस नहीं लेने पर 50 प्रतिशत टैरिफ की धमकी दे रहे हैं। अगर अमेरिका अपने हिसाब से चलने की जिद करेगा तो चीन भी आखिर तक लड़ेगा।

वहीं दूसरी तरफ ब्लूमबर्ग की हालिया सूची बताती है कि ट्रंप के करीबी मस्क की कुल नेटवर्थ 300 अरब डॉलर के नीचे चली गई है। जनवरी 2025 से अब तक 135 अरब डॉलर यानी करीब 12 लाख करोड़ रुपये का नुकसान उठा चुके हैं। इसी सोमवार को अमेरिकी बाजार में आई गिरावट से एलन मस्क़ को करीब 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, जबकि बीते हफ्ते दो दिन में ही मस्क के 31 अरब डॉलर डूब गए। इस तरफ ट्रंप के अघोषित टैरिफ वार से विश्व में सबसे ज्यादा नुकसान उठाने वालों की सूची में मस्क छठे क्रम पर आ चुके हैं। इस तरह से देखा जाए तो कुल मिलाकर आसार बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं।

नए बजट में ग्रामीण विकास के लिए किया गया 1,88,754 करोड़ तथा किसान कल्याण के लिए बीते बरस की तुलना में 11 प्रतिशत ज्यादा यानी 1.71 लाख करोड़ रुपयों का बजट में प्रावधान बताता है कि हमने अपने आर्थिक मोर्चों पर कैसी तैयारी कर रखी है। यह भी उल्लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भले ही 02 अप्रैल 2025 को अमेरिका का मुक्ति दिवस बता रहे हों, लेकिन जिस तरह से दुनियाभर के शेयर बाजार धराशायी हुए, उससे कुछ अलग ही समझ आ रहा है। ट्रंप भले ही कहें कि हमारे करदाताओं को 50 से अधिक वर्षों से लूटा जा रहा है, लेकिन रेसिप्रोकल टैरिफ लगाने वाला उनका आदेश उनकी ईर्ष्या, खीझ और अजीब सी दूरगामी सोच का ही दर्शाता है। इसमें कोई संदेह नजर नहीं आ रहा है।

अब अमेरिकी प्रोडक्ट्स पर यूरोपीय यूनियन के टैरिफ के लिए 9 अप्रैल का इंतजार करना होगा, जिस पर मतदान होना है। यदि यह भी जस का तस जैसे रहा तो आसार और बिगड़ सकते हैं। पहले ही दुनियाभर के शेयर बाजार धड़ाम हो चुके हैं और खुद अमेरिका भी इसके असर से अछूता नहीं है।

ट्रंप का अमेरिका में ही विरोध होने लगा है। उन्हें न केवल तानाशाह, बल्कि अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने वाला सनकी तक कहा जाने लगा है। सभी पचास राज्यों में 150 संगठनों का 1200 से ज्यादा प्रदर्शनों में हजारों का जुटना बताता है कि चिंता कितनी गंभीर है। 'हैंड्स ऑफ' नाम के इस प्रदर्शन में शनिवार को हजारों लोग जुटे। 2017 में महिला मार्च और 2020 में ब्लैक लाइव्स आन्दोलन के बाद ट्रंप का ऐसा भारी विरोध हो रहा है। इसके साथ ही एक अहम बात यह भी है कि एलन मस्क का दखल भी अमेरिकियों को पसंद नहीं आ रहा है। उन पर नौकरी में छंटनियों के मंसूबों सहित सत्ता हथियाने जैसे गंभीर आरोप लग रहे हैं। इधर भारत और खुद अमेरिका सहित दुनियाभर के शेयर बाजारों में बीते सोमवार को खुलते ही जबरदस्त तो कहीं ऐतिहासिक गिरावट देखी जा रही है। निश्चित रूप से इसे शुभ संकेत नहीं कहा जा सकता है।

व्यावसायिक हितों और तमाम दूसरे मामलों में सतर्क दुनिया ने एकजुट होकर ट्रंप को जवाब देना शुरू कर दिया है, जिससे वैश्विक ट्रेड वार की आशंका बढ़ गई है। काश ऐसा नहीं होता और डोनाल्ड ट्रंप समझदारी और विवेक से काम लेते। दुनिया में कम से कम खुशहाल इंसानियत के लिए तो सौदेबाजी से बचा जाए, लेकिन ट्रंप नहीं माने और बदली हुई परिस्थितियों में बाकी सभी एकजुट हो आपदा में अवसर तलाशने लगें तो कहीं अमेरिका ही हाशिए पर न चला जाए? अच्छा होता कि इतनी सी बात को तो ट्रंप समझ पाते!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

आनंदमय कोष की प्राप्ति

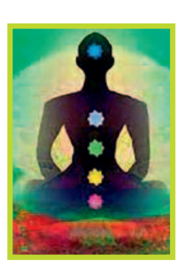

संकलित

दर्शन

अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष के पश्चात प्रवेश होता है आनंदमय कोष में। अन्न से उत्पन्न यह शरीर त्वचा, मांस, चर्म और रुधिर युक्त है। यह आत्मा नहीं है। प्राणमय कोष भी आत्मा नहीं, क्योंकि प्राण वायु के रूप में शरीर में आता-जाता है। मनोमय कोष व्यक्ति को विषयों में आसक्त करता है और आत्मभाव में स्थित नहीं होने देता है, इसलिए यह भी आत्मा नहीं है। जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति, सुख-दुख, जन्म-मरण, लाभ-हानि विज्ञानमय कोष में रहते हैं, इसलिए यह भी आत्मारूप आनंदमय कोष नहीं हो सकता है। श्रीरामचरितमानस में मात्र श्रीभरत इन कोषों का उपादान रूप में उपयोग करते हुए भी आनंदमय कोष हैं, जिनका राम से सर्वथा ऐक्य है। सारा संसार भरत की इस महत भूमिका के कारण ही दीपावली का प्रकाश पर्व मनाता है।दीपावली सनातन संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरा कार्तिक माह घरों तथा व्यापारिक संस्थानों की स्वच्छता व सजावट में लग जाता है। दीपावली के इस दृष्ट बाह्य और लौकिक रूप में कौन-सा आंतरिक तत्व छिपा है, जिसे जानने के पश्चात दीपावली हमें हमारे मूल वैदिक परंपराओं की नींव से जोड़ देती है। श्रीरामचरितमानस में भक्ति के सोपानों का वर्णन अरण्यकांड में है, जिसका विश्लेषण भगवान श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण की जिज्ञासा-समाधान में करते हैं। उसी तरह ज्ञान प्राप्ति के सोपानों का वर्णन मानस के अंतिम उत्तरकांड में काकभुशुंडि जी गरुड़ जी के समक्ष करते हैं।

अनुकरण अच्छा, अंधानुकरण नहीं

संकलित

प्रेरणा

एक गांव में दो युवक रहते थे। दोनों में बड़ी मैत्री थी। जहां जाते साथ-साथ जाते। एक बार दोनों एक धनी व्यक्ति के साथ उसकी ससुराल गए। किसी धनी व्यक्ति के साथ रहने का यह पहला अवसर था, सो वे अपने धनी मित्र की प्रत्येक गतिविधि ध्यान से देखते रहे। गरमियों के दिन थे। रात में उक्त युवक के लिए शयन की व्यवस्था खुले स्थान पर की गई। पर्याप्त शीतलता बनी रहे इसके लिए वहां चारों तरफ जल छिड़का गया और रात को ओढ़ने के लिए बहुत ही हलकी मखमली चादर दी गई। अन्य दोनों युवकों ने इतना ही जाना कि इस तरह का रहन-सहन बड़प्पन की बात है। कुछ दिन बाद उन्हें भी अपनी-अपनी ससुराल जाने का अवसर मिला पर वे दिन गरमी के न होकर शीत के थे। नकल तो नकल ही है। दोनों ने अपना बड़प्पन जताने के लिए बिस्तर खुले आकाश के नीचे लगवाया, लोगों के लाख मना करने पर भी उन्होंने बिस्तर के आस-पास पानी भी छिड़कवाया और ओढ़ने के लिए कुल एक-एक चादर वह भी हलकी ली। रात को पाला पड़ गया सो दोनों को निमोनियां हो गया । चिकित्सा कराई गई तब कठिनाई से जान बची। इतनी कथा सुनाने के बाद गुरुजी ने शिष्य को समझाया–' तात ! उचित और अनुचित का विचार किए बिना जो औरों का अनुकरण करता है वह मूर्ख ऐसे ही संकट में पड़ता है जैसे वह दोनों युवक।' !

चरक अनुष्ठान

पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में बंगाली कैलेंडर वर्ष के अंतिम दिन मनाए जाने वाले चरक अनुष्ठान से पहले देवी काली की पोशाक पहने एक भक्त।

आज की पाती

व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व ही स्थिर व्यक्तित्व

आज व्यक्ति दो व्यक्तित्व का जीवन जी रहा है। एक उसका बाहरी व्यक्तित्व है जिसे उसके आसपास का वातावरण नियंत्रित करता है। यह व्यक्तित्व परिवर्तनशील है। बाहरी वातावरण के बदलने से यह भी बदल जाता है। उदाहरणतः व्यक्ति जब किसी धार्मिक या आध्यात्मिक वातावरण के संपर्क में आता है तो उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में सात्विकता को अनुभव किया जा सकता है और जब बाहरी वातावरण भौतिकवादी होता है तो व्यक्तित्व में भी भौतिकता दृष्टिगोचर होती है। दूसरा है आंतरिक व्यक्तित्व, जो बाहरी वातावरण के कारकों से अप्रभावित रहता है। व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व ही उसका एक स्थिर व्यक्तित्व हो सकता है। आज हर कोई काफी कुछ होने के बावजूद असंतुष्ट है।

– पवन यादव, बालोद

ट्रेंड

परिवर्तनकारी सुधार किए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ईपीएफओ ने अपने सदस्यों के लिए जीवन को और आसान बनाने के लिए पिछले एक साल में कई परिवर्तनकारी सुधार किए हैं। इन सुधारों के कारण दावों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

- मनसुख मांडविया, केंद्रीय मंत्री

इजराइली बंधकों का दर्द सुना

मैं फिर से इज़रायली बंधकों के रिश्तेदारों से मिला और उनका सुना। मैंने उनके क्रूर अपहरण और भयानक व्यवहार के लिए हमास की निंदा की। मैंने सभी बंधकों को तुरंत और बिना शर्त रिहा करने के अपने आह्वान को दोहराया।

-एंटोनियो गुतारेस, यूएन महासचिव

भाजपा की सत्ता की प्यास

भाजपा की सत्ता की प्यास के आगे कोई प्यास महत्त्व नहीं रखती है। हृदयहीन भाजपा को मन में दयाभाव रखने वाले लोग पसंद नहीं हैं, इसीलिए जिस कर्मचारी ने प्यासे जानवरों को पानी पिलाया, उसी को भाजपा सरकार ने निलंबित कर दिया।

-अखिलेश यादव, सपा प्रमुख

मुंबई कभी नहीं सोता

अभी भी हम मुंबई में एक ऐसा शहर पा सकते हैं जो कभी नहीं सोता और बड़े सपने देखता है, अजनबी जो आपकी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, देश का सबसे बढ़िया खाना, एक ऐसा समुद्र जो आपकी उथल-पुथल को शांत कर देगा।

-हर्ष गोयनका, उद्योगपति

करंट अफेयर

11वें योग दिवस की वर्ल्ड ट्रेड सेंटर से उलटी गिनती शुरू

न्यूयॉर्क शहर के प्रतिष्ठित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए 75 दिन की उलटी गिनती की औपचारिक शुरुआत हुई। न्यूयॉर्क स्थित भारत के वाणिज्य दूतावास ने "योग दिवस में 75 दिन शेष" नामक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम 21 जून को दुनिया भर में मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों का हिस्सा है। बारिश भरी सोमवार की सुबह, मैनहट्टन और न्यू जर्सी के विहंगम दृश्यों के बीच यह योग सत्र 1,776 फुट ऊंची वन वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की 102वीं मंजिल पर स्थित 'वन वर्ल्ड ऑब्जर्वेटरी' में संपन्न हुआ। भारत के वाणिज्य दूत बिनय प्रधान ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह लगभग एक घंटे का योग सत्र अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की 75 दिनों की उलटी गिनती के उत्सव का प्रतीक है। 'आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन' की प्रतिष्ठित योग प्रशिक्षक रुचिका लाल ने इस विशेष सत्र का नेतृत्व किया जिसमें उप वाणिज्य दूत विशाल हर्ष, भारतीय प्रवासी समुदाय के सदस्य, छात्र और योग प्रेमी शामिल हुए। भारत के वाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की 102वीं मंजिल से बिनय प्रधान ने आत्मिक योग सत्र के साथ उलटी गिनती की शुरुआत की।'

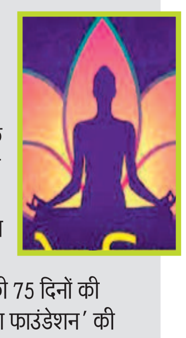

ऑफ बीट

विलुप्त प्रजाति 'डायर वुल्फ' से मिलते-जुलते भेड़िये मिले

विलुप्त हो चुके 'डायर वुल्फ' से मिलते–जुलते, आनुवंशिक रूप से रूपांतरित तीन भेड़िये अमेरिका में एक अज्ञात सुरक्षित स्थान पर रह रहे हैं।

यह जानकारी लुप्त प्रजातियों को वापस लाने के लिए काम कर रही कंपनी ने दी। 'कोलोसल बायोसाइंसेज' के शोधकर्ताओं ने बताया कि भेड़ियों के इन शावकों की उम्र तीन से छह महीने के बीच है, इनके लंबे एवं सफेद बाल हैं, मांसल जबड़े हैं और इनका वजन लगभग 80 पाउंड है जो उनके वयस्क होने पर 140 पाउंड तक पहुंच जाएगा। 'डायर वुल्फ' 10,000 वर्ष से अधिक समय पहले विलुप्त हो गए थे।स्वतंत्र वैज्ञानिकों ने कहा कि इस नवीनतम प्रयास का अर्थ यह नहीं है कि निकट भविष्य में 'डायर वुल्फ' उत्तर अमेरिका के घास के मैदानों में फिर से नजर आएंगे। बफेलो विश्वविद्यालय के जीवविज्ञानी विन्सेंट लिंच ने कहा कि 'अब आप बस इतना ही कर सकते हैं कि किसी जीव को सतही तौर पर किसी और जीव जैसा बना दें'', लेकिन विलुप्त प्रजातियों को पूरी तरह से पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता। लिंच इस शोध में शामिल नहीं थे। वैज्ञानिकों ने जीवाश्मों से प्राचीन डीएनए की जांच करके 'डायर वुल्फ' के विशिष्ट लक्षणों के बारे में पता लगाया।

हमारा पता

हरिभूमि कार्यालय

रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर

फोन: 401050,271016,फैक्स–271018

ई–मेल: haribhoomibsp@gmail.com

वेब–साइट: www.haribhoomi.com

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

तीन जिलों को नक्सलमुक्त करने चुकानी पड़ी बड़ी कीमत, मोहला अब भी बाकी

35 सालों में 124 लोग मारे गए, एसपी सहित 43 जवान भी शहीद

सचिन अग्रहरि ▶▶| राजनांदगांव

हरिभूमि खास

लाल आतंक का दंश झेल चुके राजनांदगांव जिले में नक्सलियों ने पिछले 35 सालों में न सिर्फ पुलिस और फोर्स को अपना निशाना बनाया, बल्कि 124 आम नागरिकों की भी हत्या कर दहशत फैलाने की कोशिश भी की। नक्सलियों का खात्मा करने के लिए एसपी व्हीके चौबे सहित 43 जवानों को अपनी शहादत भी देनी पड़ी। इन सालों में 37 नक्सलियों को मार गिराने के बाद जिले में फोर्स का ऐसा दबाव बढ़ा कि पिछले तीन साल से नक्सल संगठन बैकफुट पर चले गए और बस्तर में चल रही आर-पार की लड़ाई के बीच राजनांदगांव, खैरागढ़ और कवर्धा जिला अब नक्सल मुक्त हो गया है।

अब इस इलाके के मोहला मानपुर जिले में ही नक्सलियों की आमद है। इसकी बड़ी वजह महाराष्ट्र के गढ़चिरौली और बस्तर से जुड़ी इसकी सीमाएं हैं। अविभाजित राजनांदगांव जिले में नक्सलियों ने सन 1990 में अपने संगठन को ▶▶|शेष पेज 6 पर

दहशत पैदा करने 122 आगजनी

अक्सर देखा गया है कि नक्सली अपनी दहशत ग्रामीण एवं शासन-प्रशासन के सामने बनाने के लिए कई हथकंडे अपनाते रहे हैं। इनमें आगजनी भी शामिल रही है। पिछले साढ़े तीन दशक के भीतर अविभाजित जिले में नक्सलियों द्वारा 122 आगजनी की घटनाएं घटित हुई है। साल 2018 में सर्वाधिक 11 आगजनी की घटनाएं देखने को मिली थी। वहीं सबसे पहली आगजनी 1990 में नक्सलियों द्वारा की गई थी।

561 घटनाओं को दिया अंजाम

करीब डेढ़ दशक पहले बस्तर के बाद नक्सलियों का अहम कारीडोर राजनांदगांव जिला माना जाता था। उस दौरान नक्सली जिले के बार्डर पर लगातार एक्टिव रहा करते थे। यूं तो 1990 से अब तक के मध्य कुल 561 घटनाएं नक्सलियों द्वार की गई, लेकिन सर्वाधिक घटनाएं 2006 से 2012 के मध्य देखने को मिली। अंतिम नक्सल घटना जिले में साल 2023 में दर्ज की गई है।

राजनांदगांव इलाके में महाराष्ट्र सीमा से लगे मोहला मानपुर में जारी है नक्सलियों की धमक

बार्डर इलाके के कारण वनांचल नहीं हुआ नक्सल मुक्त

अविभाजित राजनांदगांव जिले में शामिल रहे नवगठित मोहला- मानपुर- चौकी जिले में अभी भी नक्सलियो का मूव्हमेंट जारी है। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली और बस्तर के बार्डर पर स्थित इस जिले को केंद्र सरकार ने अति संवेदनशील से हटा कर एलडब्लूई की श्रेणी में कर दिया है। जानकार सूत्रों का कहना है कि गढ़चिरौली और बस्तर में नक्सलियो के खात्मे के बाद ही एमएमसी जिला नक्सल मुक्त हो पाएगा।

154 बार आमने सामने की लड़ाई

1990 में नक्सलियों की दस्तक के बाद उनसे बराबर का सामना करना सुरक्षा बलों ने भी शुरू कर दिया था। कुल 154 मुठभेड़ अब तक दर्ज की गई है। हालांकि शुरूआती दौर में तीन साल तक कोई मुठभेड़ देखने को नहीं मिली, लेकिन वर्ष 1993 में पहली दफा पुलिस और नक्सल आमने-सामने लड़ाई करते दिखे। उसके बाद से हर दूसरे साल पुलिस नक्सल के बीच मुठभेड़ की खबरें आती रही। वहीं 2015 और 2016 के बीच सर्वाधिक 28 मुठभेड़ दर्ज की गई।

inh 24x7
छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश का सर्वाधिक लोकप्रिय चैनल देखें
TATA PLAY चैनल नं. 1155 | airtel चैनल नं. 366

खबर संक्षेप

कार-टैंकर की टक्कर परिवार के चार की मौत

वर्धा। महाराष्ट्र के वर्धा जिले में एक कार के टैंकर से टकरा जाने की घटना में दंपति और उनके दो बच्चों की मौत हो गई। जिले के तरोदा गांव में यह घटना हुई। कार के सामने एक जंगली सूअर के अचानक आ जाने से चालक ने वाहन पर नियंत्रण खो दिया।

अध्यापक ने फेंकी छड़ी, बच्चे ने खोई आंख की रोशनी

चिक्कबल्लापुर। चिक्कबल्लापुर जिले में एक अध्यापक द्वारा फेंकी गई छड़ी लगने से एक छह वर्षीय बच्चे की दाई आंख की रोशनी चली गई। इस घटना के संबंध में शिक्षक और पांच अन्य लोगों पर मामला दर्ज किया गया है।

'फर्जी' हृदय रोग विशेषज्ञ को पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेजा गया

'डॉक्टर' की डिग्री में पूर्व उपराष्ट्रपति के फर्जी हस्ताक्षर, बिलासपुर अपोलो को नोटिस

मध्यप्रदेश के दमोह के मिशन अस्पताल में 7 हार्ट पेशेंट की मौत के आरोपी डॉक्टर नरेंद्र विक्रमादित्य यादव के मामले में हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। जबलपुर मेडिकल कॉलेज टीम ने जब आरोपी डॉक्टर की डिग्री की जांच की तो उसमे पांडिचेरी विश्वविद्यालय के चांसलर के रूप में पूर्व उपराष्ट्रपति के फर्जी हस्ताक्षर थे। इधर, बिलासपुर सीएमएचओ डॉ. प्रमोद तिवारी ने अपोलो अस्पताल प्रबंधन को नोटिस जारी किया है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बिलासपुर/भोपाल

मध्यप्रदेश के दमोह की एक अदालत ने सात मरीजों की मौत से जुड़े कथित 'फर्जी' हृदय रोग विशेषज्ञ नरेंद्र जॉन कैम को मंगलवार को पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। एक दिन पहले ही कैम को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से गिरफ्तार किया गया था। इधर, डॉक्टर नरेंद्र विक्रमादित्य यादव बिलासपुर में भी कई लोगों की जान ले चुका है। इनमें सबसे बड़ा नाम छत्तीसगढ़ विधानसभा के पहले अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद शुक्ल का भी है। राजेंद्र प्रसाद अविभाजित मध्यप्रदेश में भी विधानसभा अध्यक्ष रह चुके हैं।

डॉ नरेंद्र तब बिलासपुर के अपोलो अस्पताल में पदस्थ था। दिवंगत शुक्ल के बेटे का बयान सामने आने के बाद सीएमएचओ डा. प्रमोद तिवारी ने एक्शन लिया। इधर, कांग्रेस ने फर्जी डॉक्टर नरेंद्र विक्रमादित्य यादव उर्फ नरेंद्र जान केम, डॉ प्रताप रेड्डी ,चैयरमेन अपोलो हॉस्पिटल, प्रीथा रेड्डी, एजीकेटिव्ह चैयरमेन अपोलो हॉस्पिटल, डॉ मनीष मट्टू, रीजनल हेड अपोलो हॉस्पिटल, अर्णव राहा, यूनिट हेड ▶▶|शेष पेज 6 पर

चार की एंजियोप्लास्टी की इनमें तीन की मौत

दमोह के सीएमएचओ मुकेश जैन ने बताया कि आरोपी डॉक्टर ने चार की एंजियोप्लास्टी की थी, इनमें से तीन की मौत हुई है। 20 फरवरी को हमको जांच के लिए कलेक्टर ने कहा था। इसके बाद हमने 22 फरवरी से जांच शुरू की। इसमें आरोपी डॉक्टर एन जॉन केम के द्वारा किए गए ऑपरेशन और रिकार्ड खंगाले गए। 30 से 35 दिन डॉक्टर अस्पताल में रहा है। इस दौरान कार्डियोलाजी में सात लोगों की मौत हुई थी।

जांच में हुआ बड़ा खुलासा

जबलपुर की टीम ने जब डॉक्टर की डिग्री की जांच की तो उसमे पांडिचेरी विश्वविद्यालय के चांसलर के रूप में पूर्व उपराष्ट्रपति के हस्ताक्षर थे। इस बात का सत्यापन करने के लिए जब टीम ने पूर्व राष्ट्रपति के हस्ताक्षर चेक किए, तो डिग्री में मौजूद हस्ताक्षर और ओरिजिनल हस्ताक्षर में अंतर मिला, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि आरोपी डॉक्टर की कार्डियोलॉजिस्ट की डिग्री भी फर्जी है। डिग्री में संदेह का एक प्रमुख कारण यह भी था कि उसकी डिग्री में न तो एनरोलमेंट नंबर था और न ही रोल नंबर। जब इस बात की पुष्टि हो गई कि डॉक्टर के दस्तावेज फर्जी हैं, तब जाकर टीम ने कोतवाली में आरोपी डॉक्टर के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

अपोलो प्रबंधन से मांगा जवाब

बिलासपुर के सीएमएचओ डा. प्रमोद तिवारी अपोलो से जवाब मांगा गया है कि, किस आधार पर डॉक्टर की नियुक्ति की गई थी। उसकी शैक्षणिक योग्यता से संबंधित दस्तावेज पेश करने को कहा है। साथ ही पूर्व विधानसभा अध्यक्ष समेत कई लोगों की मौत के मामले में डॉक्टर के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई थी, यह भी जानकारी मांगी गई है।

ट्रंप ने चीन पर फोड़ा बड़ा 'टैरिफ बम', लगाया 104% टैक्स

वाशिंगटन। अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ को लेकर चली आ रही जंग के बीच अमेरिका ने गुरुवार को ड्रैगन पर बड़ा 'टैरिफ बम' फोड़ दिया है। अमेरिका ने कहा है कि वह अब चीनी उत्पादों पर 104 फीसदी टैरिफ लगाने जा रहा है। वाइट हाउस के अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है। अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि यह फैसला 9 अप्रैल को आधी रात से लागू होगा। इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन को चेतावनी दी थी कि अगर चीन ने अमेरिका पर लगाए गए जवाबी शुल्क को वापस लेने का फैसला नहीं लिया अमेरिका चीनी उत्पादों पर 50 ▶▶|शेष पेज 6 पर

■ डेडलाइन हुई खत्म

चीन के साथ किसी भी सौदे की उम्मीद नहीं

इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी टैरिफ को लागू करने की तारीख से पहले कई प्रमुख सहयोगियों के साथ बातचीत की है। ट्रंप ने यो ज ना ब द्ध व्यापार वार्ता की घोषणा भी की है। ऐसी उम्मीद जताई जा रही है कि ट्रंप ने जिन देशों पर रेसिप्रोकल टैक्स लगाया है उनमें से करीब दर्जन भर देशों पर लगाए गए टैरिफ दर को अमेरिका या तो कम कर देगा या इसे खत्म किया जा सकता है। हालांकि चीन के साथ कोई भी सौदा करने की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही है।

चीन पर क्या बोले अमेरिकी राष्ट्रपति

अमेरिकी राष्ट्रपति ने बताया कि उन्होंने मंगलवार को दक्षिण कोरिया के कार्यवाहक राष्ट्रपति हान डक-सू के साथ फोन पर बातचीत की है। उन्होंने कहा कि इस बातचीत के बाद दक्षिण कोरिया के साथ व्यापार समझौते की संभावनाएं अच्छी लग रही हैं। ट्रंप ने कहा कि वे व्यापार और टैरिफ के मुद्दों पर अलग-अलग देशों के साथ बातचीत करेंगे। वहीं ट्रंप ने कहा कि वह इस मुद्दे पर बातचीत के लिए चीनी अधिकारियों के फोन का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने चीन पर स्थिति को ठीक से न संभालने का आरोप लगाया।

राजनीतिक हलचल तेज, संसदीय सचिव बनाने की भी चर्चा

10 को शपथ नहीं, साय ने कहा- कभी भी हो सकता है मंत्रिमंडल का विस्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

छत्तीसगढ़ में साय सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा, कभी भी मंत्रिमंडल का विस्तार हो सकता है। उनके इस बयान के बाद राजनीतिक हलचल और तेज हो गई है। उम्मीद जताई जा रही है कि मंत्रिमंडल विस्तार की सूची जल्द आ सकती है। चर्चा है कि 10 अप्रैल को राजभवन में शपथ ग्रहण हो सकता है, लेकिन 10 को शपथ होने के संकेत नहीं हैं। इस बीच दीनदयाल उपाध्याय आडिटोरियम में संवाददाताओं से चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री ने इसके संकेत दिए हैं।

मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर अटकलों के बीच सूत्रों से जानकारी मिली है कि आने वाले दिनों में तिथि की घोषणा होगी। साय मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री समेत 11 मंत्री हैं। ▶▶|शेष पेज 6 पर

इनके नामों की चर्चा

मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने को लेकर जिन नामों की चर्चा हो रही है, उनमें अमर अग्रवाल, गजेंद्र यादव, राजेश मूणत, पुरंदर मिश्रा के नाम शामिल हैं। वहीं संसदीय सचिव बनाने करीब डेढ़ दर्जन विधायकों के नाम सामने आ रहे हैं।

माओवादी संगठन से मोहभंग, 22 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

बीजापुर। शासन की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति के व्यापक प्रचार प्रसार से माओवादी संगठन से मोहभंग हो रहा है। पीएलजीए बटालियन नम्बर 1 सदस्य-1, टीएससी (तेलंगाना स्टेट कमेटी) अंतर्गत सीआरसी कंपनी नम्बर 2 सदस्य-1, एसीएम रैंक के 2 सदस्य, 26 लाख के ईनामी 4 माओवादियों सहित 22 माओवादियों ने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। जनवरी 2025 से अब तक माओवादी घटना में शामिल 172 माओवादी गिरफ्तार हुए, 179 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया एवं जिले में अलग-अलग मुठभेड़ में 83 माओवादी मारे गए हैं।

4 नक्सलियों पर था 26 लाख का इनाम

विरोध के बीच देश में लागू हुआ वक्फ कानून

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

वक्फ संशोधन अधिनियम पूरे देश में 8 अप्रैल से लागू हो गया। केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से इसकी अधिसूचना जारी कर दी गई है। सुप्रीम कोर्ट में इस कानून के खिलाफ अभी तक कुल 15 याचिकाएं दायर की जा चुकी हैं। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दायर की और याचिकाओं पर कोई आदेश पारित किए जाने से पहले सुनवाई किए जाने का अनुरोध किया।

सुप्रीम कोर्ट में 15 याचिकाएं दायर

बंगाल में हिंसक प्रदर्शन

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में नये वक्फ कानून के खिलाफ हो रहा प्रदर्शन हिंसा में बदल गया। शुरू में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों से एक जगह पर प्रदर्शन करने के लिए कहा, लेकिन अचानक प्रदर्शनकारी जो जगह बताई गई थी, उसके आगे जाने लगे। इसी दौरान उनकी पुलिस के साथ हाथापाई शुरू हो गई। प्रदर्शनकारियों ने सड़क जाम कर पुलिस की गाड़ियों में आग लगा दी।

सूखत की चिंता में सूख रहे सोसाइटी प्रबंधक, वसूली के डर से हाईकोर्ट की दौड़

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

खास खबर

छत्तीसगढ़ में धान खरीदी करने वाली सोसाइटियों के उपार्जन केंद्र में पड़ा लाखों मीट्रिक टन धान इस समय पड़ रही भीषण गर्मी के साथ ही सूख रहा है और उसका वजन कम हो रहा है। धान जिस रफ्तार से सूख रहा है, उसी तेजी से सोसाइटियों के प्रबंधक भी सूख रहे हैं। दरअसल खरीदा गया धान के सूखने से जितना वजन कम ▶▶|शेष पेज 6 पर

■ आरंग, अभनपुर की सोसाइटियों का मिलान पूरा

एक मामले से सामने आती है तस्वीर

अभनपुर क्षेत्र की एक सोसाइटी ने 53 हजार क्विंटल से अधिक की धान खरीदी की थी, लेकिन जब धान का हिसाब मिलाया गया, तो उसमें 304 क्विंटल वजन में कमी आ गई। इस 304 क्विंटल धान की कीमत 2300 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से 7 लाख रुपए होती है। सोसाइटी से कहा गया है कि या तो वह 304 क्विंटल धान जमा ▶▶|शेष पेज 6 पर

पौने चार लाख मीट्रिक टन धान अभी भी है जाम

छत्तीसगढ़ में खरीफ वर्ष 2024-25 में कुल मिलाकर 149 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा गया है। राज्य में धान खरीदी नवंबर 2024 से शुरू होकर जनवरी 2025 तक चली है। धान खरीदी के संबंध में व्यवस्था ये है कि सोसायटियों के उपार्जन केंद्र में खरीदी होने के 72 घंटो के बाद धान का उठाव परिवहन कराया जाना है। लेकिन हालत ये है कि नवंबर से शुरु हुई खरीदी के बाद अप्रैल का एक सप्ताह पूरा होने के बाद भी अब तक उपार्जन केंद्रों से पूरे धान का उठाव नहीं किया सका है। यही नहीं अभी भी सोसायटियों में करीब पौने चार लाख मीट्रिक टन धान पड़ा है, जो इस भीषण गर्मी में तेजी से सूख रहा है।

ऐतिहासिक
डा पी एल शर्मा

अलग साम्राज्य रहा सकल कोसल का

सोमवंशीय शासकों ने कोसल क्षेत्र में दो सौ वर्षों तक शासन किया था। पाण्डुवंशीय शासकों ने कलिंग की ओर ध्यान भी दिया था और महाशिव तीवरराज ने गौरवपूर्ण त्रिकालिंगादिधिपति उपाधि धारण की थी। इसके साथ ही सकल कोसलाधिपति की उपाधि को उन्होंने और उनके पुत्र नंदराज ने बड़े ही जतन से संजोए रखा। सकल कोसल का बड़ा महत्वपूर्ण अर्थ है। यह वह क्षेत्र होता है जो वर्तमान छत्तीसगढ़ कोसल राज का वह भाग जो ओड़िशा में चला गया है। जैसे कालाहांडी, संबलपुर, सुंदरगढ़, फुलबानी और बलागीर आदि जिले पूर्व में यह सकल कोसल कहलाता था। इस पर शरभपुरीय-पांडु वंशीय और बाद में सोमवंशीय शासक हमेशा काबिज रहे। सोमवंशीय शासकों ने जो पांडुवंशियों के कनिष्ठ शासक थे, उसने कलिंग की ओर ध्यान मोड़ा। इस योजना के तहत उन्होंने पूर्ण विकसित सुविधाओं से सुसज्जित और लगभग सकल कोसल के मध्य स्थित श्रीपुर को छोड़ पूर्वी कोसल में उपयुक्त स्थान के तलाश में श्रीपुर के बराबरी का स्थान ढूंढते रहे, जहां से ओड, कलिंग, कोगोंद तोशाली यह क्षेत्र निकट पड़े। क्योंकि वे उनके चिन्हित क्षेत्र थे, जो उन्हें त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि सार्थक रूप से धारण करने दें। इस राजधानी नगर की खोज में उन्होंने सुरसीम, आराम, स्वर्णपुर, विनीतपुर और ययाति नगर इत्यादि को अपनाने की योजना की। यह सभी स्थान इन शासकों ने सुरुचिपूर्ण ढंग से विकसित करने का प्रयास भी किया।

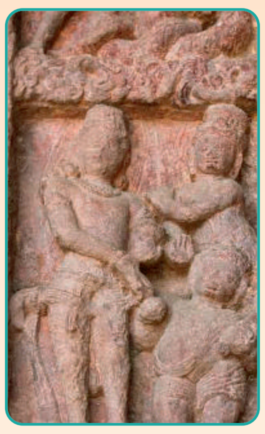

लोक साहित्य
डा अनसूया अग्रवाल

छत्तीसगढ़ी बाल साहित्य चुनौतियां एवं संभावनाएं

छत्तीसगढ़ी बाल साहित्य का हम समग्र रूप से अवलोकन - विश्लेषण करें तो समर्थ रचनाकार दो भिन्न भाव भूमियों पर अपने सृजन कर्म को उद्घाटित करते हुए साहित्य सरोवर को समृद्ध कर रहे हैं। एक तो कल्पना पर आधारित बाल साहित्य का प्रणयन, जो बाल मन की अभिरुचियों के अधिक निकट है जहां कल्पना ही प्रकृति के उलझे स्वरूपों को सामने लाकर सुलझाती भी है। बाल मन को इसी से सुख भी मिलता है। दूसरे वे जो यथार्थ पर आधारित बाल साहित्य सृजन कर्म में रत हैं उनके अनुसार बाल हृदय को आसपास के वातावरण और परिवेश को समझने में मदद मिलती है। उनकी दृष्टि में कल्पना प्रधान, वायवीय भाव भूमि से सृजन की अपेक्षा यथार्थ परक नीति परक, उपदेश परक सृजन की सार्थकता और उपादेयता अधिक है। वर्तमान संदर्भ में विचार करें तो दोनों ही सृजन अपनी अपनी जगह प्रासंगिक और उपयोगी है। छत्तीसगढ़ी बाल रचनाओं में इस क्षेत्र की नैसर्गिक और प्राकृतिक सुषमा भी अपने संपूर्ण वैभव के साथ उपस्थित है। यहां के लोगों के अपराजेय संघर्ष के रेखांकन का यथार्थ प्रयास भी बाल मन के अनुरूप है। वनांचल क्षेत्र में रहवासी के बच्चे पशु पक्षी के साथ काफी निकटता महसूस करते हैं अतः रचनाओं में इनके प्रति बाल मन की संपृक्ति संपृक्तता भी स्पष्ट दिखाई देती है।

गांव की कहानी
बालचंद्र जैन

कई रहस्यों से भरा ग्राम सुंदरिका

ग्राम सुंदरिका के बारे में माना जाता है महाभारत काल में पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय निश्चित रूप से फुलझर -बोड़ासामर के संयुक्त क्षेत्रों में बिताया होगा और राक्षसों का संहार किए होंगे। पाण्डवों के छोटे भाई सहदेव ने भी राजसूय यज्ञ के संदर्भ में इन क्षेत्रों की विजय यात्रा की थी, और यहां के वन राज्यों को पराजित किया था। शिशुपाल पर्वत पर रानी सागर के समीप भीम के पैर का निशान देखने को मिलता है। कथानकों से प्रतीत होता है कि द्वापर युग के महाभारत काल में इन क्षेत्रों पर राक्षसों, दैत्यों का अधिकार था, जो उक्त कालीन ऋषि मुनियों को यज्ञादि करने से रोकते थे तथा उन्हें प्रताड़ित करते थे। उक्त काल अवधि में संभवतः त्रिसुंद नामक दैत्य का इन क्षेत्रों में आतंक था। त्रिसुंद के सुन्द और उप सुन्द दो पुत्र थे। सुन्द दैत्यों का प्रभाव इन क्षेत्रों पर था। जन सामान्य एवं ऋषि मुनियों के लिए यह क्षेत्र अत्यंत भयावह था, परिणामतः यह दानव सुन्द से प्रभावित क्षेत्र था। उक्त सुन्द दानवों के कारण ही यह क्षेत्र सुन्दरिका के नाम से जाना जाता था। आगे चल कर पाश्चात्य कालीन शासकों ने भी इन क्षेत्रों को सुंदरिका के नाम से जारी रखा। महाभारतकालीन चंद्रवंशीय राजाओं के अंतिम चरण के पश्चात इन क्षेत्र में राजनैतिक परिस्थिति मृत प्राय रही होगी। ईसा के 6 वीं सदी के उतरार्द्ध में राजनैतिक गतिविधियां पुनः सक्रिय हुई।

बिरहोर जनजाति को लेकर कई कथा सुनने को मिलते हैं जिसमें एक मिथक के अनुसार एक माता की दो बहनें थीं। एक बहन से बिरहोर उत्पन्न हुए तथा दूसरी बहन से उत्पन्न संतान महकूल कहलाए। एक बार बिरहोर और महकूल दोनों भाई जंगल में भैंस चराने गए। जंगल में जंगली लता से अपनी भैंसों को बांध कर वे जंगली लता काटने जंगल के अंदर चले गए।

बिरहोर जनजाति की उत्पत्ति पर प्रचलित मिथक

जनजाति विशेष : डा महेश श्रीवास्तव

जंगली लता काट कर लौटने पर उन्होंने देखा कि बिरहोर की भैंस रस्सी तोड़ कर अन्यत्र चली गई है, जबकि महकूल की भैंस वहीं बंधी मिली। तब बिरहोर ने अपने महकूल भाई से कहा कि तुम अपनी भैंस लेकर घर जाओ, मैं अपनी भैंस ढूंढने जा रहा हूं। ऐसा कहते हुए बिरहोर जंगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे जंगली लता दिखी, जिसे वह काटने में जुट गया तथा भैंस ढूंढने वाली बात वह भूल गया। कालान्तर में जंगली लता काटते काटते वह वीर नामक पहाड़ में रहने लगा। वीर पहाड़ में रहने एवं जंगली लता से लगातार रस्सी निर्माण करने के कारण लोग इन्हें बिरहोर कहने लगे। एक अन्य मिथक के अनुसार एक बार महादेव भगवान कुल्हाड़ी व बसुला पकड़ कर शिकार करने जंगल गए। शिकार करते करते वे चालीस जंगल पार कर गए और भूख प्यास से बेहाल उन्होंने फल खाकर भूख और नाले का पानी पीकर प्यास बुझाई। थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात उसका मन नाचने गाने को हुआ, तब एक पेड़ काट कर ढोलक बनाया तथा उस पर चमड़ा चढ़ाने के लिए शिकार की खोज करने लगे, तभी उनकी नजर पेड़ पर बैठे एक बंदर पर पड़ी, जिसका शिकार कर उसके चमड़े को ढोलक पर लगाकर बजाने और नाचने लगा। बाद में पास के बिरहोर लोगों को बुला कर मरे बंदर का मांस खाने को कहा, उस दिन से बिरहोर बंदर पकड़वा कहलाने लगे।

धार्मिक : रोशन कुमार

रामायणकालीन धरोहर का साक्षी सारासोर

सूरजपुर जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर दूर सारासोर नामक स्थान है। राम के वनवास काल से जुड़ी किंवदंतियों में सारासोर और सीताकुंड की कहानी मिलती है। वनगमन के दौरान महरमंडा आश्रम के बाद श्रीराम सारासोर पहुंचे। वहां राक्षसों के आतंक की बात सुनकर श्रीराम ने अंचल को आतंक मुक्त करने की प्रतिज्ञा ली और राक्षसों को चुनौती देते हुए धनुष का टंकार किया। धनुष के टंकार से खरात, बड़का पहाड़, पिलखा और वेदमी पहाड़ी के रूप में दो हिस्सों में बंट गया। इस प्राकृतिक परिवर्तन का आज भी प्रत्यक्ष दर्शन लाभ लिया जा सकता है। पहाड़ियों के बंटने से वहां जो गड्ढा हुआ उसे आज भी सीता कुंड के नाम से जानते हैं। यह सीता कुंड सीता नहानी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां श्रीराम की स्मृति में राम जानकी मंदिर का निर्माण कालांतर में किया गया है। इसी तरह बड़का पहाड़ी के पास एक गुफा है, जिसे जोगी गुफा के नाम से जाना जाता है। यहां से श्रीराम, रेणु नदी से होते हुए रामगढ़ के समीप उदयपुर क्षेत्र में प्रवेश किया।

सुरता
रोशन कुमार

अपने उद्देश्य को पूरा करने में लगे रहते थे विष्णु शरण वैष्णव

छत्तीसगढ़ के सरायपाली क्षेत्र में विष्णुशरण दास का जन्म 19 सितंबर 1919 को ग्राम पझरापाली के एक वैष्णव परिवार में हुआ था। वे एक महान साहित्यकार एवं विचारक थे। वे हिंदी, छत्तीसगढ़ी, और उड़िया भाषा के अच्छे जानकार थे। आपकी लेखनी से पूरे छत्तीसगढ़ में अलग पहचान बनी। आपकी वाणी में विशेष आकर्षण रहता था। वे हमेशा प्रसन्नचित मुद्रा में रहते थे। गहन और गम्भीर विषयों को सरल और रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता उनमें थी। आपने संत विनोबा भावे के भूमिदान आंदोलन में सक्रिय सहयोग किया था, जिसमें उन्हें आशातीत सफलता भी मिली थी। इसी तरह वे लोगों की समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान भी करते थे आपके सरल स्वभाव के कारण आपकी कुटिया में लोगों की भीड़ लगी रहती थी। आपकी साहित्यिक अभिरुचि बहुत ज्यादा थी। अपने निवास में कवि गोष्ठी का आयोजन भी करते थे। उनकी कविताओं में गूढ़ अर्थों की सरल अभिव्यक्ति रहती थी। आपकी यह उपलब्धि रही कि

तत्कालीन रायपुर जिले का भूगोल भी लिखा था, जो पाठ्य पुस्तक के रूप में उन दिनों चलता था। आपकी साहित्यिक रचनाओं में पंचवंशिका, प्राणाधिके, यमुना तीरे, यूगे युगे, ज्ञान गंगा आदि रही। इसी तरह कई लेखनी का उनका प्रकाशन नहीं हो पाया। अपने जीवन के अंतिम समय समाज सेवा के साथ लेखनी को बरकरार रखे। कई नव लेखकों को प्रोत्साहन भी करते रहे, जिनका आज साहित्य के क्षेत्र में अच्छा नाम है। आज भी इस अंचल में इस लेखक का नाम लोग श्रद्धा से लेते हैं। आपका निधन सात नवंबर 1988 को हुआ।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

लोक गायन
अजय कुमार चतुर्वेदी

सरगुजा अंचल के लोकगीतों की विशिष्टता

सरगुजा अंचल के लोकगीतों में सामाजिक संदर्भ को देखें तो निश्चित रूप से यहां के लोकगीतों से समाज को एक नई दिशा मिलती है। सरगुजिहा लोकगीतों में काफी मिठास होती है। लोकगीतों में समाज सुधार, सामाजिक बुराइयों को दूर करने , नशा विरोधी गीत, विभिन्न संस्कारों के गीत और बारह मासी गीत सुनने को मिलते हैं। इसके अलावा लोकगीतों में खेती करने की प्रेरणा, विकास और प्रेम प्रसंग के गीत, वर्षा गीत जैसे अनेक स्थानीय संदर्भ समाहित होते हैं।

यहां विभिन्न अवसरों, मौसमों और त्योहारों में अलग अलग लोकगीतों का गायन किया जाता है, जो शैला, करमा, डमकच , सुआ, उधुवा(प्रेम प्रसंग) सोदो,, संस्कार गीत, देवारी गीत, जवारा गीत, ददरिया, फाग गीत, बान बहुली और लोकड़ी गीत होते हैं। लोकगीत जो सत्य की ओर इंगित करता है देखें -

माघ पूर्णिमा मेहेन, सत नदी आए।
सत सत बोले बर, सत नदी आए।
सत नदी आए हो...सत नदी आए।

सरगुजिहा लोक गीतों में इस तरह जन चेतना की भी गीत हमें देखने मिल जाते हैं। यह देखें नशा विरोधी पर गाए जाने वाले चर्चित गीत -

गांजा पीले माजे लागे, माखुर खाके थूंके।
भट्टी ले दारू पीके, कुकुर निगर भूंके।
कुकुर निगर भूंके हो, कुकुर निगर भूंके।

खबर संक्षेप

पॉवर कंपनी के 213 अधिकारियों-कर्मचारियों को मिली पदोन्नति

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज में 213 अधिकारियों-कर्मचारियों को पदोन्नति दी गई है। इसमें प्रथम एवं द्वितीय वर्ग के 13 अधिकारी तथा तृतीय व चतुर्थ वर्ग के 200 अधिकारी-कर्मचारी शामिल हैं। ट्रांसमिशन कंपनी के मानव संसाधन विभाग से ट्रांसमिशन-डिस्ट्रीब्यूशन व सिविल संकाय के 11 अधिकारियों के पदोन्नति आदेश जारी किए गए हैं। इसमें कार्यपालक निदेशक के तीन व मुख्य अभियंता के पांच तथा अधीक्षण अभियंता के तीन अधिकारियों को पदोन्नति प्राप्त हुई है। जनरेशन कंपनी से दो मुख्य अभियंताओं को कार्यपालक निदेशक के पद पर पदोन्नत किया गया है। ट्रांसमिशन कंपनी लाइन अटेंडेंट ग्रेड एक के पद पर 22, टेस्टिंग अटेडेंट ग्रेड-एक पर 48 तथा ऑफिस अटेंडेस एवंदफ्तरी के एक-एक पद पर पदोन्नति प्रदान की गई है। वहीं डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी मुख्यालय में सेक्शन ऑफिसर के पद पर 28 कर्मियों को पदोन्नत किया गया है। इसी तरह डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी में लाइन अटेंडेंट एक के पद पर राजनांदगांव रीजन में 13 व दुर्ग रीजन में 19 कर्मियों की पदोन्नति की गई है। लाइन असिस्टेंट ग्रेड दो के पद पर राजनांदगांव में 48 कर्मियों को पदोन्नति प्रदान की गई है।

पर्यावरण बचाने पहल प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेगी एबीवीपी

रायपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद 24 मई से 2 जून तक कृषि विवि में आयोजित होने जा रही है, जिसमें देशभर से 653 प्रतिनिधि भाग लेंगे। बैठक की तैयारियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए रायपुर में अस्थाई कार्यालय की स्थापना की गई, जिसका उद्घाटन मंगलवार को सिविल लाइन स्थित आंबेडकर मंगल भवन में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशुतोष मंडावी, मध्यक्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री चेतस सुखड़िया विशेष रूप से उपस्थित रहे। रायपुर महानगर की बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें बैठक से जुड़ी व्यवस्थाओं की रूपरेखा तय हुई। राष्ट्रीय संगठन आशीष चौहान ने कहा कि इस कार्यकारिणी बैठक को पर्यावरण अनुकूल और नवाचारों से परिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने जीरो प्लास्टिक उपयोग पर विशेष बल देते हुए यह सुनिश्चित करने की बात कही कि पूरे कार्यक्रम में प्लास्टिक का उपयोग न हो। इस बैठक में नवीन प्रयोग और विचारों को प्राथमिकता दी जाए, जिससे संगठन के कार्य में नई ऊर्जा का संचार हो। इस दौरान उपस्थित छात्रों से छत्तीसगढ़ की वर्तमान शैक्षणिक स्थिति पर भी चर्चा की और प्रदेश में विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली चुनौतियों एवं संभावनाओं पर विचार साझा किया। बैठक में प्रदेश मंत्री यज्ञदत्त वर्मा, व्यवस्था प्रमुख डॉ. अनुज शुक्ला, व्यवस्था सह प्रमुख प्रथम फुटाने सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पैरेंटिंग कैलेंडर के जरिए संवाद करेंगे शिक्षक और पालक

रायपुर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षकों और अभिभावकों के बीच संवाद को बढ़ाने के लिए एक अनूठी पहल की है। सीबीएसई ने यू-ट्यूब के माध्यम से एक पैरेंटिंग कैलेंडर जारी किया है। यह शैक्षणिक सत्र 2025-26 से लागू होगा। इसके जरिये अभिभावकों व शिक्षकों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करने और बच्चों के समग्र विकास में सहायता मिलेगी। इस कैलेंडर को तैयार करने के लिए बोर्ड ने बीती जनवरी में एक दस सदस्यीय कमेटी का गठन किया था। कमेटी की सिफारिशों के आधार पर ही इसे लॉन्च किया गया है। पैरेंटिंग कैलेंडर को शुक्रवार को सीबीएसई अध्यक्ष राहुल सिंह ने यू-ट्यूब पर लॉन्च किया। बोर्ड का कहना है कि यह कैलेंडर अभिभावकों और शिक्षकों के बीच तालमेल और बातचीत बढ़ाने का माध्यम बनेगा। बोर्ड का मानना है कि जब अभिभावक और शिक्षक मिलकर बच्चों पर ध्यान देते हैं तो उनका समग्र विकास बेहतर होता है। बोर्ड की ओर से यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मद्देनजर की गई है।

साय बोले- बगिया जैसे छोटे स्थान का कार्यकर्ता भी मुख्यमंत्री बन सकता है, यह भाजपा में ही संभव

हरिभूमि न्यूजः रायपुर

एकात्म परिसर के भाजपा कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा, भाजपा की सबसे बड़ी ताकत हमारे कार्यकर्ता ही हैं। इसके दम पर ही हर चुनाव जीता जाता है। पार्टी भी देवतुल्य कार्यकर्ताओं का हमेशा सम्मान करती है। एक बगिया जैसे जगह का कार्यकर्ता मुख्यमंत्री बन सकता है, यह सिर्फ भाजपा में ही संभव है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश के मंत्री केदार कश्यप ने की। कार्यक्रम में रायपुर के सांसद बृजमोहन अग्रवाल, सभी विधायक और महापौर मीनल चौबे के साथ भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय भी शामिल हुए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा, हमारे वरिष्ठ नेता ही पार्टी की नींव का पत्थर हैं। इनकी वजह से भाजपा की इमारत खड़ी है। उन्होंने कहा, अटल जी ने कहा अंधेरा छटेगा कमल खिलेगा आज वो पूरा हुआ। भाजपा आज एक लोकप्रिय पार्टी हो चुकी है। केंद्र में बहुमत के साथ एनडीए की सरकार चल रही है। कार्यकर्ताओं की मेहनत की बदौलत यह पार्टी बहुत बड़ी हो चुकी है। लगातार तीन बार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में हमारी सरकार चल रही है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सपना पूरा हुआ है। धारा 370 कश्मीर से हटाने का काम केंद्र की हमारी सरकार ने किया। मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ट्रिपल तलाक बिल पास हुआ। श्री साय ने कहा, छत्तीसगढ़ में चौथी

बार भाजपा की सरकार बनी है। सभी चुनाव में छत्तीसगढ़ की जनता ने आशीर्वाद दिया है। कार्यकर्ताओं की मेहनत का ही यह परिणाम है जो सफलता मिली है। श्री साय ने कहा, बुजुर्ग सोचते हैं कि एक बार गंगा स्नान कर तीर्थ यात्रा कर ले। बूढ़े मां-बाप को तीर्थ यात्रा करवाने का समर्थ हर बच्चे में नहीं होता। इसका बीड़ा भी हमारी सरकार ने उठाया है। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत सभी दर्शन कराए जा रहे है।

श्री साय ने कहा, पूरे प्रदेश में सुशासन स्थापित करना है। अब कांग्रेसियों को समय देना ही नहीं है। उन्होंने कहा, उनके वंश के लोग ही कांग्रेस में अध्यक्ष बनते हैं। भाजपा में ही परिश्रम और ईमानदारी के बल पर किसी भी पद पर पहुंचा जा सकता है। भाजपा में लगातार बदलाव होते रहते हैं हर पद में लोगों को मौका मिलता है। उन्होंने कहा, सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने की जिम्मेदारी आप सभी की है।

पवन साय ने भाजपा की विकास यात्रा पर डाला प्रकाश

प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय ने मुख्य वक्ता के रूप भाजपा की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर शहर जिला की चारों विधानसभा के विधायक राजेश मूणत , पुरंदर मिश्रा , मोतीलाल साहू और सुनील सोनी , धरसींवा विधायक अनुज शर्मा सहित भाजपा के नवनियुक्त निगम मंडल आयोग के अध्यक्ष उपाध्यक्ष और भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश एवं जिला पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का आयोजन शहर जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर के नेतृत्व में किया गया।

आज भाजपा की चार बड़ी बैठकें

भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश मंगलवार रात को यहां पहुंचे। अब भाजपा के प्रदेश प्रभारी नितिन नवीन बुधवार सुबह यहां पहुंचेंगे। इसके बाद कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में सुबह 9.30 बजे से बैठकों का दौर प्रारंभ होगा। बैठकों में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, डिप्टी सीएम अरुण साव, विजय शर्मा और प्रदेश के कुछ मंत्री भी शामिल होंगे। बैठकों में मुख्यरूप से नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव में जीतने के बाद महापौर, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जिला पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष बने जन प्रतिनिधियों, निगम, मंडल, आयोग में नियुक्ति अध्यक्ष और उपाध्यक्षों के साथ बैठक होगी। इन सभी को भाजपा नेताओं का मार्गदर्शन मिलेगा। प्रदेश में नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव में भाजपा को बड़ी जीत मिली है। इसके बाद अब प्रदेश सरकार ने तीन दर्जन निगम, मंडल और आयोगों में अध्यक्ष और उपाध्यक्षों की नियुक्ति भी कर दी है। आने वाले समय में बचे हुए निगम, मंडलों में नियुक्ति होनी है। इसी के साथ इस समय भाजपा के स्थापना दिवस पर लगातार कार्यक्रम चल रहे हैं। बैठकों के दौर में सबसे पहले सुबह को 9.30 से 10.30 बजे तक शिव प्रकाश और नितिन नवीन भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष और महामंत्रियों के साथ बैठक करेंगे। इसमें राष्ट्रीय नेता संगठन की गतिविधियों के बारे में पूरी जानकारी लेंगे। इसके बाद 10.30 से 12.30 बजे तक निगम, मंडल और आयोग में नियुक्ति किए गए अध्यक्ष और उपाध्यक्षों के साथ बैठक होगी। तीसरी बैठक 12.30 से 1.30 बजे तक शिव प्रकाश, नितिन नवीन, प्रदेशाध्यक्ष किरण देव प्रदेश के सभी मोर्चा के अध्यक्षों की बैठक लेंगे। अंत में दोपहर 3.00 से 4.30 बजे तक निगमों के महापौर, सभापति, नगर पालिका और नगर पंचायतों के अध्यक्ष उपाध्यक्षों और जिला पंचायत के जिला अध्यक्षों और उपाध्यक्षों के साथ बैठक होगी। इन बैठकों में शिव प्रकाश, नितिन नवीन और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का कामकाज को लेकर मार्गदर्शन मिलेगा कि किस तरह से काम करना है। इसी के साथ सभी का परिचय भी होगा।

प्रदेश के अस्पतालों में रिएजेंट सप्लाई और टेंडर पर हाईकोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब

करोड़ों का मेडिकल घोटाला आ चुका है सामने

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने प्रदेश के अस्पतालों में रिएजेंट सप्लाई और टेंडर की स्थिति पर मुख्य सचिव और सीजीएमएससी से दो सप्ताह में शपथ पत्र पर जवाब मांगा है। ध्यान रहे कि सीजीएमएससी में करोड़ों के मेडिकल उपकरण खरीदी घोटाले मामले में हाईकोर्ट ने 4 आरोपियों की अग्रिम जमानत अर्जी पहले ही खारिज कर दी है। कोर्ट ने माना है कि एसीबी और ईओडब्ल्यू की प्रारंभिक जांच में इनकी भूमिका सामने आई है लिहाजा जमानत का लाभ नहीं दिया जा सकता है।

दरअसल, स्वास्थ्य विभाग ने साल 2021 में उपकरणों और मशीनों की खरीदी की प्रक्रिया शुरू की थी। सीजीएमएससी (छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड) ने 26-27 दिन में 411 करोड़ की खरीदी का आदेश जारी किया। इसमें आरोप है कि मशीनों की जरूरत का सही आंकलन नहीं किया गया। भंडारण की सुविधा भी नहीं थी। इसके बाद भी बड़ी संख्या में मशीनें खरीदी गईं। रीएजेंट की रख-रखाव की कोई व्यवस्था नहीं थी, फिर भी स्वास्थ्य केन्द्रों में स्टोर करा दिया गया।

वहीं सीजीएमएससी के अधिकारियों की ओर से रीएजेंट सप्लाई करने वाली कंपनी को व्यक्तिगत लाभ पहुंचाने शासन की प्रक्रिया का पालन नहीं करते हुए खरीदी की गई। यह भी आरोप है कि ईडीटीए ट्यूब 2352 रुपए प्रति नग की दर से खरीदी गई, जबकि अन्य संस्थाएं यही ट्यूब 8.50 रुपए में खरीद रही थीं। इससे करोड़ों का नुकसान हुआ। एसीबी और ईओडब्ल्यू की टीम ने मोक्षित कार्पोरेशन, रिकॉर्ड्स और मेडिकेयर सिस्टम, श्री शारदा इंडस्ट्रीज, सीबी कार्पोरेशन के

खिलाफ धारा 120-बी, 409 आईपीसी और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 13(2), 13(1)(ए), 7(सी) के तहत मामला दर्ज किया है।

4 कंपनियों ने मिलकर की टेंडर में गड़बड़ी

इसके साथ ही दवा-उपकरण की सप्लाई करने वाले फर्म रिकॉर्डर्स एंड मेडिकेयर सिस्टम्स पर आरोप है कि उसने मोक्षित कॉर्पोरेशन और अन्य कंपनियों के साथ मिलकर टेंडर में गड़बड़ी की। चारों कंपनियों के उत्पाद एक जैसे थे। इससे टेंडर प्रक्रिया में मिलीभगत का संदेह हुआ। केस दर्ज करने के बाद एसीबी और ईओडब्ल्यू की टीम ने मोक्षित कॉर्पोरेशन के डायरेक्टर शशांक को गिरफ्तार किया है। जिसके बाद फर्म के प्रमोटर, कर्मचारी पंजाब और हरियाणा निवासी अविनेश कुमार, राजेश गुप्ता, अभिषेक कौशल और नीरज गुप्ता ने संभावित गिरफ्तारी से बचने अग्रिम जमानत याचिका दायर की थी। इसमें कहा गया कि एफआईआर में उनका नाम नहीं है। उनके खिलाफ कोई सीधा आरोप नहीं है। वे केवल कंपनी के कर्मचारी, प्रमोटर, निदेशक और कार्यकारी निदेशक है। टेंडर प्रक्रिया में उनकी कोई भूमिका नहीं थी।

मेंटल हास्पिटल में मनोरोग विशेषज्ञों और अन्य स्टाफ की नियुक्ति में देरी, हाईकोर्ट नाराज

छत्तीसगढ़ के एकमात्र (मेंटल हॉस्पिटल) मानसिक चिकित्सालय में मनोरोग विशेषज्ञों और अन्य स्टाफ की नियुक्ति में हो रही देरी पर हाईकोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताई है। कोर्ट ने चीफ सेक्रेटरी को डाक्टरों की नियुक्ति के आंकड़े, नाम और तिथि के साथ ही सभी जानकारी शपथ पत्र के साथ पेश करने कहा है। अदालत ने मुख्य सचिव को शपथ पत्र के माध्यम से सभी स्थिति स्पष्ट करने का निर्देश दिया है। इस मामले में दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने राज्य सरकार को याद दिलाया कि 22 अगस्त 2024 को जारी आदेश के बाद कई बार सुनवाई हो चुकी है लेकिन अब तक भर्ती प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। सरकार की उदासीनता पर कड़ी टिप्पणी भी कोर्ट ने की है। मानसिक चिकित्सालय में स्टाफ की कमी को लेकर एक अन्य जनहित याचिका भी दायर की गई। इन दोनों याचिकाओं पर हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच में एक साथ सुनवाई चल रही है। पिछली सुनवाई में राज्य

चीफ सेक्रेटरी को डाक्टरों की नियुक्ति के आंकड़े, नाम और तिथि शपथ पत्र में देने के निर्देश

सरकार ने बताया था कि अस्पताल में बिस्तरों की संख्या 200 करने की योजना है, जिसके तहत विशेषज्ञ चिकित्सकों की नियुक्ति की जा रही है। सरकार ने यह भी कहा था कि भर्ती प्रक्रिया जल्द पूरी होगी। इससे पहले, 22 अगस्त 2024 के आदेश के अनुपालन में मुख्य सचिव की ओर से पेश किए गए शपथ पत्र में बताया गया था कि राज्य भर में वर्ग-3 और वर्ग-4 के कुल 650 पदों पर भर्ती की जानी है, जिसमें मानसिक चिकित्सालय, सेंदरी के लिए भी नियुक्तियां शामिल हैं। हालांकि, बार-बार सुनवाई के बावजूद अब तक इस प्रक्रिया की पूर्णता की कोई ठोस जानकारी अदालत को नहीं दी गई। कोर्ट ने इस देरी पर नाराजगी जताते हुए मुख्य सचिव को आदेश दिया कि वे शपथ पत्र के माध्यम से भर्ती प्रक्रिया की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करें।

प्रदेश की खराब सड़कों पर सरकार से मांगा जवाब

प्रदेश में खराब सड़कों की हालत को देखते हुए हाईकोर्ट स्वतः संज्ञान में लेकर जनहित याचिका की सुनवाई कर रहा है। मंगलवार को हाईकोर्ट ने मीनिस्ट्री आफ रोड ट्रांसपोर्ट से इस पर जवाब मांगा। कोर्ट ने धनेली से नरहड़ा और तिफरा से पेण्ड्रीडीह रोड की स्टेटस रिपोर्ट मांगी। इस पर शपथ पत्र के साथ जवाब देने कहा गया है। इसके साथ ही एनएचएआई को सेंदरी जंक्शन में कंप्लायंस रिपोर्ट पेश करने कहा है।

ज्ञात हो कि हाईकोर्ट के आदेश पर पेंड्रीडीह बाईपास रोड से 26 अतिक्रमण हटा दिए गए हैं। यह कार्रवाई एक जनहित याचिका के बाद की गई। यहां अतिक्रमणकारियों ने सड़क और घास भूमि पर दुकान, मकान और ठेले लगा रखे थे। इससे आवागमन में परेशानी हो रही थी। इस कार्रवाई में पुरुषोत्तम, सुधाराम, महेश साहू, कृष्ण कुमार समेत 26 लोगों के अतिक्रमण हटाए गए। यह कार्रवाई जनहित याचिका क्रमांक 58/2019 के तहत की गई। इसमें राजस्व विभाग, पुलिस विभाग, एनएचएआई और स्थानीय पंचायत की टीम शामिल थी।

खराब सड़कों पर लगी है जनहित याचिका

ज्ञात हो कि प्रदेश में खराब सड़कों की हालत को देखते हुए हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान में लेकर जनहित याचिका की सुनवाई शुरू की है। पिछले कुछ माह से इस मामले की सुनवाई चल रही है। कोर्ट ने प्रकरण में न्यायमित्र गठित कर प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सड़कों की जानकारी मांगी थी। तब न्यायमित्रों ने बताया था कि नगर निगम में शामिल गांवों के साथ ही प्रदेश की सड़कें खराब है। इसके साथ ही पिछले पांच साल से एनएतआई का निर्माण कार्य चल रहा है, जो अधूरा है।

हाइवे पर मवेशी, शासन ने कहा- गाइडलाइन बना रहे

छत्तीसगढ़ में नेशनल हाईवे और स्टेट हाईवे सहित सड़कों को मवेशी मुक्त करने, रोड मैप बनाने को लेकर जनहित याचिका पर मंगलवार बिलासपुर हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने अपने पूर्व आदेश के परिपालन की जानकारी मांगी। शासन की ओर से कहा गया कि अतिक्रमण हटाया जा रहा है। इसके साथ ही सड़क सुरक्षा गाइड लाइन तैयार की जा रही है।

सुनवाई के दौरान शासन की ओर से कहा गया कि आवारा मवेशी से सड़कों को मुक्त करने और सटीक कार्य योजना को लेकर बनाई जाने वाली एसओपी का ड्राफ्ट फाइनल कि किया जा रहा है।

ध्यान रहे कि पिछली सुनवाई में राष्ट्रीय राजमार्गों और सड़कों पर आवारा पशुओं की समस्या को रोकने के लिए छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने रोड मैप बनाने के आदेश दिए थे। देश के 7 राज्यों के अपनाए तंत्र की जांच करने गठित समिति और उसकी रिपोर्ट प्रस्तुति पर भी शासन से जवाब मांगा गया। कोर्ट ने इसके साथ ही 23 अक्टूबर 2024 के आदेश के परिपालन में छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव को नया हलफनामा दायर करने का आदेश दिया था। जिसमें प्रदेश के राजमार्गों और जिलों की सड़कों पर मवेशियों की निगरानी और रोकथाम के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी मांगी गई थी। इसमें राज्य के संभागीय आयुक्तों से संभागवार सर्वेक्षण रिपोर्ट मांगी गई थी।

ज्यादातर जिलों में विशेषज्ञों का अभाव, जहां बांडेड पोस्टिंग वहां स्वास्थ्य केंद्रों में सीएमओ की ड्यूटी

हरिभूमि न्यूजः रायपुर

एक ओर प्रदेश में चिकित्सा विशेषज्ञों की भारी कमी है, वहीं दूसरी ओर बांडेड ड्यूटी के नाम पर पीजी डाक्टरों से स्वास्थ्य केंद्रों में सीएमओ ड्यूटी कराई जा रही है। एमडी-एमएस की पढ़ाई पूरी कर चुके डाक्टरों का तर्क है कि कड़ी पढ़ाई के बाद उन्होंने जो विशेषज्ञता हासिल की है, उसका उपयोग ही नहीं किया जा रहा है। बांडेड पोस्टिंग जिला अस्पताल अथवा मेडिकल कालेज में किए जाने की मांग काफी समय से उठ रही है, जिस पर अब तक ध्यान नहीं दिया गया है। प्रदेश में चिकित्सा विशेषज्ञों की भारी कमी है इसे दूर करने के लिए एमडी-एमएस की पढाई पूरी करने वाले डाक्टरों की बांडेड ड्यूटी के तहत वैकल्पिक व्यवस्था की जाती है। नए नियम के अनुसार पीजी डाक्टरों को पहला साल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में बिताना होता है, इसके बाद दूसरे साल में उन्हें जिला अस्पताल अथवा मेडिकल कालेज में पोस्टिंग दी जाती है। बांड सेवा के एक साल उनकी विशेषज्ञता का उपयोग नहीं हो पाता और उनसे केजुअल्टी ड्यूटी, पोस्टमार्टम, एमएलसी ड्यूटी कराई जाती है। यह काम एमबीबीएस डिग्रीधारी चिकित्सा अधिकारी कर सकते हैं। पीजी डाक्टरों की यह मांग काफी पुरानी है कि बांडेड पोस्टिंग डिस्ट्रिक अथवा चिकित्सा महाविद्यालय से संबंधित अस्पतालों में की जाए, जिससे वहां सर्जरी अथवा विषय संबंधित बीमारी के साथ आने वाले मरीजों को समुचित उपचार की सुविधा मिल सके। इससे उन क्षेत्रों में चिकित्सा विशेषज्ञों की कमी को काफी हद तक दूर किया जा सकता है, जहां स्वीकृत पदों की तुलना में आधे से कम डाक्टर कार्यरत हैं।

- ऐसे हेल्थ सेंटरों में कर दी नियुक्ति जहां विशेषज्ञता की उपयोगिता ही नहीं,जिला अस्पताल अथवा मेडिकल कालेजों में पोस्टिंग की उठ चुकी है मांग

पोस्टिंग ऐसी भी

0 सरगुजा जिले के उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अलग-अलग समय में हड्डी रोग, एनीस्थिसिया, पैथोलॉजिस्ट की पोस्टिंग कर दी गई। वहां इस तरह की समस्याओं के उपचार की सुविधा ही नहीं थी इसलिए मरीज भी नहीं आते थे।

0 सीएचसी सारंगढ़ में मेडिसिन के एमडी-एमएस डाक्टर की पोस्टिंग की गई। गंभीर तरह के मरीज नहीं इसलिए मेडिकल ऑफिसर के साथ इमरजेंसी और एमएलसी ड्युटी करते रहे। सालभर बाद मेडिकल कालेज में मिली पोस्टिंग।

0 बालोद के हेल्थ सेंटर में एक पीजी डाक्टर की ड्युटी समाप्त होने के बाद दूसरे डाक्टर की सीएमओ ड्युटी लगाई गई। महिला चिकित्सक स्त्री एवं प्रसुति रोग से संबंधित पीजी थी।

एनटीपीसी NTPC एनटीपीसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम)

एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) के लिए आमंत्रण

एनटीपीसी–कोरबा सुपर थर्मल पावर प्लांट से सूखी फ्लाई ऐश का निःशुल्क उठाव पहले आओ पहले पाओ के आधार पर (अप्रैल 25 से मार्च 26 तक)

ईओआई संख्या एएम–01/डीएफए/2025 **दिनांक 09.04.2025**

कार्य का नामः-

विकास भवन, जमनीपाली, कोरबा, (छ.ग.), 495450 पर स्थित एनटीपीसी–कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन से **"मुफ्त में"**, **"पहले आओ पहले पाओ"** और **"जहां है जैसा है"** के आधार पर सूखी फ्लाई ऐश का उठाव। उठाव और परिवहन राख की जिम्मेदारी इच्छुक राख उपयोगकर्ताओं की होगी

एनटीपीसी लिमिटेड एक वर्ष की अवधि के लिए एनटीपीसी–कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन से सूखी फ्लाई ऐश उठाने के लिए इच्छुक ऐश उपयोगकर्ताओं से रुचि की अभिव्यक्ति (ईओआई) आमंत्रित करता है। इस ईओआई के लिए संपर्क विवरण और ई–मेल पते के साथ **"सामान्य जानकारी"** में प्रस्तावित सूखी फ्लाई ऐश मात्र का उल्लेख किया गया है।

अवेदन कैसे करे- इच्छुक ऐश उपयोगकर्ताओं से अनुरोध है कि वे अपनी आवश्यकताओं को निर्दिष्ट मानक प्रारूप में मेल पर भेजें: ashutl.korba@ntpc.co.in/ashishkumarverma@ntpc.co.in **17:00 बजे** तक **दिनांक 24.04.2025** ।

अभिरुचि की अभिव्यक्ति के लिए **"सामान्य जानकारी"** तथा **"आवेदन हेतु मानक प्रारूप"** https://ntpctender.ntpc.co.in/ पर अपलोड कर दी गई है।

पंजीकृत कार्यालयः एनटीपीसी भवन, कोर–7, स्कोप कॉम्पलेक्स, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली–110 00 वेबसाइटः www.ntpc.co.in सीआईएनः L40101DL1975GOI007966

Concept

विद्युत क्षेत्र में अग्रणी

MAHARISHI UNIVERSITY OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY
Maharishi Road, Mangla, Bilaspur (C.G.) Pin-495001
Recognised by UGC Under Section 2(f)

Appointment for the following positions

Maharishi University of Management and Technology (MUMT), Mangla, Bilaspur (C.G) was established vide Chhattisgarh Private Universities (Establishment and Operations) (Amendment) Act 2018 and is recognized by UGC under section 2(f).

Programme	Subject	Vacant Post		
		Professor	Associate Professor	Assistant Professor
Yoga and Vedic Science	Yoga, Jyotish	1	1	3
Engineering & Technology	Computer Science & Information Technology	1	2	4
Commerce	Commerce	1	2	4
Management	Management	1	2	4
Education	Education	1	2	4
Arts & Humanities	Hindi, English, Geography, Political Science, Economics	1	2	3
Social Science	Sociology, Library Science	1	1	3

APPLICATIONS ARE ALSO INVITED FOR THE POSITION OF PRO VICE-CHANCELLOR

Qualification and Experience as per UGC/AICTE/NCTE/CGPURC/University Norms. Application should reach us on the below mentioned address within 10 days from the publication of this advertisement. Applications with requisite enclosures may also be forwarded through email at mvmcareer@gmail.com.

Registrar, Maharishi University of Management & Technology, Maharishi Road, Mangla, Bilaspur (C.G.) – 495001
Contact No. 98930 63968

देश के सबसे बड़े पोल्ट्री कॉन्क्लेव में देशभर से आए पोल्ट्री ट्रेडर्स

सम्मेलन में दूसरे दिन देश भर के किसान लेंगे भाग

खास बात

- आईबी ग्रुप द्वारा आयोजित कॉन्क्लेव में पहले दिन जुटे 3000 पोल्ट्री ट्रेडर्स

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रायपुर

आईबी ग्रुप द्वारा रायपुर के होटल ओमाया गार्डन में पोल्ट्री कॉन्क्लेव का पहला दिन पोल्ट्री ट्रेडर्स के लिए रहा जिसमें तकरीबन 3000 पोल्ट्री ट्रेडर्स उपस्थित रहे। ट्रेडर्स को पहले दिन आधुनिक तरीके से पोल्ट्री व्यवसाय और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के बारे में प्रशिक्षित किया गया। आयोजन को संबोधित करते हुए आईबी ग्रुप के एमडी बहादुर अली ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य में योगदान देते हुए आईबी ग्रुप आगामी 2035 तक छत्तीसगढ़ राज्य को 'प्रोटीन हब' बनाने के लिए तेजी के साथ काम कर रहा है। इसी कड़ी में आईबी, देश में अब तक लाखों लोगों को पोल्ट्री व्यवसाय से जोड़ चुका है।

देश में चिकन प्रोटीन के प्रति बढ़ रही जागरूकता

एमडी बहादुर अली ने कहा कि देश में चिकन प्रोटीन के प्रति लोगों का रूझान बढ़ा है। केंद्र और राज्य सरकार छोटे-बड़े सभी उद्योगों को सपोर्ट कर रही है और गांव-गांव तक प्रोटीन पहुंचाने कि जो कोशिश हो रही है उसमें हम भी सूत्रधार बना रहे हैं।

आईबी ग्रुप ने बढ़ाया गांव-गांव में रोजगार का अवसर

एमडी अली ने बताया कि 1500 आदमी पर एक चिकन प्रोटीन शॉप खोलने की हमारी योजना है। वर्तमान में हमारे पास लगभग 300 लोगों की टीम है, जो गांव-गांव में परिवर्तन योजना के तहत पोल्ट्री फार्म को विकसित करने और चिकन प्रोटीन शॉप को बढ़ाने का काम कर रही है। आने वाले समय में इसके माध्यम से लोगों की आय बढ़ेगी। गांव में रहकर रोजगार अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में समूह, पोल्ट्री के लिए सब्सिडी द्वारा प्रोत्साहन भी दे रहा है।

विस्तार योजना से पूरा होगा लक्ष्य

एमडी का कहना है कि केन्द्र सरकार और राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सोच को सपोर्ट करते हुए एमडी चिकन गांव में रहकर गांव के विकास की सोच पर काम कर रहे है। इसके तहत 'विस्तार योजना' द्वारा पोल्ट्री व्यवसाय से जुड़े छोटे व्यापारियों के लिए 1000 वाहनों को सब्सिडी दिए जाने की योजना है। जिसमें वाहन खरीदने के लिए 3 साल में 21 करोड़ की सब्सिडी दी जायेगी।

पोल्ट्री में टेक्नोलॉजी लाना जरूरी-जोया आफरीन

समारोह में आईबी ग्रुप की डायरेक्टर जोया आफरीन आलम भी उपस्थित थी। उन्होंने पोल्ट्री ट्रेडर्स को संबोधित करते हुए पोल्ट्री में टेक्नोलॉजी लाने के लिए प्रेरित किया और कहा कि वैश्विक स्तर पर काम करने के लिए हमें एडवांस पोल्ट्री को अपनाना ही होगा।

सम्मेलन में दूसरे दिन देशभर के किसान होंगे उपस्थित

प्रदेश की राजधानी रायपुर के हॉटेल ओमाया गार्डन में हो रहे इस आयोजन के दूसरे दिन, देशभर से आए पोल्ट्री किसान शामिल होंगे जिन्हें भी आधुनिक पोल्ट्री द्वारा देश में प्रोटीन पोषण उपलब्ध कराने की जानकारी दी जाएगी।

टाटा मोटर्स समूह की वैश्विक थोक बिक्री तीन फीसदी घटी

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स की 2024-25 की चौथी तिमाही में जगुआर लैंड रोवर सहित वैश्विक थोक बिक्री सालाना आधार पर तीन प्रतिशत घटकर 3,66,177 इकाई रह गई। कंपनी बयान के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी (जनवरी-मार्च) तिमाही में इलेक्ट्रिक वाहनों सहित टाटा मोटर्स के यात्री वाहनों की वैश्विक थोक बिक्री 1,46,999 इकाई रही, जो वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही की तुलना में छह प्रतिशत कम है।

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER PUBLIC WORK DEPARTMENT, BILASPUR CIRCLE BILASPUR, CHHATTISGARH

निविदा निरस्तीकरण सूचना

इस कार्यालय के निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक 398 दिनांक 24.03.2025 को अपरिहार्य कारणवश निरस्त किया जाता है।

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग
बिलासपुर मण्डल, बिलासपुर

जी. 252600172/6

सरकार बनी वोडाफोन-आइडिया की सबसे बड़ी हिस्सेदार

नई दिल्ली। वोडाफोन आइडिया (वीआई) क्या अब सरकार की कंपनी बन गई है? यह सवाल कई निवेशकों और ग्राहकों के मन में है, क्योंकि भारत सरकार अब इस टेलीकॉम कंपनी की सबसे बड़ी शेयरधारक बन चुकी है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं कि वीआई अब एक सरकारी कंपनी बन गई है।

इस पूरे मामले को विस्तार से समझते हैं। पहले वोडाफोन आइडिया पर सरकार का 16,133 करोड़ रुपए का बकाया था, जो एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एजीआई) और स्पेक्ट्रम यूसेज चार्ज (एसयूसी) से जुड़ा था। कंपनी के पास नकदी की भारी कमी थी, जिसके चलते वह इस बकाये का भुगतान नहीं कर सकी।

कंपनी के बकाया को इक्विटी शेयर में बदला गया

2023 में सरकार ने वीआई के इस बकाए को इक्विटी (शेयर) में बदलने का फैसला किया। इसके बाद, भारत सरकार को 33.1 प्रतिशत हिस्सेदारी मिल गई और वह कंपनी की सबसे बड़ी शेयरधारक बन गई। अब हाल ही में एक बार फिर सरकार ने वोडाफोन आइडिया (वीआई) में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। भारत सरकार की हिस्सेदारी बढ़कर अब 48.99 प्रतिशत हो गई है। दरअसल, वोडाफोन आइडिया पर 36,950 करोड़ रुपए का स्पेक्ट्रम बकाया था जिसे सरकार ने इक्विटी यानी स्टॉक्स में बदल दिया।

भारत में कंपनियों के सीईओ का औसत वेतन 10 करोड़ रुपए पहुंचा

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारत में कंपनियों के पेशेवर मुख्य कार्यपालक अधिकारियों (सीईओ) का औसत वेतन पिछले वर्ष की तुलना में 13 प्रतिशत बढ़कर 10 करोड़ रुपये हो गया है। एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। पेशेवर सेवा फर्म डेलॉयट इंडिया की यह सर्वेक्षण रिपोर्ट कहती है कि सीईओ को मिलने वाले कुल वेतन पैकेज का केवल 40 प्रतिशत हिस्सा ही निश्चित है।

शेष 60 प्रतिशत हिस्सा जोखिम पर आधारित है जिसमें अल्पकालिक प्रोत्साहन (25 प्रतिशत) और दीर्घकालिक प्रोत्साहन (35 प्रतिशत) शामिल होते हैं। घोष ने कहा कि इक्विटी बाजारों में जारी गिरावट का इन शीर्ष अधिकारियों के वेतन पर नकारात्मक प्रभाव अभी तक नहीं दिखा है लेकिन इनके वेतन पैकेज का एक हिस्सा इक्विटी बाजार से जुड़ा होने के कारण अगले साल के आंकड़ों में उसका असर दिख सकता है।

प्रोत्साहन वित्तीय प्रदर्शन पर निर्भर

सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि कंपनियां अब शीर्ष कार्यकारी पदों पर दिए जाने वाले अल्पकालिक प्रोत्साहनों में वित्तीय प्रदर्शन के अलावा समग्र कार्यात्मक या व्यावसायिक प्रदर्शन आकलन पर अधिक ध्यान दे रही हैं। हालांकि, दीर्घकालिक प्रोत्साहन काफी हद तक वित्तीय प्रदर्शन पर ही निर्भर करता है। डेलॉयट इंडिया के निदेशक दिनकर पवन ने कहा, ''शेयर-आधारित वेतन अब अधिक जटिल होता जा रहा है और नए प्रस्तावों की गहन जांच की जा रही है ताकि सभी हितधारकों के हितों की रक्षा हो सके।''

सीईओ सबसे अधिक वेतन पाने वाला अधिकारी

रिपोर्ट के मुताबिक, सीईओ के बाद कंपनियों के सीओओ और सीएफओ सबसे अधिक वेतन पाने वाले कार्यकारी बने हुए हैं। उनका औसत वेतन पैकेज लगभग चार करोड़ रुपये है। डेलॉयट इंडिया में साझेदार आनंदोरूप घोष ने कहा, ''भारत में शीर्ष कार्यकारी अधिकारियों का पारिश्रमिक लगातार बढ़ रहा है क्योंकि इस प्रतिभा खंड में आपूर्ति सीमित और मांग अधिक है।''

सीईओ व अधिकारियों का कार्यकाल छोटा हो रहा : सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि सीईओ और अन्य शीर्ष अधिकारियों का कार्यकाल छोटा हो रहा है और उनसे प्रदर्शन की अपेक्षाएं बढ़ रही हैं। इसकी वजह से वेतन और लाभ पर दबाव बढ़ रहा है।

सोनालीका ने वित्त वर्ष 2025 में अब तक की सर्वाधिक ट्रैक्टर की बिक्री

नई दिल्ली। प्रमुख ट्रैक्टर और कृषि मशीनीकरण ब्रांड सोनालीका और सोलिस के संचालक इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड (आईटीएल) ने वित्तीय वर्ष 2025 में अब तक की सर्वाधिक 1,53,764 कुल वार्षिक ट्रैक्टर बिक्री और 14.8% कुल बाजार हिस्सेदारी के साथ किया है। इस दौरान घरेलू बाजार में सोनालीका का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा, और यह कंपनी की प्रसिद्ध हैवी ड्यूटी ट्रैक्टर रेंज के कारण संभव हुआ, जिसने न केवल भारत में बल्कि 150 देशों में भी अपनी लोकप्रियता बरकरार रखी है। इस अवसर पर आईटीएल के जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर रमन मित्तल ने कहा यह उपलब्धि एक ऐसे खास वर्ष का प्रतीक है, जिसने हमें फॉर्च्यून 500 भारत की सबसे बड़ी कंपनियों की सूची और भारत में शीर्ष 10 ऑटो ब्रांड्स में शामिल किया।

कार्यालय अधिष्ठाता, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.)

Telephone No. 07774-299312
E-mail-deanmedicalcollegesurguja@gmail.com

क्र./3059/ शा.चि.म./स्था./2025 अम्बिकापुर, दिनाँक 04.04.2025

Advertisement for Walk-In-Interview

छत्तीसगढ़ शासन, चिकित्सा शिक्षा विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन, नया रायपुर के आदेश क्रमांक : एफ 3-53/2012/नौ/55-4 नया रायपुर, दिनांक 27/05/2016 के अनुपालन में शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय अम्बिकापुर हेतु स्वीकृत, रिक्त प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के चिकित्सा शिक्षकों/चिकित्सकों/रेसीडेंट चिकित्सकों/ट्यूटर/प्रदर्शक/अधिकारियों के रिक्त पदों को संविदा आधार पर भरने हेतु संस्था हित, मरीज़ हित व जन हित में, शासन द्वारा प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुए प्रत्येक कार्यदिवसों में प्रातः 10.30 बजे से सायं 04:00 से वॉक-इन-इन्टरव्यू आयोजित किया जा रहा है।

इस संस्था के विभिन्न विभागों आरक्षित/अनारक्षित वर्ग के चिकित्सा शिक्षकों, चिकित्सकों, सीनियर रेसीडेंट, जूनियर रेसीडेंट, प्रदर्शक/ट्यूटर एवं अन्य चिकित्सक / गैर-चिकित्सक प्रथम, द्वितीय श्रेणी के रिक्त पदों पर आरक्षण रोस्टर अनुसार संविदा नियुक्ति हेतु भारतीय चिकित्सा परिषद् के मापदण्ड की अहर्ता (अधिकतम आयु 70 वर्ष तक नियुक्ति मान्य होगी) रखते हों। इच्छुक उम्मीद्वार वॉक-इन-इन्टरव्यू में स्वयं के व्यय पर उपस्थित हो सकते हैं।

रिक्त पदों की जानकारी एवं वॉक-इन-इन्टरव्यू में उपस्थित होने संबंधित आवश्यक जानकारी हेतु महाविद्यालय की वेबसाइट - www.gmcambikapur.co.in का अवलोकन कर सकते हैं अथवा महाविद्यालय के ई-मेल deanmedicalcollegesurguja@gmail.com अथवा दूरभाष 07774-299312 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अधिष्ठाता
राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव
शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा (छ. ग.)

जी-252600182/3

कोटा में एडमिशन के लिए देशभर से पहुंच रहे स्टूडेंट-पेरेंट्स

कोटा। कोचिंग इंस्टीट्यूट द्वारा नए सेशन के बैच की डेट्स घोषित करने के साथ ही यहां एडमिशन्स का दौर शुरू हो गया है। हजारों की संख्या में स्टूडेंट्स-पेरेन्ट्स कोचिंग संस्थानों में एडमिशन के लिए आ रहे हैं। कोटा में रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड से लेकर कोचिंग संस्थानों तक में रौनक नजर आ रही है।

स्टूडेंट्स बोर्ड परीक्षाओं के रिजल्ट्स के इंतजार में समय गंवाए बिना आईआईटी जेईई और मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी की तैयारी के लिए कोटा आ रहे हैं। कोटा के अधिकांश कोचिंग संस्थानों में अप्रैल माह में बैच शुरू हो रहे हैं। कोटा के एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट में एडमिशन के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा में प्रदर्शन के आधार पर स्टूडेंट्स को फीस में 90 प्रतिशत तक स्कॉलरशिप भी दी जा रही है। शहर के विभिन्न कोचिंग संस्थानों में पिछले एक सप्ताह में हुए ओरियंटेशन सेशन्स में हजारों स्टूडेंट्स पेरेन्ट्स शामिल हुए।

इस बार कोटा शहर में स्टूडेंट्स को बदला हुआ माहौल मिल रहा है।

यहां कोचिंग और कॅरियर के साथ केयरिंग की भी बात हो रही है। कोटा शहर के आमजन कोचिंग संस्थानों के साथ मिलकर स्टूडेंट्स की केयरिंग पर फोकस कर रहे हैं। यहां आने वाले स्टूडेंट्स और पेरेन्ट्स को परिवार जैसा माहौल देने के साथ ही बेस्ट इकोसिस्टम दिया जा रहा है। यही कारण है कि एडमिशन्स में भी उत्साह नजर आ रहा है। जिला प्रशासन, पुलिस, जनप्रतिनिधि, आमजन, कोचिंग संस्थान मिलकर कोटा को केयरिंग सिटी बना रहे हैं। यहां हॉस्टल, मैस, ऑटो यूनियन सहित सभी हितधारक जुड़ रहे हैं और कोटा आने वाले स्टूडेंट्स पेरेन्ट्स के केयरिंग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर रहे हैं।

कॉफी डे की 425 करोड़ रुपए की भुगतान चूक

नई दिल्ली। कॉफी डे एंटरप्राइजेज लि. ने 31 मार्च, 2025 तक बैंकों, वित्तीय संस्थानों और गैर-सूचीबद्ध ऋण प्रतिभूतियों से एनसीडी और एनसीआरपीएस के रूप में लिए गए कर्ज पर ब्याज और मूल राशि के भुगतान पर कुल 425.38 करोड़ रुपये की चूक की है। कर्ज कम करने में जुटी कॉफी डे एंटरप्राइजेज (सीडीईएल) ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा, 'ब्याज राशि देने और मूल राशि के पुनर्भुगतान में देरी नकदी संकट के कारण है।' कंपनी के अनुसार, 'ब्याज और मूलधन के पुनर्भुगतान में चूक के कारण कर्जदाताओं ने कंपनी को ऋण वापस करने को लेकर नोटिस भेजे हैं और साथ ही कानूनी प्रक्रिया भी शुरू की है...।' सीडीईएल ने 31 मार्च, 2025 तक बैंकों या वित्तीय संस्थानों से ऋण को लेकर मूल राशि के भुगतान पर 174.83 करोड़ रुपये की चूक की सूचना दी है।

कार्यालय जिला पंचायत बालोद (छ.ग.)

क्रमांक/जि.पं./ पंचा./ RGSA / स्था./2025/601 बालोद, दिनांक : 07.04.2025

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना अंतर्गत संविदा नियुक्ति हेतु आवेदन

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा संचालित Revamped राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना अंतर्गत जिला बालोद हेतु सहायक जिला समन्वयक संविदा नियुक्ति (एकमुश्त वेतन), वर्ग - अनारक्षित - मुक्त हेतु आवेदन छत्तीसगढ़ सिविल सेवा संविदा नियुक्ति नियम 2012 के तहत निर्धारित प्रारूप में कम्प्यूटर अंकित अथवा स्पष्ट अक्षरों में हाथ से भरा हुआ आवेदन केवल पंजीकृत डाक/ स्पीड पोस्ट के माध्यम से समय सायं 5.00 बजे तक कार्यालय मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत बालोद के पते पर निर्धारित अंतिम तिथि 24.04.2025 तक कार्यालयीन दिवस में आमंत्रित किए जाते हैं। आवेदन पत्र का प्रारूप एवं विस्तृत दिशानिर्देश जिले की वेबसाईट (https://balod.gov.in) तथा जिला पंचायत बालोद के सूचना पटल से प्राप्त कर सकते हैं।

रिक्त पद का नाम/ वर्ग	संविदा वेतन रू. में	निर्धारित अर्हता	100 अंको का मेरिट हेतु निर्धारण	
			विवरण	अंक
सहायक जिला समन्वयक (ADPM)-RGSA अनारक्षित-मुक्त	31750 एकमुश्त	1. मान्यता प्राप्त संस्थान से न्यूनतम 60% अंको के साथ स्नातक डिग्री उत्तीर्ण 2. कम से कम 01 वर्ष का शासकीय / अर्द्ध शासकीय कार्यालय अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं में क्रियान्वयन का कार्य अनुभव	अनिवार्य शैक्षणिक योग्यता के अंकों का अधिभार- 70%	70
			शासकीय / अर्द्ध शासकीय कार्यालय का अनुभव हेतु (प्रत्येक वर्ष हेतु 02 अंक) अधिकतम 10 अंक	10
			पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग में कार्यानुभव को प्राथमिकता	
			कम्प्यूटर प्रायोगिक परीक्षा (एम.एस. ऑफिस) के अंकों का अधिभार - 20%	20

संवाद- 43484

मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत बालोद छ.ग.

मुथूट फाइनेंस बना भारत का भरोसेमंद वित्तीय सेवा ब्रांड

नई दिल्ली। मुथूट फाइनेंस को एक बार फिर टीआरए द्वारा प्रकाशित ब्रांड ट्रस्ट रिपोर्ट में 2025 के लिए भारत के नंबर 1 सबसे भरोसेमंद वित्तीय सेवा ब्रांड के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। यह लगातार 9वां साल है, जब मुथूट फाइनेंस को यह प्रतिष्ठित सम्मान मिला है। 2025 के संस्करण में 16 शहरों में व्यापक प्राथमिक शोध और 6,000 से अधिक घंटे के फील्डवर्क के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की गई थी। यह अध्ययन उपभोक्ताओं के विश्वास और ब्रांड व्यवहार का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करता है, जिससे भारत के सबसे भरोसेमंद ब्रांडों की पहचान की जाती है। इस अवसर पर मुथूट फाइनेंस के संयुक्त प्रबंध निदेशक अलेक्जेंडर जॉर्ज मुथूट ने कहा, यह उपलब्धि हमारे ग्राहकों के प्रति हमारी गहरी प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जहां हम उन्हें ईमानदारी, पारदर्शिता और नवाचार के साथ सेवा प्रदान करते हैं।

हल्दीराम की दिल्ली, नागपुर इकाई के एफएमसीजी कारोबार का विलय पूरा

नई दिल्ली। हल्दीराम की नागपुर और दिल्ली शाखाओं को मिलाकर हल्दीराम स्नैक्स फूड प्राइवेट लिमिटेड बनाने की प्रक्रिया पूरी हो गई है। हल्दीराम के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) कृष्ण कुमार चुटानी ने पेशेवर मंच लिंक्डइन पर सोमवार को जानकारी दी और लिखा, ''हल्दीराम के सफर का नया अध्याय शुरू और यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है।''

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

Ph. – 0771-2262011, Email - development.prsu@gmail.com
Website- www.prsu.ac.in

क्र. 238/ विकास / 2025 रायपुर, दिनांक 07/04/2025

निविदा सूचना

विश्वविद्यालय परिसर के उद्यानों के वार्षिक रख-रखाव हेतु निविदा

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के उद्यानों के वार्षिक रख-रखाव हेतु शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्थानों में उद्यानिकी कार्य का अनुभव रखने वाले फर्मों से निविदा निर्धारित निविदा प्रपत्र "फार्म बी" 3 लिफाफा पद्धति से (लिफाफा "A" में अमानत राशि, लिफाफा "B" तकनीकी दस्तावेज एवं लिफाफा "C" में प्राइस बीड) आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के विकास विभाग से आवेदन के साथ, विगत वित्तीय वर्ष की आयकर प्रमाण पत्र, कार्य अनुभव की प्रमाणित प्रति के साथ रू. 1000=00 (एक हजार) विश्वविद्यालय के ऑनलाइन पेमेंट पोर्टल online.prsu.ac.in की रसीद या रजिस्ट्रार, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के नाम से डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर दिनांक 08/05/2025 के पूर्व कार्यालयीन दिवस में प्राप्त किये जा सकते है।

1	निविदा की अनुमानित लागत	रू. 56,81,000=00
2	निविदा प्रपत्र के साथ अमानत राशि (बैंक ड्राफ्ट)	रू. 56,810-00
3	निविदा प्रपत्र पंजीकृत डाक/स्पीड पोस्ट से प्राप्ति की अंतिम तिथि	09/05/2025 समय अपरान्ह 03:00 बजे तक
4	निविदा खोलने की तिथि	09/05/2025 समय अपरान्ह 04:00 बजे
5	निविदा खुलने का स्थान	कुलपति सचिवालय सभागार, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

संवाद- 43481

कुलसचिव

**छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग
कार्यालय मुख्य अभियंता,
महानदी परियोजना जल संसाधन विभाग, रायपुर (छ.ग.)**

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

(द्वितीय आमंत्रण)

सिस्टम निविदा क्र. 166439/ निविदा सूचना क्र. 01 / व.ले.लि./2025-26
दि. 01.04.2025

निम्नलिखित कार्यो के लिए दिनांक 21.04.2025 17:30 तक ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है :

कार्य का नाम: कोंडागांव जिले के विकासखंड कोंडागांव की भंवरडीग नदी पर सिरपुर स्टापडेम सह पुलिया का निर्माण कार्य।

अनुमानित लागत: रू. 782.32 लाख

(एस.ओ.आर. दिनांक 01.08.2010 से प्रचलित (यथा संशोधित दिनांक 22.08.2022 तक))

अन्य विवरण एवं एवं विस्तृत निविदा छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेंट वेब साइट https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक 08.04.2025 समय 17.31 बजे से देखे तथा डाउनलोड़ किये जा सकते है ।

नोट: निविदा में भाग लेने हेतु ठेकेदारों को ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in पर नामांकित/पंजीयन तथा लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत ठेकेदार को उपयुक्त श्रेणी में पंजीयन कराना अनिवार्य है।

कार्यपालन अभियंता
जल संसाधन संभाग, कोंडागांव
कृते मुख्य अभियंता महानदी परियोजना
जल संसाधन विभाग, रायपुर (छ.ग.)

जी. 252600167/2

कार्यालय प्रमुख अभियंता, जल संसाधन विभाग, शिवनाथ भवन, सेक्टर-19, नार्थ ब्लॉक, नवा रायपुर अटल नगर, जिला - रायपुर (छ.ग.)

संशोधित विज्ञापन

छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर का पत्र क्रमांक एफ 01-16/31/ स्था./ 2020 दिनांक 29.10.2024 द्वारा दी गई सहमति एवं छत्तीसगढ़ शासन, सामान्य प्रशासन विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर के परिपत्र क्रमांक एफ 13-01/2024 / आ.प्र./1-3, दिनांक 31.05.2024 द्वारा सीधी भर्ती के रिक्त पदों पर नियुक्ति के संबंध में निर्देश जारी करते हुए दिव्यांगजनों के लिए रिक्त पदों के बैकलॉग पूर्ति हेतु विभागों द्वारा विशेष भर्ती अभियान के तहत नियुक्तियों के लिए वित्त विभाग की पूर्व अनुमति की आवश्यकता को दिनांक 31.03.2025 तक के लिए समाप्त किया गया है, के आधार पर छत्तीसगढ़ जल संसाधन विभाग में निम्नलिखित रिक्त पदों की सीधी भर्ती हेतु छत्तीसगढ़ के स्थानीय पात्र निवासियों से छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल के वेबसाईट http://vyapamcg.cgstate.gov.in पर ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं, पदों का विवरण समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञापन में कुल रिक्तियों की वर्गवार संख्या के स्थान पर कुल रिक्तियों की संख्या प्रतिस्थापित कर, रिक्तियों की संख्या / आरक्षित पदों में संशोधन करते हुए, छत्तीसगढ़ के स्थानीय पात्र निवासियों से छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल के वेबसाईट http://vyapamcg.cgstate.gov.in पर ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। पदों का विवरण निम्नानुसार है :-

स.क्र.	पदनाम	कुल रिक्तियों की वर्गवार संख्या				कुल रिक्तियों की वर्गवार संख्या में महिलाओं के लिए आरक्षित पद				कुल रिक्तियों की वर्गवार संख्या में भूतपूर्व सैनिको के लिए आरक्षित पद				कुल रिक्तियों में से छत्तीसगढ़ के स्थानीय निवासी दिव्यांगजनों के लिए आरक्षित पद	योग	सांतवा वेतनमान
		अना.	अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	अना.	अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	अना.	अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.पि.व.			
1	उपअभियंता (सिविल) (बैकलॉग)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	01	01	01	05 OA, OL = 03 (One Arm, One Leg) HH = 02 (Hearing Impairment)	08	लेवल-8 बेसिक पे- 35400
2	उपअभियंता (सिविल) (नियमित)	41	12	31	13	12	03	09	03	04	01	03	01	07 OA,OL=03 (One Arm, One Leg) HH = 04 (Hearing Impairment)	97	लेवल-8 बेसिक पे- 35400
3	उपअभियंता (वि./या.) (बैकलॉग)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	01	04	01	01 HH = 01 (Hearing Impairment)	07	लेवल-8 बेसिक पे- 35400
4	उपअभियंता (वि./या.) (नियमित)	04	01	03	01	01	-	-	-	-	-	-	-	01 OL=(One Leg)	09	लेवल-8 बेसिक पे- 35400

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल द्वारा उक्त पदों के लिए परीक्षा दिनांक 20.07.2025 को आयोजित की जायेगी, संशोधित विस्तृत विज्ञापन, आवश्यक शैक्षणिक अहर्ता, आयु सीमा, पाठ्यक्रम, भर्ती प्रक्रिया, नियम एवं शर्तें, परीक्षा शहर आदि संबंधी जानकारी व्यापमं के वेबसाईट http://vyapamcg.cgstate.gov.in पर देखे जा सकते हैं, उपरोक्त नियुक्तियाँ माननीय उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली के एस.एल.पी. (सी) क्रमांक 19668/2022 में पारित होने वाले अंतिम आदेश के अध्याधीन होगी एवं माननीय उच्चतम न्यायालय के अंतिम निर्णय अनुसार विज्ञापित किये गये पदों की वर्गवार पदों की संख्या में परिवर्तन भी हो सकता है।

नोडल अधिकारी/ कार्यपालन अभियंता,
वास्ते प्रमुख अभियंता, जल संसाधन विभाग, छत्तीसगढ़, नवा रायपुर, अटल नगर

जी. 252600184/3

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, कोरबा

क्र. कार्यको/विज्ञा./क्रय/77 कोरबा, दिनांक : 27.04.2025

"बिजली बन्द की सूचना"

कार्यपालन अभियन्ता (संचालन/संधारण) संभाग, छ.स्टे.पॉ.डिस्ट्री.कं.लिमि, कोरबा के कोरबा उप-संभाग अंतर्गत आने वाले सर्व सम्माननीय उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है, कि कोरबा उप-संभाग अंतर्गत आने वाले समस्त वितरण केन्द्र में मरम्मत कार्य पूर्व अतिआवश्यक रखरखाव कार्य एवं सुधार कार्य किये जाने के कारण निम्नांकित फीडर उपकेन्द्रो में उनके समक्ष दर्शाये गये दिनांक एवं दिन के अनुसार प्रातः 08.00 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक विद्युत आपूर्ति पूर्णतः/ अंशतः बन्द रहेगी।

क्रं.	दिनांक	दिन	फीडर का नाम	वितरण केन्द्र	प्रभावित क्षेत्र
1	09.04.2025	बुधवार	11 केव्ही कोथारी फिडर	बरपाली	कोथीरी, मंड़वारानी एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही उरगा/केराकछार फिडर	भैंसमा	उरगा, सेमीपाली, बरबसपुर, केराकछार, पतरापाली, टेवानारा, मौहार एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही करतला फिडर	करतला	करतला, कोटमेर, सकदुकला, कोई, श्रीमार एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही सीधापाठ फिडर	सोहागपुर	सीधापाठ से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही रामपुर फिडर	रामपुर	रामपुर, अंधरीकोना एवं आसपास के क्षेत्र
2	12.04.2025	शनिवार	33 के वी उरगा फिडर	बरपाली	बरपाली उपकेन्द्र एवं फरसवानी उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर से संबंधित क्षेत्र
3	16.04.2025	बुधवार	11 केव्ही तुमान फिडर	बरपाली	पकरिया, संण्डैल, कटबितला झिंका पहुंदा एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही नोनबिर्रा/पताढ़ी फिडर	भैंसमा	नोनबिर्रा, सलिहाभांठा, केराकछार, बांधापाली, केरवाद्वारी, पताढ़ी, एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही चचिया फिडर	करतला	चचिया, धौराभांठा, तौलाली, कुदमुरा, जिल्गा बरपाली, बासिन एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही देवलापाठ फिडर	सोहागपुर	कोथारी, कचोरा, देवलापाठ, बिरतराई एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही बेहरचुंवा फिडर	रामपुर	बेहरचुंवा, खुंटाकुड़ा बोतली, नवापारा, घिनारा, सुअरलोट, टेगनमार एवं आसपास के क्षेत्र
4	19.04.2025	शनिवार	33 के वी करतला फिडर	करतला	करतला उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर से संबंधित क्षेत्र
5	19.04.2025	शनिवार	33 के वी भैंसमा फिडर	भैंसमा	भैंसमा एवं उरगा उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर से संबंधित क्षेत्र
6	23.04.2025	बुधवार	11 केव्ही लबेद फिडर	बरपाली	सुपातराई, लबेद, रामभांठा, चिल्हापताई एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही रजगामार/चाकामार फिडर	भैंसमा	रजगामार, चाकामार, गोढ़ी, बेंदरकोना, दलदली, आंछीमार एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही रामपुर (मदवानी) फिडर	करतला	चांपा, चोरभट्ठी, कल्गामार, मदवानी, चारमार, जोगीपाली एवं आसपास के क्षेत्र
7	26.04.2025	शनिवार	33 के वी सोहागपुर फिडर	सोहागपुर	सोहागपुर उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर से संबंधित क्षेत्र
8	30.04.2025	बुधवार	11 केव्ही सरगबुंदिया फिडर	बरपाली	बरपाली, सरगबुंदिया, पहंदा एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही तिलकेजा/बुंदेली फिडर	भैंसमा	तिलकेजा, जुनवानी, गिधौरी, दादरकला, करूमौहा, बुंदेली, मुढुनारा, मातमार एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही गेंराव फिडर	करतला	बड़मार, पिड़िया, सुईआरा, गेरांव, बताती, पसरखेत, मदनपुर, कोल्गा एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही फरसवानी फिडर	सोहागपुर	चिचोली, फरसवानी, संजय नगर एवं आसपास के क्षेत्र
9	07.05.2025	बुधवार	11 केव्ही लीमडीह फिडर	बरपाली	तुमान, कांपूपहरी, लीमडीह, औराई, चिकनीपाली एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही खरहरी/चितापाली फिडर	भैंसमा	चितापाली, रौनाडाप, हाथीमुड़, चाकामार, कल्गामार, देवरमाल, कुदुरमाल, पतरापाली, बरीडीह, सेमीपाली एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही चिर्रा फिडर	करतला	स्यांग, चिर्रा, अमलडीहा, गरमा एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही उमरेली फिडर	सोहागपुर	खरवानी, कर्रापाली, सुखरीकला सुखरीखुर्द एवं आसपास के क्षेत्र
10	14.05.2025	बुधवार	11 केव्ही गांड़पाली फिडर	बरपाली	गांड़ापाली, पठियापाली, मौहार, एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही भैंसमा/गोढ़ी फिडर	भैंसमा	मसान, पताढ़ी, कुकरीचोली, सिलयारीभांठा, कुरूडीह, करमंदी, कुदरी, भिलाईखुर्द, बरबसपुर एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही पतरापाली फिडर	करतला	पतरापाली, गिरारी, गिधकुंवारी, सिमकेंदा, एवं आसपास के क्षेत्र
			11 केव्ही बुढ़ियापाली फिडर	सोहागपुर	बुढ़ियापाली, ढिटोरी, पहाड़गांव, छुईहा एवं आसपास के क्षेत्र
11	21.05.2025		11 केव्ही भैंसमा/कोरकोमा फिडर	भैंसमा	भैंसमा, कोरकोमा, ओमपुर, छुईढोड़ा, आमाडांड एवं आसपास के क्षेत्र
12	03.05.2025	शनिवार	33 के वी चीर्रा फिडर	करतला	चिर्रा उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर संबंधित क्षेत्र
13	10.05.2025	शनिवार	33 के वी रामपुर फिडर	रामपुर	रामपुर उपकेन्द से निकलने वाले समस्त 11 केव्ही फिडर से संबंधित क्षेत्र

नोट :- 1. आवश्यकतानुसार समय-सीमा में परिवर्तन किया जा सकता है।
2. विद्युत देयक का भुगतान समय सीमा में करते हुये विद्युत विच्छेदन जैसी अप्रिय परिस्थितियों से बचें एवं कम्पनी को सहयोग प्रदान करें।

कार्यपालन अभियंता (सं.सं.)
छ.स्टे.पॉ.डिस्ट्री.कं.लि., कोरबा

संवाद-43477

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दूसरी बार पद संभालने के बाद से 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति पर चलते हुए अवैध प्रवासियों को देश से बाहर निकालने के लिए ताबड़तोड़ एक्शन लिए हैं। ट्रंप प्रशासन ने ना सिर्फ हजारों प्रवासियों को सैन्य विमानों के जरिए डिपोर्ट कर दिया, बल्कि देश में उन पर कड़ी निगरानी भी रखी जा रही है।

ट्रंप सरकार बड़ा फाइन वसूलने की कर रही तैयारी

अवैध प्रवासियों के अमेरिका न छोड़ने पर लगेगा तगड़ा जुर्माना!

एजेंसी ▸▸ वॉशिंगटन

ऐसी खबरें आई हैं कि ट्रंप जल्द ही प्रवासियों को लेकर एक और बड़ी घोषणा कर सकते हैं। रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी सरकार डिपोर्ट के आदेशों के बावजूद अमेरिका न छोड़ने वाले लोगों पर जुर्माना लगाने की तैयारी कर रही है। रॉयटर्स द्वारा समीक्षा किए गए दस्तावेजों के मुताबिक ट्रंप प्रशासन ने निर्वासन आदेश के तहत प्रवासियों पर प्रतिदिन 998 डॉलर तक का जुर्माना लगाने की योजना बनाई है। इसके मुताबिक अगर प्रवासी, तय समय सीमा तक अमेरिका छोड़ने में विफल रहते हैं तो भुगतान न करने पर उनकी संपत्ति भी जब्त कर ली जाएगी। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस फैसले को अमल में लाने के लिए ट्रंप 1996 के एक कानून का सहारा ले सकते हैं।

दस्तावेजों के मुताबिक प्रतिदिन 998 डॉलर तक जुर्माना लगाने की योजना

1 मिलियन डॉलर तक का जुर्माना

डोनाल्ड ट्रंप के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इन योजनाओं पर चर्चा करने के लिए नाम न छापने की शर्त पर बताया है कि ट्रंप प्रशासन यह जुर्माना पांच साल तक के लिए पूर्वव्यापी रूप से लागू कर सकती है। अगर यह योजना धरातल पर उतारी गई तो प्रवासियों पर 1 मिलियन डॉलर से अधिक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

1996 के एक कानून का सहारा लेकर की जाएगी यह वसूली

होमलैंड सिक्योरिटी विभाग ने दी है चेतावनी

इससे जुड़े सवालों के जवाब में यू.एस. होमलैंड सिक्योरिटी विभाग की प्रवक्ता ट्रिसिया मैकलॉघलिन ने एक बयान में अवैध रूप से रह रहे अप्रवासियों को सेल्फ डिपोर्ट और देश छोड़ने के लिए एक मोबाइल ऐप का उपयोग करने की सलाह दी है। मैकलॉघलिन ने आगे कहा कहा, "अगर वे ऐसा नहीं करते हैं, तो उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे। उन्हें प्रति दिन 998 डॉलर का जुर्माना भरना होगा।" विभाग ने 31 मार्च को एक सोशल मीडिया पोस्ट में जुर्माने की चेतावनी भी दी है।

ट्रंप ने कही ये बात

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'हमारे देश में अवैध रूप से रहने वाले लोग या तो आसान तरीके से स्वेच्छा से निर्वासन चुन सकते हैं या फिर उन्हें कठिन तरीके से निर्वासित किया जाएगा, जो सुखद नहीं हो। बाइडेन प्रशासन ने सीबीपी वन ऐप का उपयोग करके 10 लाख से अधिक अवैध प्रवासियों को अमेरिका में प्रवेश करने की अनुमति दी। अब मेरा प्रशासन हमारे देश में अवैध रूप से रह रहे लोगों को स्वेच्छा से देश छोड़ने का एक आसान तरीका देने के लिए सीबीपी होम ऐप लॉन्च कर रहा है।' उन्होंने आगे कहा, "अगर वे स्वेच्छा से देश छोड़ते हैं तो भविष्य में किसी समय उन्हें कानूनी रूप से वापस लौटने का अवसर मिल सकता है। लेकिन यदि वे इस अवसर का लाभ नहीं उठाते, तो उन्हें खोजकर निर्वासित कर दिया जाएगा।

MUNICIPAL COUNCIL, SAKTI (C.G)
OFFICE OF THE CHIEF MUNICIPAL OFFCER

E-procurement Tender Notice
UDD Portal: http:/eproc-cgstate.gov.in

NIT NO. 27/ PWD//N.P.P/ 2025-26 SAKTI, DATE 08.04.2025

S. No	System Tendar No.	Name Of Work/description Of Work	Probable Amount of contract (lacs)
1	166845	Placement Employees at Municipal Council SAKTI (For The office work, water supply, sanitation and drivers) For 12 Months	11667480.00

1- Amount of the Estimate Rs. 116.67 lacs Time allowed for completion 12 Months (from date of agreement) The time period can be increased as per the requirement. 2- Earnest Money Deposit :- 87600.00 (EMD)Should be made if in favour of chief municipal officer council SAKTI and scanned copy for FDR should be attached and true FDR and affidavit should be posted to the office of chief municipal officer municipal council SAKTI.
The Details Can be viewed and download online directly from the goverment of Chhattisgarh e-procurement portal http:// e-proc.cgstate.gov.in on sub portal of though urban administration and dovelopment department http:// uad.eproc.cgstate.gov.in for more details on the tender and bidding process you may please visit the above-mentioned portal last date of bid submission date 30.04.2025 Time 17:30 pm.

Chief Municipal Officer Municipal Council Sakti

सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु के राज्यपाल को सुनाई खरी-खरी

आप संविधान से चलें, पार्टियों की मर्जी से नहीं, 10 विधेयकों को रोके रखना अवैध

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि से नाखुशी जताते हुए कहा कि उनके द्वारा 10 विधेयकों को राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रखना संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन है। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की पीठ ने कहा कि संविधान के आर्टिकल 200 के तहत राज्यपाल के पास कोई विवेकाधिकार नहीं होता और उन्हें मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर अनिवार्य रूप से कार्रवाई करनी होती है।

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

संविधान का अनुच्छेद 200 विधेयकों को स्वीकृति से संबंधित है। पीठ ने कहा कि राज्यपाल सहमति को रोक नहीं सकते और 'पूर्ण वीटो' या 'आंशिक वीटो' (पॉकेट वीटो) की अवधारणा नहीं अपना सकते। उसने कहा कि राज्यपाल एक ही रास्ता अपनाने के लिए बाध्य होते हैं- विधेयकों को स्वीकृति देना, स्वीकृति रोकना और राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रखना। पीठ ने कहा कि वह विधेयक को दूसरी बार राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए जाने के बाद उसे राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रखे जाने के पक्ष में नहीं है। पीठ ने यह भी कहा कि राज्यपाल को दूसरी बार उनके समक्ष प्रस्तुत किए गए विधेयकों को मंजूरी देनी चाहिए, अपवाद केवल तब रहेगा जब दूसरे चरण में भेजा गया विधेयक पहले से अलग है।

राज्यपाल रवि के खिलाफ दायर याचिका

सुप्रीम कोर्ट ने माना कि तमिलनाडु के राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए 10 विधेयकों को सुरक्षित रखना कानूनन अवैध और त्रुटिपूर्ण है और रद्द किया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल को राज्य विधानमंडल की सहायता और सलाह से काम करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी तमिलनाडु सरकार द्वारा विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों पर मंजूरी न देने के लिए राज्य के राज्यपाल आरएन रवि के खिलाफ दायर याचिका पर फैसला सुना रहा था।

भूमिका को किया रेखांकित

राज्यपाल की भूमिका को रेखांकित करते हुए पीठ ने कहा, 'संघर्ष के समय में, उन्हें आम सहमति से मुद्दों को सुलझाना चाहिए, अपनी बुद्धिमत्ता और विवेक से राज्य मशीनरी के कामकाज को सुचारू रूप से चलाना चाहिए और उसे ठप नहीं होने देना चाहिए। उन्हें उत्प्रेरक होना चाहिए, अवरोधक नहीं। उनके सभी कार्यों को उस उच्च संवैधानिक पद की गरिमा को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए जिस पर वे आसीन हैं।"

हम सरकार के पद को कमतर नहीं आंक रहे

पीठ ने कहा, 'हम किसी भी तरह से सरकार के पद को कमतर नहीं आंक रहे हैं। हम बस इतना ही कहना चाहते हैं कि राज्यपाल को संसदीय लोकतंत्र की स्थापित परंपराओं के प्रति उचित सम्मान के साथ काम करना चाहिए, विधायिका के माध्यम से व्यक्त की जा रही लोगों की इच्छा का सम्मान करना चाहिए और साथ ही लोगों के प्रति उत्तरदायी निर्वाचित सरकार का भी सम्मान करना चाहिए। उन्हें एक मित्र, दार्शनिक और दयालु व्यक्ति की अपनी भूमिका को राजनीतिक अनुभव के आधार पर नहीं बल्कि संवैधानिक शपथ की पवित्रता के आधार पर निष्पक्षता से निभाना चाहिए।

नेशनल कॉन्फ्रेंस और भाजपा विधायकों में हाथापाई, नए वक्फ कानून को लेकर भिड़े

जम्मू-कश्मीर विधानसभा में हंगामा

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में मंगलवार को लगातार दूसरे दिन नए वक्फ कानून पर हंगामा हुआ। नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के विधायकों ने सदन में बिल पर चर्चा की मांग करते हुए नारेबाजी की। इस दौरान एनसी और भाजपा विधायकों के बीच धक्का-मुक्की भी हुई। मंगलवार को सदन में हंगामे और विवाद के कारण प्रश्नकाल की कार्यवाही रोकनी पड़ी। पीडीपी विधायक वाहिद परा को स्पीकर के आदेश पर मार्शलों द्वारा बाहर निकाले जाने के बाद स्थिति और अधिक तनावपूर्ण हो गई। सदन में आम आदमी पार्टी के विधायक महाराज मलिक और भाजपा विधायक विक्रम रंधावा द्वारा मुफ्ती पर की गई टिप्पणी के बाद पीडीपी प्रवक्ता मोहित और आप विधायक महाराज मलिक के बीच तीखी बहस हुई। इस बहस ने सदन का माहौल गर्म कर दिया।बाद में, स्पीकर ने सदन को आधे घंटे के लिए स्थगित कर दिया ताकि सब कुछ शांत हो जाए।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड

बिजली बंद की सूचना

सक्ती संभाग के अंतर्गत समस्त सम्मानीय विद्युत उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि 132 के.व्ही. उपकेन्द्र रायगढ मे मेन बस में कार्य हेतु निम्नानुसार विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी। सम्मानीय उपभोक्ताओं को होने वाली असुविधा के लिये खेद प्रकट करते हुए सहयोग की अपेक्षा है।

क्र.	दिनांक/ दिन	समय	प्रभावित 132/33 के. व्ही. उपकेन्द्र का नाम	प्रभावित होने वाले क्षेत्र
1	09.05.2025 बुधवार	सुबह 09.00 बजे से शाम 04.00 तक।	132/33 के.व्ही उपकेन्द्र रामभांठा	33/11 के.व्ही. फीडर कोटमी से संबंद्ध 33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र कोटमी से निकलने वाले समस्त 11 के.व्ही. फीडरों से संबंधित समस्त ग्राम।
2	09.05.2025 बुधवार	सुबह 09.00 बजे से शाम 04.00 तक।	132/33 के.व्ही उपकेन्द्र रामभांठा	33/11 के.व्ही. फीडर तुलसीडीह से संबंद्ध 33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र तुलसीडीह से निकलने वाले समस्त 11 के.व्ही. फीडरों से संबंधित समस्त ग्राम।
3	09.05.2025 बुधवार	सुबह 09.00 बजे से शाम 04.00 तक।	132/33 के.व्ही उपकेन्द्र रामभांठा	33/11 के.व्ही. फीडर धुरकोट से संबंद्ध 33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र धुरकोट से निकलने वाले समस्त 11 के.व्ही. फीडरों से संबंधित समस्त ग्राम।

नोट:- आवश्यकतानुसार तिथि एवं समयावधि घटायी या बढ़ायी जा सकती है।
"ऊर्जा की बचत करें" "विद्युत देयकों का भुगतान कर असुविधा से बचें"
संवाद- कार्यपालन यंत्री (सं./सं.) संभाग, छ.स्टे.पॉ.डि.कं.लिमि.: सक्ती

कार्यालय, नगर पंचायत, छुरीकला (छत्तीसगढ़)

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

क्र. 758,759,760/न.पं./ तक. शा./2025 दिनांक 08.04.2025
एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु (Online) आनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रु. लाख में)	निविदा डालने की अंतिम तिथि
1	कार्यालय भवन के उपर प्रथम तल का निर्माण कार्य (द्वितीय निविदा) (अधोसंचरना मद)	21.88	24.04.2025 (T.No. 166788)
2	वार्ड क्र. 15 तिरगुन तालाब शिव घाट में रिटैनिंगवाल निर्माण कार्य (प्रथम निविदा) (अधोसंचरना मद)	28.02	29.04.2025 (T.No. 166796)
3	वार्ड क्र.06 में पठान मोहल्ला में, वार्ड क्र. 06 में महेश देवांगन घर से तीजराम घर तक वार्ड क्र.06 राम साहू घर से मदन लाल सारथी घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य (प्रथम निविदा) (अधोसंचरना मद)	20.01	29.04.2025 (T.No. 166798)

उपरोक्त कार्यों की निविदा की जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है, साथ ही शासन के वेब साईट www.uad.cg.gov.in पर भी देखी जा सकती है।

।। स्वच्छ भारत निर्माण में योगदान दें।।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत छुरीकला

पूर्व क्रिकेटर केदार जाधव ने थामा भाजपा का कमल

मुंबई। पूर्व भारतीय क्रिकेटर केदार जाधव क्रिकेट के बाद राजनीति में अपनी पारी शुरू करने वाले हैं। मंगलवार को मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में केदार जाधव भाजपा में सामिल हो गए। मुंबई में महाराष्ट्र के मंत्री और राज्य भाजपा प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हुए।

नहीं रही मास्टर शेफ की बा, फोर्ब्स में बनाई थी जगह

मुंबई। 'मास्टरशेफ इंडिया' सीजन 7 की एक्स कंटेस्टेंट के निधन की दुखद खबर आई है। उर्मिला जमनादास अशर जिन्हें गुज्जू बेन के नाम से भी जाना जाता था, अब वो हमारे बीच नहीं रहीं। 7 अप्रैल को बा ने अंतिम सांस ली थी।

राशिफल

मेष धैर्यशीलता बनाये रखने के प्रयास करें। शैक्षिक कार्यों के लिए विदेश जाने के योग बन रहे हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भाइयों का साथ मिलेगा।

वृष वाणी में मधुरता तो रहेगी, परन्तु मन परेशान रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिल सकते हैं।

मिथुन शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा, परन्तु लाभ में कुछ कमी आ सकती है। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

कर्क आत्मविश्वास में कमी आएगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। कुटुम्ब के बुजुर्ग के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा।

सिंह सम्पत्ति में वृद्धि के योग बन रहे हैं। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा। किसी नए कारोबार की शुरुआत करेंगे।

कन्या किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। सुस्वादु खानपान में रुचि बढ़ सकती है। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा। संबंधों में निकटता आएगी।

तुला मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। धैर्यशीलता बनाये रखने के प्रयास करें। शैक्षिक एवं शोधादि कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

वृश्चिक शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परन्तु कार्यक्षेत्र में वृद्धि हो सकती है।

धनु आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। सन्तान के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्च बढ़ेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें।

मकर व्यर्थ के क्रोध से बचें। लाभ में वृद्धि होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है। सुखद समाचार मिलेगा।

कुंभ मन अशान्त हो सकता है। संयत रहें। आलस्य भी बढ़ सकता है। सन्तान सुख में वृद्धि होगी। कारोबार में कुछ सुधार होगा।

मीन परिवार की समस्या परेशान कर सकती है। आय में कमी एवं खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है। नौकरी में कोई नई जिम्मेदारी मिल सकती है।

हम ईरान से कर रहे हैं सीधी बातचीत : ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोमवार को घोषणा की कि अमेरिका और ईरान ने तेहरान के परमाणु कार्यक्रम पर सीधी चर्चा शुरू कर दी है। ट्रंप ने ये जानकारी ईरान द्वारा सीधी बातचीत में शामिल होने से इनकार करने के बाद दी है। ट्रंप ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ वार्ता के दौरान ओवल ऑफिस में मीडिया से कहा, 'हम ईरान के साथ सीधी बातचीत कर रहे हैं और ये बातचीत शुरू हो गई है। यह शनिवार को होगी। हमारी एक बहुत बड़ी बैठक है और हम देखेंगे कि क्या हो सकता है।' ट्रंप ने कहा कि ईरान के साथ शनिवार को होने वाली वार्ता बहुत उच्च स्तर पर होगी। मुझे उम्मीद है। हर कोई इस बात पर सहमत होगा कि समझौता करना बेहतर होगा।

CHHATTISGARH STATE POWER DISTRIBUTION COMPANY LIMITED
OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER (CIRCLE) BILASPUR

S.E (B.C)/Tender Notice/2248 Bilaspur, dated 28.03.2025

NOTICE INVITING E-TENDER

Online bids are invited through CSPDCL e-bidding system (SAP SRM) from Food & Drugs Administration contractors registered in the Government of Chhattisgarh,Bilaspur 3rd Floor new composit Building Bilaspur for following work.

Tender No /Rfx no.	Particulars of works	Tender amount (in Rs.)	Tender fee (online)	EMD fee (Offline) submitted	Time/Due date of submission
SE (B.C) 215/ 28.03.2025 Rfx.8100042390	Tender for Local purchase of Emergent & Essential medicine at CSPDCL Dispensary Bilaspur	1800000.00	2000/-	18000.00	03.00 pm on 21.04.2025

1. Bids will be opened at 3.30 pm and onward on the same day of submission. The details available in web site www.cspc.co.in→ CSPDCL→ may be downloaded and should be submitted 2. CSPDCL reserves the right to reject or cancel any or all the bids without assigning any reason there of. 3.Corrigendum, if any will be published only on website www.cspc.co.in. → CSPDCL→ O&M and notice board. 4.For e-bidding CSPDCL Helpline no. 0771-2576672 (EITC CSPDCL) (tenders.cspdcl@cspc.co.in) published.

SAVE ELECTRICITY

SUPERINTENDING ENGINEER (CIRCLE)
CSPDCL BILASPUR

बिक्री सूचना

ई-नीलामी

दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016 के तहत परिसंपत्तियों की बिक्री
ई-नीलामी की तिथि और समय: 08 मई, 2025 दोपहर 3.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक
(प्रत्येक 5 मिनट के असीमित विस्तार के साथ)
ईएमडी जमा करने की अंतिम तिथि: 06 मई, 2025 दोपहर 3 बजे तक

वंदना विद्युत लिमिटेड के स्वामित्व वाली परिसंपत्तियों और संपत्तियों की बिक्री-परिसमापन में ("सीडी") जो माननीय राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण, कटक बेंच द्वारा 16 दिसंबर, 2019 के आदेश के अनुसार नियुक्त परिसमापक द्वारा गठित परिसमापन एस्टेट का हिस्सा है। बिक्री ई-नीलामी मंच यानी बैंकनेट जिसकी वेबसाइट है: **https://baanknet.com/** के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी द्वारा की जाएगी।

संपत्ति का विवरण	ब्लॉक	संरक्षित मूल्य (रू.)	प्रारंभिक बयाना राशि (रू.)	वृद्धि मूल्य (रू.)
सीडी के गैर-वर्तमान निवेश यानी **वंदना ग्लोबल लिमिटेड के कुल 23,06,156 शेयर**	ए	5,25,92,186	52,59,218	8,00,000
सीडी के गैर-वर्तमान निवेश यानी **गंगा शिपिंग लॉजिस्टिक्स एंड सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड के कुल 3,00,000 शेयर**	बी	2,41,09,052	24,10,905	1,00,000
सीडी के गैर-वर्तमान निवेश यानी **निरसन इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के कुल 3,50,000 शेयर**	सी	2,22,27,399	22,22,739	1,00,000
सीडी के गैर-वर्तमान निवेश यानी **वी जी रियल एस्टेट्स प्राइवेट लिमिटेड के कुल 2,09,600 शेयर**	डी	1,72,28,574	17,22,857	1,00,000
सीडी के गैर-वर्तमान निवेश यानी **कलावती इस्पात एंड पावर प्राइवेट लिमिटेड के कुल 37,400 शेयर**	ई	34,02,276	3,40,227	1,00,000

नियम और शर्तें-

1. ई-नीलामी "जहां है, जैसा है" और "जो भी है" के आधार पर तथा "बिना किसी सहायता के" स्वीकृत सेवा प्रदाता सेवा प्रदाता अर्थात बैंकनेट के माध्यम से आयोजित की जाएगी।
2. यह स्पष्ट किया जाता है कि यह आमंत्रण संभावित बोलीदाताओं को आमंत्रित करने के लिए है तथा बिक्री को प्रभावी बनाने के लिए परिसमापक या कंपनी की ओर से किसी भी प्रकार का बाध्यकारी दायित्व नहीं बनाता है। परिसमापक प्रक्रिया को रद्द करने या संशोधित करने और/या किसी भी इच्छुक पक्ष/संभावित निवेशक/बोलीदाता को बिना कोई कारण बताए और बिना किसी दायित्व के स्वीकार न करने और/या अयोग्य घोषित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

सही/-
संजय गुप्ता
परिसमापक, वंदना विद्युत लिमिटेड मामले में
IBBI (पंजीकरण संख्या IBBI/IPA-001/IP-P00117/2017-2018/10252)
पता: AAA हाउस, 64, ओखला एस्टेट मार्ग, मोदी मिल्स के पीछे, ओखला फेज III, ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नई दिल्ली, दिल्ली 110020
संपर्क व्यक्ति: मो. वसीम (+91-8800865284)

दिनांक : 09.04.2025
स्थान : नई दिल्ली

शब्द पहेली - 5831

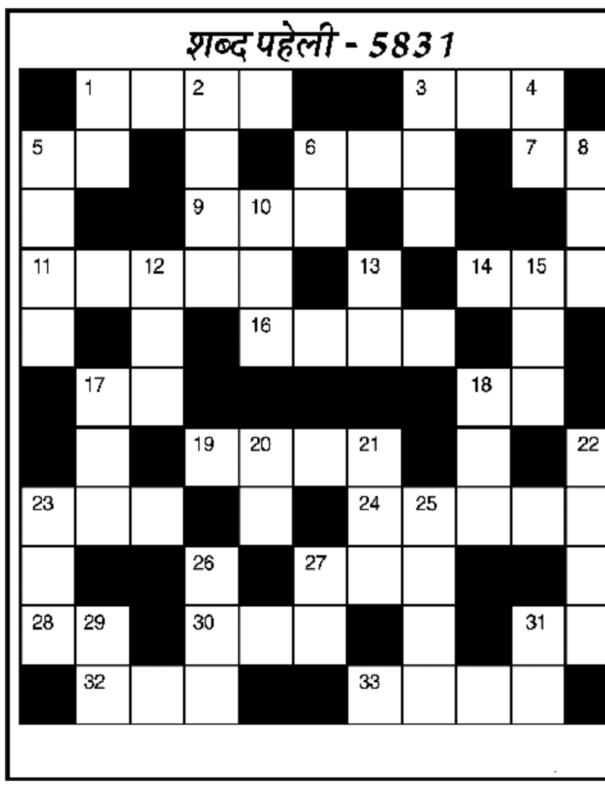

बाएँ से दाए
1. मूर्ख, बुद्धिहीन-4
3. रुई की फसल-3
5. वंश, खानदान-2
6. आह, पीड़ा भरी ध्वनि-3
7. जी, इच्छा, चित्त-2
9. पहनना-3
11. दास, नौकर, सेवक-5
14. अग्नि, आग-3
16. चयनित, स्वीकृत-4
17. जाति, संप्रदाय-2
18. उस समय-2
19. आदत, व्यवहार-4
23. माला का मोती-3
24. लालन-पालन-5
27. पूर्णिमा-3
28. वश, अधीन-2
30. खबर देने वाला-3
31. खदान, माइन-2
32. आश्रय, पनाह-3
33. संपत्ति-4

ऊपर से नीचे
1. घोड़े के पांव में लगने वाला लोहे का टुकड़ा-2
2. धारा के बीच में, अधर में-2,2
3. आफत, आपदा-3
4. एक समान-2
5. गृहपति, चांसलर-4
6. दाना-2
8. प्रतिकृति, प्रतिरूप-3
10. रोकर धनराशि-3
12. प्रेम, आसक्ति-3
13. नीर, जल-2
15. भाग्य, तकदीर-3
17. जंबुल, जांब-3
18. टेंशन, परेशानी-3
20. काया, बदन-2
21. उष्णता-3
22. नाश होने योग्य-4
23. साम्राज्ञी, रानी-3
25. रमण करने योग्य-4
26. अदा, चोंचला-3
27. पूड़ी, गोलगप्पा-2
29. पिता की बहन-2
31. उर्वरक, गाय के गोबर से बना पदार्थ जो खेत में डाला जाता है-2

शब्द पहेली- 5830 का हल

सूडोकु नवताल - 5841

★★★★☆ मध्यम

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

MANGAL SENACHA, BANGALORE

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल - 5840 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

प्रथम पृष्ठ का शेष

मुआवजा डकारने का...

लेकर झांकी तक किया गया। टोकरो के मामले में जिन पक्षकारों के खाते का विभाजन हुआ है, उन्होंने अपने शपथपूर्वक कथन में स्वीकार किया है कि खाते के बंटवारे के लिए कभी कोर्ट में पेश ही नहीं हुए।

कांग्रेस की जिला...

नफरत की खाई में धकेल रही है। इसलिए, एक बार फिर कांग्रेस पार्टी धार्मिक ध्रुवीकरण के उन्माद से लड़ते हुए 'लौह पुरुष' सरदार पटेल का दृढ़ता से अनुकरण करने को लेकर दृढ़ संकल्पित है।

अमृतधारा जलप्रपात...

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन एवं एसईसीएल बैकुंठपुर और मनेंद्रगढ़ की रेस्क्यू टीम तत्काल मौके पर पहुंची। स्थानीय युवकों के काफी प्रयास के बाद दोनों के शवों को गहरे पानी से बाहर निकाला गया। इनमें अमृतधारा के स्थानीय युवक राधेश्याम, प्रताप कुमार, मनीशंकर, श्यामवरन शामिल रहे, जिन्होंने काफी मशक्कत कर दोनों अधिकारियों के शव को बाहर निकाला। शवों को पोस्टमार्टम के लिए मनेन्द्रगढ़ अस्पताल भेजा गया है।

'नो प्रॉफिट नो लॉस'...

छात्रों से की गई अतिरिक्त वसूली की राशि 7 फीसदी ब्याज के सात वापस करने का निर्देश फीस विनियामक समिति ने दिए हैं। अतिरिक्त शुल्क की वापसी के लिए ऑनलाइन पोर्टल बनाने पर विचार किया जा रहा है। जानकार सूत्रों का कहना है कि एफआरसी केवल ट्यूशन फीस का निर्धारण करती है। कालेज में हास्टल, मेस और ट्रांसपोर्टिंग का चार्ज अपनी सुविधाओं के आधार पर कालेज प्रबंधन ना फायदा ना नुकसान के आधार पर करता है। कालेजों को केवल निर्धारित फीस की डिटेल अपने प्रास्पेक्टस में उल्लेख कर फीस विनियामक समिति के पास जमा कराना होता है।

अब केवल चेहरा...

और उससे जुड़ी सेवाएं हासिल कर सकेंगे। केंद्रीय मंत्री ने बिहार के छह जिलों जिनमें अररिया, सहरसा, औरंगाबाद, बांका, पूर्वी चंपारण और गोपालगंज शामिल हैं, में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) के तहत पूर्ण रूप से अधिसूचित करने की भी घोषणा की। इससे लगभग 24,000 अतिरिक्त लोग ईएसआईसी की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के दायरे में आ सकेंगे। मीडियाकर्मियों से बात करते हुए, मांडविया ने कहा कि कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने चेहरे के प्रमाणीकरण का उपयोग करके यूएएन आवंटन और उसे एक्टिवेट करने के लिए उन्नत डिजिटल सेवाएं शुरू की हैं। करोड़ों ईपीएफओ सदस्यों को संपर्क रहित, सुरक्षित और पूरी तरह से डिजिटल सेवाओं का लाभ मिलेगा। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि अब कर्मचारी उमंग मोबाइल एप के जरिए आधार फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी (एफएटी) का उपयोग करके सीधे यूएएन बना सकते हैं। नियोक्ता भी किसी नए कर्मचारी के आधार फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी (एफएटी) का उपयोग करके यूएएन बनाने के लिए उमंग एप का उपयोग कर सकता है।

पेंशन में देरी...

भुगतान के लिए क्षतिपूर्ति करना है। सर्कुलर के अनुसार, 'पेंशन भुगतान करने वाले बैंकों को पेंशन/बकाया राशि जमा करने में देरी के लिए पेंशनभोगी को भुगतान की नियत तिथि के बाद 8 प्रतिशत प्रति साल की निश्चित ब्याज दर पर मुआवजा देना चाहिए।' निर्देश में आगे स्पष्ट किया गया है कि यह मुआवजा पेंशनभोगियों से किसी भी दावे की आवश्यकता के बिना ऑटोमेटिक रूप से प्रदान किया जाएगा। तय पेमेंट डेट के बाद होने वाली किसी भी देरी के लिए मुआवजा 8फीसदी प्रति साल की निश्चित ब्याज दर पर प्रदान किया जाना चाहिए। ब्याज उसी दिन पेंशनभोगी के खाते में जमा किया जाएगा जिस दिन बैंक संशोधित पेंशन या पेंशन बकाया राशि संसाधित करेगा, जो 1 अक्टूबर, 2008 से सभी लेट भुगतानों पर लागू होगा। सर्कुलर में बैंकों द्वारा पेंशन डिस्बर्समेंट के लिए एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है, ताकि संबंधित पेंशन भुगतान अधिकारियों से पेंशन आदेशों की कॉपीज तुरंत प्राप्त करके देरी से बचा जा सके।

35 सालों में...

खड़ा किया था। इस दौरान आगजनी और मारपीट की घटना को अंजाम दिया था। सन 1991 में खैरागढ़ के बकरकट्टा में नक्सलियों ने एक की हत्या की। 1999 में पांच ग्रामीणों की हत्या करने के साथ ही नक्सलियों ने पूरे जिले में लाल आतंक का नेटवर्क तैयार किया। इधर छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद नक्सल वारदातों में काफी इजाफा देखने में मिला। सन 2000 से 2022 तक नक्सलियों ने पूरे जिले में काफी घटनाओं को अंजाम दिया। जिसमें 117 आम नागरिकों की नक्सल हत्या हुई। मुखबिरी का आरोप लगाकर 25 ग्रामीणों की बेदम पिटाई की गई। पुलिस और फोर्स के साथ चल रही जंग में एसपी वीके चौबे सहित 43 जवान शहीद हुए। वहीं मुठभेड़ में 43 जवान घायल हुए। केंद्रीय बल के दो जवानों को भी इस जंग में शहीद होना पड़ा। पुलिस के अलावा शासकीय विभागों के चार कर्मी, पांच गोपनीय सैनिक की नक्सल हत्या की गई। वहीं 42 नक्सलियों ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण भी किया। पुलिस और केंद्रीय फोर्स द्वारा संयुक्त रूप से चलाए गए आपरेशन में 37 नक्सलियों को मार गिराया गया। **2009 रहा सबसे खौफनाक-** पिछले 35 सालों में राजनांदगांव जिले के लिए सबसे खौफनाक साल 2009 का रहा। इस साल न केवल जिले के एसपी वीके चौबे शहीद हुए, बल्कि जिले के इतिहास में नक्सलियों द्वारा सर्वाधिक 45 लोगों को मौत के घाट उतारा गया। इसमें आम नागरिकों के साथ-साथ पुलिस जवान भी शामिल रहे। इसी साल मदनवाड़ा के समीप कोरकट्टी कांड की भी घटना हुई थी।

'डॉक्टर' की डिग्री में...

बिलासपुर अपोलो हॉस्पिटल के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। लोक अभियोजक सतीश कपसिया ने कहा, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट स्नेहा सिंह ने हमारे अनुरोध पर कैम को पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। पुलिस ने दमोह जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एम के जैन की शिकायत पर फर्जी मेडिकल डिग्री रखने वाले आरोपी के खिलाफ रविवार आधी रात को जालसाजी और धोखाधड़ी के आरोपों में प्राथमिकी दर्ज की थी। उन्होंने कहा, मूल शिकायत (एनएचआरसी को सौंपी गई) में मिशन अस्पताल में सात मरीजों की मौत का जिक्र है। एक अन्य शिकायत सीएमएचओ जैन द्वारा दायर डॉक्टर की डिग्री के सत्यापन से संबंधित है। सोमवंशी ने बताया कि प्राथमिक जांच में पता चला कि डॉक्टर का सर्टिफिकेट फर्जी है। उन्होंने कहा कि प्राथमिकी जालसाजी और धोखाधड़ी के आरोपों में दर्ज की गई है और उसी के आधार पर गिरफ्तारी की गई है।

ट्रंप ने चीन पर...

फीसदी अतिरिक्त टैरिफ लगाएगा। बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बीते सप्ताह 'मुक्ति दिवस' का ऐलान करते हुए चीन समेत दुनिया की कई अर्थव्यवस्थाओं पर पारस्परिक शुल्क लगाने की घोषणा की थी। ट्रंप ने चीन पर अतिरिक्त 34 प्रतिशत टैरिफ लगाया था। इसके बाद अमेरिका में चीनी उत्पादों पर कुल शुल्क 54 फीसदी पहुंच गया था। वहीं चीन ने भी अमेरिका पर जवाबी टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया। चीन ने अमेरिका से आयातित उत्पादों पर 34 फीसदी शुल्क लगाने की घोषणा की तो ट्रंप का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। बीते सोमवार को ट्रंप ने चीन को अल्टीमेटम देते हुए इस कदम को वापस लेने की चेतावनी दी। हालांकि चीन ने कहा कि वह अमेरिका के आगे नहीं झुकेगा। अब अमेरिका के इस फैसले से ट्रेड वॉर और गहरा गया है। **नहीं झुकेगा चीन-** चीन ने कहा है कि वह किसी भी हाल में पीछे नहीं हटेगा। मंगलवार को चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, व्यापार और टैरिफ युद्धों में कोई विजेता नहीं होता है और संरक्षणवाद कहीं नहीं ले जाता है। हम परेशानी पैदा नहीं करते हैं लेकिन जब हमारे सामने कोई परेशानी आएगी तो हम पीछे नहीं हटेंगे। डराना, धमकाना और ब्लैकमेल करना चीन के साथ बातचीत करने का सही तरीका नहीं है।

इन्होंने किया...

सदस्य), वर्ष 2023 से सक्रिय, घोषित ईनाम 8 लाख रुपए, सोनू ताती (28), गंगालूर वर्ष-2008 से सक्रिय, घोषित ईनाम 5 लाख रुपए, महेश पुनेम (20), गंगालूर, घोषित ईनाम 5 लाख रुपए, बुधराम ताती उर्फ सुद्दू उर्फ गट्टा (32), गंगालूर सावनार, कोरचोली मिलिशिया कंपनी डिप्टी कमाण्डर, सन्नू हेमला (26), गंगालूर, वर्ष-2010 से सक्रिय, सोमलू मड़कम उर्फ पटेल (60), बीजापुर, वर्ष-1999 से सक्रिय, हुंगा कुहराम उर्फ वड्डे उर्फ ओयाम (38), तर्रेम, वर्ष-2000 से सक्रिय, देवा माड़वी उर्फ बुड़ता (47), तर्रेम वर्ष-2006 से सक्रिय, हुंगा कट्टम उर्फ बैदी (37), उसूर वर्ष-2014 से सक्रिय, पोज्जा बाड़से उर्फ जोगा (35), उसूर वर्ष-2005 से सक्रिय, नंदा मड़कम (36), तर्रेम, वर्ष-2003 से सक्रिय, हुंगी कुंजाम (19), उसूर वर्ष-2017 से सक्रिय, हड़मा पोड़ियम उर्फ उरपा (30), उसूर वर्ष-2009 से सक्रिय, विज्जो कुंजाम (38), गंगालूर वर्ष-2020 से सक्रिय, नरसी कट्टम (48), उसूर वर्ष-2006 से सक्रिय, मोती सोढ़ी (37), गंगालूर वर्ष-2007 से सक्रिय, विज्जा उईका (22), बासागुड़ा वर्ष-2016 से सक्रिय, कोसा पोड़ियम उर्फ लमडी कोसा (35), उसूर वर्ष-2007 से सक्रिय, विजय मड़कम ऊर्फ विज्जा (35), गंगालूर वर्ष 2013 से सक्रिय, बोदी कारम उर्फ करवे (42), मिरतुर वर्ष 2007 से सक्रिय एवं कोसा मड़कम (38), गंगालूर वर्ष-2004 से सक्रिय रहे।

10 को शपथ नहीं,...

बृजमोहन अग्रवाल के सांसद बनने के बाद से एक पद रिक्त हुआ था। इस लिहाज से 2 मंत्री पद रिक्त माने जाते रहे हैं, लेकिन हरियाणा फार्मूला लागू होने के बाद एक अतिरिक्त मंत्री पद राज्य में बढ़ने की संभावना बताई जा रही है। वहीं मंत्रिमंडल विस्तार के साथ संसदीय सचिवों की नियुक्ति किए जाने की भी चर्चा है। उल्लेखनीय है कि साय सरकार का कार्यकाल लगभग डेढ़ साल पूरा होने को हैं। प्रदेश में नगरीय निकाय से लेकर पंचायत चुनाव भी हो चुके हैं। ऐसे में संगठन के द्वारा अब सरकार में रिक्त मंत्री और अन्य पदों के लिए नाम सुझाए गए हैं। आने वाले दिनों में आधा दर्जन निगम मंडलों में भी नियुक्ति की सूची जारी हो सकती है।

सूखत की चिंता में...

होगा, उसकी कीमत सोसाइटी को चुकानी पड़ेगी ये तय है। रायपुर के अभनपुर और आरंग क्षेत्र की कई सोसाइटियों में सूखत का मिलान होने के बाद धान में आई कमी की वसूली के लिए दबाव पड़ना अब शुरू हो गया है। सोसाइटियों से कहा गया है कि वे सूखे धान की मात्रा या उसके बराबर की राशि जमा कराएं, वरना उनके खिलाफ एफआईआर करवाई जाएगी। इसी कार्रवाई के डर से सोसाइटी वाले अब हाईकोर्ट की दौड़ लगा रहे हैं। **कई और सोसाइटियों का हाल ऐसा ही-** रायपुर जिले में ही अभनपुर और आरंग क्षेत्र की कई सोसाइटियों में धान की सूखत का मिलान हो चुका है। जिन सोसाइटियों में भी धान की मात्रा में कमी आई है उनसे कम हुआ धान या उसके बदले रकम चुकाने के लिए दबाव डाला जा रहा है, इसके साथ ही एफआईआर करने की चेतावनी भी है। सूत्रों के अनुसार आरंग, अभनपुर क्षेत्र की सोसाइटियों के प्रबंधक हाईकोर्ट जाने की तैयारी में हैं। **सोसाइटी से होगी वसूली- मार्कफेड-** मार्कफेड के एमडी रमेश शर्मा ने इस संबंध में कहा है कि सोसाइटियों से धान शार्टेज की वसूली होगी। इन सोसाइटियों को धान की सुरक्षा और रखरखाव के लिए 5 रुपए प्रति क्विंटल राशि दी जाती है। इसलिए सूखत की जिम्मेदारी भी उनकी है।

एक मामले से सामने...

कराए या 7 लाख रुपए। अगर ये नहीं किया गया तो सोसाइटी प्रबंधक के खिलाफ धान की अफरा-तफरी के आरोप में एफआईआर की जाएगी। अब सोसाइटी प्रबंधक कार्रवाई से बचने हाईकोर्ट की शरण में जाने की तैयारी में है।

बच्चों के सभी ऑपरेशन किये जाते हैं।
अष्टविनायक हॉस्पिटल
आयुष्मान कार्ड/राशन कार्ड द्वारा ऑपरेशन संभव
बच्चों के विशेषज्ञ सर्जन
डॉ. रितेश रंजन
(MCH, पीडियाट्रिक सर्जन)
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.) 7987225800, 9301744425

दर-दाँत (गम पेंट)
बायो-डेंट गम पेंट, मुंह के छाले, दांत दर्द और जलन में लाभकारी यह आर्युवेदिक दवा है, यह हर्बल दवा 100 प्रतिशत सुरक्षित है
HMS देखकर खरीदें
94060-21769
हर्बल लेप
शिव मस्सानाशक
शिव मस्सानाशक को 12-15 घटों तक लगाकर रखेंगे तो यह मस्से को शीघ्र हटा देगा। जब तक मस्सा न हट जाए, रोज 1-2 बार लगाना है। यदि लगाने के बाद किसी कारणवश लेप पुछ जाए तो पुनः लगा दें।
HMS
शिव मस्सा नाशक

epaper- www.haribhoomi.com
हरिभूमि
Classified
Email- hbclassified375@gmail.com
आवश्यकता आपकी सुविधा हमारी
Contact For Advertisement Booking
Ring Road No.-2, Gourav Path, Bilaspur
Mo.- 9826782100, 9754263022

आवश्यकता है

आवश्यकता है- ईडन कोर्ट सोसाइटी के लिए सिक्युरिटी गार्ड की आवश्यकता है सैलरी 9000 रहने की सुविधा उपलब्ध है सम्पर्क करें- लोयला स्कूल के पास, लिंगियाडीह बिलासपुर 93037 80984, 9399753983 (37356)

आवश्यकता है- लॉज में काम करने के लिए कर्मचारी/लड़को की आवश्यकता है वेतन 10000 ग्रामीणों को रहना खाना निःशुल्क सम्पर्क करें- अग्रवाल लॉज गोल बाजार बिलासपुर 9406390898, 9827940898 (37350)

आवश्यकता है- बिजली दुकान में दुकान का काम करने के लिए लड़कों की आवश्यकता है सम्पर्क करें- कुसुम इलेक्ट्रीकल्स मेन रोड तेलीपारा बिलासपुर 98279 61245, 9827107799 (37349)

आवश्यकता है- (1) फील्ड वर्क के लिए मैनेजर (2) आफिस वर्क के लिए मैनेजर की आवश्यकता है सम्पर्क करें- ग्रीन पार्क जरहाभाठा बिलासपुर 8078280001, 8120879158 (37357)

आवश्यकता है- फुटवियर शॉप हेतु पैकिंग या सेल्समैन शिप का काम करने हेतु सम्पर्क करें- 12 से 3 बायोडाटा सहित सम्पर्क- मनोहर बूट हाउस, पुराना बस स्टैण्ड बिलासपुर 7746024415 (37347)

आवश्यकता है- थोक दवाई दुकान में माल निकालने, जमाने, ट्रान्सपोर्ट में चढ़ाने हेतु लड़के, लड़कियों की आवश्यकता है सम्पर्क करें- प्रीमीयर एजेन्सी/ सन ट्रेडर्स मेडिकल काम्पलेक्स तेलीपारा बिलासपुर (37352)

आवश्यकता है- बिलासपुर की सर्वश्रेष्ठ रियल स्टेट कम्पनी में अनुभवी टेलीकॉलर(रियल स्टेट कार्य के लिए) की आवश्यकता है Qualification-Graduation, Salary-10000+ Incentive, Good Communication Skill सम्पर्क करें- 963002 3355, 9407601993 (37355)

आवश्यकता है-घर में खाना बनाने हेतु लेडीज/गर्ल्स कुक की आवश्यकता है सम्पर्क करें-70005 49477 (37324)

आवश्यकता है- बिजली कांट्रेक्टर ऑफिस में कार्य करने हेतु मैनेजर-1 पद एवं सुपरवाइजर-1 पद की तत्काल आवश्यकता है। सम्पर्क करें- 9754363800,79873 82110 (37353)

आवश्यकता है-घड़ी दुकान में सामान्य कार्य करने हेतु लड़के की आवश्यकता है। वेतन 7000 से 10000 सम्पर्क करें- अशोक वॉच & इले. चौधरी भवन, लक्ष्मी टाकीज के सामने, बिलासपुर 99938 52700 (37339)

आवश्यकता है- Puniform texmart R-3 महामाया विहार वेयर हाउस रोड, बिलासपुर यूनिफॉर्म सिलाई हेतु 5 दर्जी (टेलर) 3 हेल्पर, 3 इस्त्री करने वाले कर्मचारी चाहिए वेतन योग्यता अनुसार। सम्पर्क करें- 9406351753, 87118 87744 (37344)

आवश्यकता है-बिलासपुर व्यापार विहार मोहदा मोड़ बोदरी चकरभाठा हेतु सुरक्षागार्ड की आवश्यकता है वेतन 9000 से 10000 ड्यूटी-12घंटे आवास मुफ्त तीन फोटो आधार कार्ड सहित तत्काल सम्पर्क करें- 7773895202, 8109314893 (37345)

आवश्यकता है-दुकान कार्य हेतु (महिला/ पुरुष 12वीं पास) डिलिवरी ब्वाय (लोकल एरिया जानकार), कम्प्यूटर ऑपरेटर, सेल्समैन, असिस्टेंट एकाउंटेंट (दवा दुकान में कार्य का अनुभवी) बायोडाटा सहित मिलें- जगत एजेन्सी तेलीपारा बिलासपुर (37340)

आवश्यकता है-बिलासपुर में रेस्टोरेंट में काम करने के लिए किचन हेल्पर और सप्लायर की आवश्यकता है। सम्पर्क करें- 9757573444 (37343)

आवश्यकता है- टेन्ट हाउस में काम करने के लिए कम्प्यूटर जानकार सुपरवाइजर की आवश्यकता है सम्पर्क करें- 8001975775, 85169 86000 (37321)

आवश्यकता है- OMI कम्पनी में लड़के एवं लड़कियों की आवश्यकता है योग्यता 10वीं से ग्रेजुएट उम्र 18 से 28, आय 8500 से 18000+ रहना खाना। पता- न्यू बस स्टैण्ड बिलासपुर 8818877406, 96444 33021 (37351)

आवश्यकता है-सांई पेट क्लीनिक एवं पेट शाप-2 में कार्य हेतु गर्ल्स स्टाफ की आवश्यकता है। सम्पर्क करें- कुर्मी भवन आरके पैट्रोल पम्प के सामने अशोक नगर सरकंडा डॉ.आर.एस. सिकरवार 93298 06201 (37342)

आवश्यकता है-चकरभाठा स्थित आर्टिफिशियल ज्वैलरी शोरूम में काम करने हेतु सेल्सगर्ल की आवश्यकता है कार्य समय सुबह 10 से रात 9 बजे तक केवल चकरभाठा निवासी ही सम्पर्क करें- 9770507206(37337)

आवश्यकता है-रियल एस्टेट कम्पनी में मार्केटिंग/केनोपी हेतु अनुभवी लड़के/ लड़कियों एवं ड्राइवर और चौकीदार की आवश्यकता है सैलरी योग्यता अनुसार सम्पर्क करें-शाम 7बजे से 9 बजे तक 93006 71120 (37336)

आवश्यकता है-रिसेप्शनिस्ट -2(Male) ड्राइवर-2 (Male) Stuart 2 पद की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार रहने, खाने की सुविधा सम्पर्क करें-होटल डाउन टाउन राजकिशोर नगर बिलासपुर 9926200022, 96442 00022, 9144555000 (37333)

आवश्यकता है-थोक दवा दुकान में बाहर लाइन पर जाकर आर्डर बुकिंग/ पेमेंट कलेक्शन हेतु अनुभवी सेल्समैन चाहिए। बाइक अनिवार्य। वेतन 15000 मिलें- नितिन मेडिकल एजेन्सी 34, मेडिकल काम्पलेक्स, तेलीपारा, बिलासपुर 98274 97711 (37326)

आवश्यकता है-हॉटेल में हाउस कीपिंग स्टाफ के लिए आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें- हॉटेल शिवनेरी CMD कॉलेज ग्राउंड के सामने (गली में) लिंक रोड, बिलासपुर 7776864202 (37316)

Requirment-Teacher for Coaching Krishna Academy Physics, Chemistry, Biology, Maths and Commerce (9th to 12th) CBSE and CG Board, Receptionist, Parking boy Contact-Indu Chawk Jarha bhatha Bilaspur 7999848993, 9993300903 (37314)

आवश्यकता है-दवा दुकान में मार्केटिंग फील्ड कार्य करने के लिए अनुभवी लड़कों एवं लड़कियों की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें- शारदा मेडिकल एजेन्सी मेडिकल काम्प्लेक्स तेलीपारा रोड बिलासपुर 7879472295 (37335)

आवश्यकता है- उमा मार्ट में कार्य करने हेतु लड़के/ लड़कियों की एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर बीजी सॉफ्टवेयर का जानकार, वेतन योग्यता अनुसार पता- उसलापुर रोड 36 मॉल के पास मंगला बिलासपुर 6264951541 (3419)

आवश्यकता है- आर्टिफिशियल ज्वेलरी शॉप हेतु लड़के, लड़कियों की आवश्यकता है। सम्पर्क करें- सुबह 11बजे के बाद संध्या ज्वेलरी & कॉस्मेटिक श्रीराम क्लॉथ मार्केट पानी टंकी के पास अग्रसेन चौक बिलासपुर, 9691083080, 79874 23847 (37322)

आवश्यकता है-होम एप्लाएंसेस कम्पनी में काम करने हेतु फील्ड ऑफिसर, ट्रेनी मैनेजर महिला, पुरुष, लड़के, लड़कियों की आवश्यकता है रहना+ गाड़ी फ्री+ सम्पर्क करें- समर्थ होम एप्लाएंस कम्पनी 8329538775 7772914637 (37317)

आवश्यकता है-तत्काल भर्ती सिक्युरिटी गार्ड-50, सिक्युरिटी सुपरवाइजर (बेसिक कंप्यूटर नॉलेज) 10 फील्ड ऑफिसर-5, सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ हेतु चाहिए। कम्प्यूटर आपरेटर-2, कम्प्यूटर बेसिक नॉलेज। वेतन 10000 से 15000 सम्पर्क- बुधवारी बाजार बिलासपुर 8461881111 (37288)

आवश्यकता है-नौकरी ही नौकरी तहसील स्तरीय भर्ती पद संख्या 975 वन रक्षक फील्ड ऑफिसर माली सिपाही ड्राइवर वेतन 27500+52400 तक आवेदन करने के लिए आधार कार्ड मार्क शीट पैन कार्ड व्हाट्स एप करे 74609 94309 (781)

आवश्यकता है-मैट्रिमोनी में कार्य हेतु 18 से 30वर्ष की युवतियों, महिलाओं की आवश्यकता है सैलरी 5000 से 20000 कमाने का अवसर सम्पर्क करें- पत्रकार कॉलोनी आरबी हॉस्पीटल के पास बिलासपुर 6268331784, 7987392821 (3420)

आवश्यकता है-टी शर्ट होलसेलर को मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव, कंप्यूटर ऑपरेटर ऑफिस बॉय चाहिए। आकर्षक वेतन सम्पर्क करें- दोपहर 2-5, PARC-16-17 सुराना मार्केट, सिटी सेंटर माल के पीछे, पंडरी, रायपुर (197)

आवश्यकता है-ऑफिस कार्य हेतु लड़कियो, महिलाओं की आवश्यकता है उम्र 18 से 30वर्ष तक ऑफिस टाइम 10 से 5:30 सम्पर्क करें- अथर्व हॉस्पिटल के पास नूतन चौक बिलासपुर 9201508721 (3422)

आवश्यकता है-छड़, सीमेंट दुकान कार्य करने के लिए मेहनती लड़कों वेतन 12000 एवं ट्रैक्टर चलाने हेतु ड्राइवर वेतन 10000 की आवश्यकता है सम्पर्क करें- ममता ट्रेडर्स मोपका बिलासपुर 93003 07926, 9993443207 (37256)

आवश्यकता है- सर्जिकल ऑफिस में कार्य हेतु लड़को की आवश्यकता है स्वयं का बाइक अनिवार्य, समान छोड़ने लाने हेतु, योग्यता 10वीं, 12वी, टैली डेटा एंट्री ऑपरेटर की भी जरूरत है सम्पर्क करें- श्री विनायक सेल्स, अज्ञेय नगर बिलासपुर 9893367787 (3426)

आवश्यकता है-ऑफिस में टैलीकॉलिंग हेतु लड़कियों, महिलाओं की आवश्यकता है उम्र 18 से 28वर्ष सैलरी 5000+ कमीशन सम्पर्क करें- मंगला चौक बिलासपुर 8085106943 (3423)

आवश्यकता है-ऑफिस कार्य करने हेतु युवती की आवश्यकता है समय सुबह 10 से 5.30 तक वेतन 6000 सम्पर्क करें-अरुण आइसक्रीम के पास कुदुदंड बिलासपुर 9303002278 (3424)

आवश्यकता है-ऑफिस कार्य हेतु कम्प्यूटर ऑपरेटर युवती/ महिला (वेतन 15000) एवं 6वर्ष के बच्चों को फुल टाइम पढ़ाने हेतु महिला टीचर की अतिशीघ्र आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क 7587258374 (37331)

आवश्यकता है- Fraud call से सावधान Airtel 5G कंपनी मे घरबैठे पार्ट/ फुलटाईम (SMS जॉब) करके लड़के लड़कियों गृहणियां कमाए (15000-45000)/- महिना लैपटॉप + मोबाइल मुफ्त Call/ WhatsApp/ SMS करें - 8521185983 (777)

आवश्यकता है- जनरल दुकान मे कार्य करने हेतु अनुभवी लड़को एवं लड़कियों और अच्छे सेल्समेन की भी जरूरत है पेमेट भरपुर दिया जायेगा। सुनील प्लास्टिक तेलीपारा अजीत होटल के सामने बिलासपुर (37292)

आवश्यकता है- ऑफिस कार्य हेतु लड़कियों एवं महिलाओं की आवश्यकता है, उम्र 18 से 35वर्ष, वेतन 5000+ कमीशन+ बोनस सम्पर्क करें-साई मन्दिर के पास, नेहरू नगर बिलासपुर 7805932585 (3428)

आवश्यकता है- सिक्योरिटी एजेंसी में इच्छुक गार्ड जो दिन में ड्यूटी कर सके आकर्षक वेतन कार्य स्थल होंडा शोरूम महाराणा प्रताप चौक बिलासपुर, सम्पर्क करें- 9981630084, 94255 34940 (3427)

आवश्यकता है-टेलीकॉलर ऑफिस में काम करने के लिए लड़को के जरूरत है ऑल इंडिया प्लेसमेंट शुरुआती वेतन 10000 रहना फ्री 20वर्ष से 28वर्ष वाले सम्पर्क करे- 7310671995, 63876 30593 (313)

Advertisement Booking Time 10.30 AM to 4.00 PM

आवश्यकता है-नटराज पेन पेंसिल रबड़ के माध्यम से घर बैठे पैकिंग नौकरी की सुविधा भारत के हर क्षेत्र में दी जा रही है अगर आपको नौकरी की जरूरत है तो सम्पर्क करें- 9202613238 (749)

बेचना है

बेचना है-हर्ष-फिनिक्स सिटी पूर्ण विकसित कालोनी वार्ड-49, बीआर यादव नगर, बिजौर बिलासपुर विभिन्न साइज लेआउट प्लाट, 3BHK डुप्लेक्स बंगलो, 2/3BHK अफॉर्डेबल फ्लैट, T&C रेरा रजिस्टर्ड। सम्पर्क- एसके बिल्डर्स & डेवलपर्स 88394 55596, 7697644444 (36177)

बेचना है- रायपुर रोड, हाईकोर्ट के सामने, मेन रोड से 50 मीटर अन्दर न्यू एयरपोर्ट रोड, बोदरी में 50×200= 10000 वर्गफीट व्यवसायिक डायवर्सन, बाउन्ड्रीवाल सहित प्लाट बेचना है। सम्पर्क करें- 9300310774 (37354)

बेचना है-सर्वसुविधायुक्त कृषि भूमि फार्म हाउस 6 एकड़ आदिवासी भूमि ग्राम भैसाझार रतनपुर में स्थित है। जिसमें 3BHK मकान 3 सर्वेंट क्वाटर बड़ा गैरेज पोल्ट्री फार्म, डेयरी 2 बोर ट्रांसफार्मर सौर ऊर्जा फेसिंग 6 CCTV कैमरा, रोटोवेटर फलदार बगीचा बेचना है सम्पर्क करें- 94255 31324, 7067522601 (37338)

बेचना है-तुर्काडीह बड़ी कोनी में नेशनल हाईवे पर 78 डिसमिल जमीन बेचना है मो. 8878820110 (37346)

किराया

किराया-3BHK सांई होम्स विद्या नगर शिव मंदिर के पास बिलासपुर में फ्लैट नम्बर 306 किराये से देना है सम्पर्क करें- 9424144236, 93035 25100 (37332)

किराया-मोपका मेन रोड में शारदा रेसीडेंसी के बगल में स्थित 2BHK, 7 फ्लैट एवं गुरुनानक चौक जेजे हॉस्पिटल के बगल में सांई निवास कॉम्प्लेक्स के फर्स्ट फ्लोर में 5 दुकान किराए से देना है सम्पर्क करें- 9301186703, 82530 10291 (37320)

Medicare Specialists
छोटा लिंग निराश क्यों? जोश जगा दे धूम मचा दे।
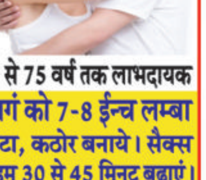
18 से 75 वर्ष तक लाभदायक
लिगं को 7-8 ईन्च लम्बा मोटा, कठोर बनाये। सैक्स टाइम 30 से 45 मिनट बढाएं।
नसों की कमजोरी नामर्दी, धातु का पतलापन, शुगर, बी.पी. में भी जबरदस्त लाभदायक।
घर बैठे मंगवाये।
ब्रेस्ट टोनर क्रिम
लाभ नही तो पैसे वापिस।
09083218330
गुप्त रोगो का सफल ईलाज
गुप्त रोग, नामर्दी
लिंग में छोटापन।
शीघ्र पतन
पेशाब से धातू जाना।
लिंग में ढीलापन,
शुक्राणु की कमी।
शुगर से आयी हुई सेक्स में कमी।
जड़ीबुटी द्वारा खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त करें।
चर्मरोग व वात रोग का ईलाज किया जाता है।
निःसंतान दम्पत्ति आज ही मिलें
आज ही संपर्क करें
स्टेशन रोड, सीमरन होटल के सामने रायपुर, छ.ग.
9826038170

सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेवें व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेन देन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रबंधक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक, कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापन दाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

हरिभूमि में लघु विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क करें

- जिला कार्यालय कोरबा:- बी.ब्लॉक, कॉमर्शियल कामलेक्स, ट्रांसपोर्ट नगर, जिला कोरबा (छ.ग.) मो. 9644018888, 7581808267
- जिला कार्यालय मुंगेली:- थाना के सामने गली, गोल बाजार, जिला- मुंगेली (छ.ग.) मो. 9303508230
- शिवम एड एजेंसी & पब्लिसिटी:- मो. 9993567380, 8770837744
- एड प्रयास:- मो. 9826701269, 9926003943
- श्यामनानी एडवरटाईजर्स:- मो. 9827168452, 9300625174
- रिद्धीसिद्धी एडवरटाइजर्स & पब्लिसिटी:- मो. 9826129386, 8319503386
- जे.जे. एडवरटाइजर्स:- मो. 9300659628
- भार्गव एडवरटाइजर्स:- मो. 9827167997
- श्रीसिद्धि विनायक एडवरटाइजर्स:- मो. 9826705603
- एम.जी.आर. एडवरटाइजर्स:- मो. 9827180896, 9131155033
- रौनक पब्लिसिटी:- मो. 9300328290, 9981658490
- श्री श्याम पब्लिसिटी:- मो. 9425540759
- अमित पब्लिकेशन:- मो. 9826304304, 9827124304
- विप्रा विज्ञापन सेवा:- मो. 9302462506
- माधवास & कम्पनी:- मो. 9977185123, 9893115084
- बालाजी एडवरटाइजर्स:- मो. 9827466133, 9907047586

प्रियांश ने रचा इतिहास, 39 गेंदों में ठोका शतक, पंजाब ने चेन्नई को 12 रन से हराया

एजेंसी ▸▸ चंडीगढ़

इंडियन प्रीमियर लीग के 22वें मैच में पंजाब किंग्स ने चेन्नई सुपरकिंग्स को 18 रन से हराते हुए इस सीजन में अपनी तीसरी जीत दर्ज की। पंजाब किंग्स के स्टार प्रियांश आर्य ने विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए मात्र 39 गेंद में अपना पहला शतक जड़कर इतिहास रच दिया। इस बीच उन्होंने 7 चौके और 9 बड़े छक्के लगाए। आईपीएल में किसी भारतीय बल्लेबाज का दूसरा सबसे तेज शतक है।

इस तरह रहा रोचक मुकाबला

पहले खेलते हुए पंजाब किंग्स ने 83 रन के स्कोर तक अपने 5 विकेट खो दिए। लगातार गिर रहे विकेटों के बावजूद प्रियांश आर्य ने 39 गेंदों में 103 रन बनाए। उनके अलावा शशांक सिंह ने अर्धशतक (52*) लगाते हुए टीम को बड़े स्कोर तक पहुंचाया। जवाब में सीएसके को रचिन रविंद्र (36) और कॉनवे (69) ने सधी हुई शुरुआत दिलाई। इसके बाद शिवम दुबे (42) और महेंद्र सिंह धोनी (27) ने भी संघर्ष दिखाया।

आर्य ने बनाए ये रिकॉर्ड्स

आर्य अब आईपीएल के इतिहास में शतक लगाने वाले सिर्फ 8वें अनकैप्ड खिलाड़ी बने हैं। उनसे पहले शॉन मार्श (2008), मनीष पांडे (2009), पॉल वाल्थाटी (2009), देवदत्त पडिक्कल (2021), रजत पाटीदार (2022), यशस्वी जायसवाल (2022) और प्रभसिमरन सिंह (2023) ऐसा कर चुके थे। वह पावरप्ले ओवर्स के दौरान ही 50+ स्कोर बनाने वाले सिर्फ दूसरे अनकैप्ड खिलाड़ी बने हैं। उनसे पहले सनी सोहेल (2011) ऐसा कारनामा कर चुके हैं।

यूसुफ पठान का रिकॉर्ड टूटने से बचा

आर्य अब आईपीएल के इतिहास में दूसरा सबसे तेज शतक लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज बने हैं। भारतीय खिलाड़ियों में उनसे आगे इस सूची में सिर्फ युसूफ पठान हैं, जिन्होंने 37 गेंदों में शतक लगाया था। विश्व के बल्लेबाजों की बात करें तो आईपीएल में आर्य से तेज शतक सिर्फ क्रिस गेल (30 गेंद) और डेविड मिलर (38 गेंद) ने लगाए हैं। ट्रेविस हेड ने भी 39 ही गेंदों पर अपना शतक लगाया हुआ है।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
दिल्ली	3	3	0	6
गुजरात	4	3	1	6
बेंगलुरु	4	3	1	6
लखनऊ	5	3	2	6
पंजाब	3	2	1	4
कोलकाता	5	2	3	4
राजस्थान	4	2	2	4
मुंबई	5	1	4	2
चेन्नई	4	1	3	2
हैदराबाद	5	1	4	2

ऑरेंज कैप | पर्पल कैप

निकोलस पूरन — 288 रन — लखनऊ

नूर अहमद — 10 विकेट — चेन्नई

खबर संक्षेप

राष्ट्रीय हॉकी चैम्पियनशिप लिए अतिरिक्त स्टाफ

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने उत्तर प्रदेश के झांसी में चल रही सीनियर पुरूष राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में खिलाड़ियों को चिकित्सा और रिकवरी में सहयोग के लिये अतिरिक्त सहयोगी स्टाफ भेजा है

जिसमें एक फिजियो और एक मालिशिया शामिल है। इस साल चैम्पियनशिप में भारतीय पुरूष हॉकी टीम के 31 खिलाड़ी भी भाग ले रहे हैं जिनमें हार्दिक सिंह, जरमनप्रीत सिंह, कृशन बी पाठक, अभिषेक, अमित रोहिदास, सुमित, गुरजंत सिंह और संजय शामिल हैं।

सेंडा विश्व कप में भारतीय वुशु खिलाड़ियों का अच्छा प्रदर्शन

जियांगयिन। भारतीय वुशु खिलाड़ी मुकेश चौधरी ने 75 किग्रा में स्वर्ण पदक जीता जबकि पांच अन्य खिलाड़ी यहां 10वें सेंडा विश्व कप के फाइनल में पहुंच गए। छह सदस्यीय भारतीय दल ने अब तक टूर्नामेंट में दुनिया के कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के खिलाफ उल्लेखनीय कौशल और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया है। भारत के अभियान का अब तक का मुख्य आकर्षण चौधरी रहे हैं जिन्होंने फाइनल में अपने फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्वी पर प्रभावशाली जीत दर्ज करके 75 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया। कुशाल ने 48 किग्रा वर्ग में यमन के अपने प्रतिद्वंद्वी को हराकर फाइनल में जगह बनाकर भारत की जीत का सिलसिला जारी रखा। रवि पांचाल ने 65 किग्रा वर्ग में कजाखस्तान के प्रतिद्वंद्वी को हराकर फाइनल में जगह बनाई जबकि 52 किग्रा वर्ग में अनुज कुमार और 85 किग्रा वर्ग में रजत चरक भी स्वर्ण पदक के लिए चुनौती पेश करेंगे।

चैंपियन्स ट्रॉफी से पीसीबी को अनुमान से अधिक कमाई

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने दावा किया है कि आईसीसी चैंपियन्स ट्रॉफी की मेजबानी से उसे तीन अरब रुपये की कमाई हुई है जो उसके दो अरब रुपये के लक्ष्य से अधिक है। पीसीबी ने यह दावा नेशनल असेंबली को लिखित जवाब में किया है जिसने पिछले दो वर्षों में राष्ट्रीय टीम के लगातार खराब प्रदर्शन पर चिंता व्यक्त की है। पीसीबी ने अपने लिखित जवाब में यह भी पुष्टि की है कि कराची, लाहौर और रावलपिंडी में स्टेडियमों के नवीनीकरण पर कुल 18 अरब रुपये खर्च किए जा

आईपीएल : निकोलस पूरन ने खेली 87 रन की नाबाद पारी

आखिरी ओवर तक रोमांचक रहा मुकाबला लखनऊ ने कोलकाता को 4 रन से हराया

एजेंसी ▸▸ कोलकाता

इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के 21वें मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स ने कोलकाता नाइट राइडर्स को 4 रन से हराते हुए अपनी तीसरी जीत दर्ज की। ईडन गार्डन स्टेडियम में हुए मैच में एलएसजी ने पहले खेलते हुए 238/3 का स्कोर बनाया था। जवाब में विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए केकेआरकी टीम 234/7 का स्कोर ही बना सकी।

इस तरह से रहा रोचक मुकाबला

एलएसजी से एडेन मार्करम (47) और मिचेल मार्श (81) की सलामी जोड़ी ने 99 रन की साझेदारी की। अच्छी शुरुआत मिलने के बाद बल्लेबाजी के लिए आए निकोलस पूरन ने 36 गेंदों में नाबाद 87 रन बनाए और टीम को विशाल स्कोर तक पहुंचाया। जवाब में क्विंटन डिकॉक (15) के जल्दी आउट होने के बाद केकेआर से सुनील नरेन (30), वेंकटेश अय्यर (45) और अजिंक्य रहाणे (61) ने संघर्ष किया, लेकिन जीत नहीं दिला सके।

निकोलस पूरन
प्लेयर ऑफ द मैच
87* रन
36 गेंद
07 चौके
08 छक्के

पूरन ने पूरे किए 2000 रन

पूरन ने इस पारी के दौरान खास उपलब्धि हासिल की है। अपनी पारी का 30वां रन बनाते ही उनके आईपीएल करियर में 2,000 रन भी पूरे हो गए। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले 52वें बल्लेबाज बने हैं। उन्होंने सर्वाधिक रनों के मामले में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज जेपी डुमिनी को पीछे छोड़ दिया है, जिन्होंने इस लीग में 83 मैचों में 2,029 रन बनाए थे।

केकेआर ने पावरप्ले में बनाए 90 रन

केकेआर ने शुरुआती 6 ओवर के बाद 90/1 का स्कोर बनाया था। यह पावरप्ले ओवर्स में केकेआर का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। बता दें कि केकेआर का शुरुआती 6 ओवर्स में सबसे बड़ा स्कोर 105/0 (बनाम आरसीबी 2017) रहा है।

रहाणे के टी-20 में 7000 रन

रहाणे ने अपने टी-20 करियर में 7,000 रन पूरे किए। उनके अब टी-20 करियर में 276 मैचों की 259 पारियों में 7,036 रन बना दिए हैं। इस बीच उन्होंने 105* रन के सर्वोच्च स्कोर के साथ 2 शतक और 50 अर्धशतक लगाए हैं। बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए रहाणे ने 35 गेंदों में 61 रन की पारी खेली। यह उनके आईपीएल करियर का 33वां अर्धशतक लगाया। यह उनके बेमिसाल टी-20 करियर का 50वां अर्धशतक रहा।

स्कोर बोर्ड

लखनऊ सुपर जाइंट्स	रन	गेंद	4	6
एडेन मार्क्रम बो राणा	47	28	4	2
मिचेल मार्श का सिंह बो रसेल	81	48	6	5
निकोलस पूरन नाबाद	87	36	7	8
अब्दुल समद बो राणा	06	04	1	0
डेविड मिलर नाबाद	04	04	0	0

अतिरिक्त : 13 रन, योग : 20 ओवर में 3 विकेट पर 238 रन
गेंदबाजी: अरोड़ा 4-0-35-0, जॉनसन 3-0-46-0, चक्रवर्ती 4-0-31-0, राणा 4-0-51-2, नारायण 3-0-38-0, रसेल 2-0-32-1

कोलकाता नाइट राइडर्स	रन	गेंद	4	6
डिकॉक पगबाधा बो आकाशदीप	15	9	0	2
नारायण का मार्क्रम बो राठी	30	13	4	2
अजिंक्य रहाणे का पूरन बो ठाकुर	61	35	8	2
वअय्यर का मार्क्रम बो आकाशदीप	45	29	6	1
रमनदीप का मार्क्रम बो बिश्नोई	01	02	0	0
अंगकृष रघुवंशी का पंत बो आवेश	05	04	1	0
आंद्रे रसेल का मिलर बो ठाकुर	07	04	0	1
रिंकू सिंह नाबाद	38	15	6	2
हर्षित राणा नाबाद	10	09	2	0

अतिरिक्त : 20 रन, योग : 20 ओवर, 234/7 रन
गेंदबाजी : आकाशदीप 4-0-55-2, ठाकुर 4-0-52-2
आवेश 4-0-45-1, राठी 4-0-33-1, बिश्नोई 4-0-47-1

अलग खबर

रोहित शर्मा के नाम पर हो सकता है वानखेड़े स्टेडियम का स्टैंड

मुंबई। बीते सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग 2025 में मुंबई इंडियंस को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ मैच में शिकस्त मिली। फिलहाल इस लीग में हिस्सा ले रहे एमआई के दिग्गज बल्लेबाज रोहित शर्मा से जुड़ी अच्छी खबर है। दरअसल, मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन रोहित के नाम पर वानखेड़े स्टेडियम के एक स्टैंड का नाम रख सकती है।

15 अप्रैल को हो सकता है अंतिम फैसला : बता दे कि एमसीए को अपने क्लब सदस्यों से वानखेड़े स्टेडियम के बाहर स्टैंड या विभिन्न स्थानों के नाम, भारतीय खिलाड़ियों के नाम पर रखने के अनुरोध और प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। एमसीए के अध्यक्ष अजिंक्य नाइक ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया, सदस्यों की ओर से सुझाव आए हैं और ऐसी खबर है कि 15 अप्रैल को इस पर निर्णय लिया जाएगा।

आईपीएल में स्थापित होने में चार साल लग गए : पडिक्कल

मुंबई। युवा बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल का मानना है कि लगातार फ्रेंचाइजी टीम बदलना बेहद चुनौती पूर्ण होता है जिसके कारण उन्हें इंडियन प्रीमियर लीग में एक क्रिकेटर के रूप में स्थापित होने में तीन से चार साल लग गए। पडिक्कल ने आईपीएल में अपने करियर की शुरुआत 2020 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की तरफ से की थी। आरसीबी में दो साल बिताने के बाद वह अगले दो साल तक राजस्थान रॉयल्स से जुड़े रहे। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज को 2024 में लखनऊ सुपर जॉइंट्स ने अपनी टीम से जोड़ा था लेकिन मौजूदा सत्र में उनकी अब आरसीबी में वापसी हुई है। पडिक्कल ने सोमवार को आरसीबी की मुंबई इंडियंस के खिलाफ 12 रन से जीत के बाद संवाददाताओं से कहा आईपीएल में एक क्रिकेटर के रूप में मैं जो हूं उसे पाने में मुझे तीन-चार साल लग गए। यह इतना आसान नहीं है।

रजत की जीत की खुशी गायब 12 लाख का लगा जुर्माना

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के 20वें मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने मुंबई इंडियंस को हराते हुए 10 साल बाद वानखेड़े स्टेडियम पर जीत दर्ज की। इस यादगार जीत के बाद कप्तान रजत पाटीदार को

बड़ी सजा मिली है। दरअसल, मैच में आरसीबी के धीमी ओवर गति बनाए रखने को लेकर पाटीदार पर 12 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। पाटीदार ने भी पराग ने भी इस गलती को मानकर जुर्माना स्वीकार कर लिया है। आईपीएल की ओर से मामले में कहा गया है, आरसीबी पूरे मैच में धीमी ओवर गति से चल रही थी। यह न्यूनतम ओवर गति से संबंधित आईपीएल आचार संहिता के अनुच्छेद 2.2 का उल्लंघन है। चूंकि, आचार संहिता के तहत यह आरसीबी का पहला अपराध था। इसलिए कप्तान पाटीदार पर न्यूनतम 12 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। बता दें कि मैच के बाद पाटीदार ने मैच रैफरी के सामने धीमी ओवर गति का अपराध स्वीकार कर लिया था।

कई नए चेहरे शामिल

तीन देशों की ट्राई सीरीज 27 से महिला क्रिकेट टीम का ऐलान

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

भारतीय महिला क्रिकेट टीम के चयनकर्ताओं ने आगामी सीनियर महिला त्रि-राष्ट्र श्रृंखला के लिए भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। यह टूर्नामेंट 27 अप्रैल से श्रीलंका के कोलंबो स्थित आर. प्रेमदासा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में शुरू होगा। इस टूर्नामेंट में भारत, श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका की टीमें हिस्सा लेंगी।

इस ट्राई सीरीज में भारतीय टीम की अगुवाई हरमनप्रीत कौर करेंगी। उपकप्तान के रूप में स्मृति मंधाना को चुना गया है। भारतीय टीम के अन्य महत्वपूर्ण खिलाड़ी जैसे जेमिमाह रोड्रिग्स, हरलीन देओल और रिचा घोष भी इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगी। भारतीय टीम में कुछ नए चेहरों को भी मौका मिला है। कश्मीरी गौतम, एन श्री चारानी और शुचि उपाध्याय को पहली बार राष्ट्रीय टीम में जगह मिली है।

ट्राई सीरीज के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम

हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (वीसी), प्रतिका रावल, हरलीन देओल, जेमिमा रोड्रिग्स, ऋचा घोष (विकेटकीपर), यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), दीप्ति शर्मा, अमनजोत कौर, काशवी गौतम, स्नेह राणा, अरुंधति रेड्डी, तेजल हसब्निस, श्री चरणी, शुचि उपाध्याय।

भारतीय टीम में शामिल हुए ये नए चेहरे

कश्मीरी गौतम ने 2025 महिला प्रीमियर लीग में 9 मैचों में 11 विकेट लेकर सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली भारतीय गेंदबाज बनीं। एन श्री चारानी ने दिल्ली कैपिटल्स के लिए में दो मैच खेले, जिनमें उन्होंने 4 विकेट चटकाए। शुचि उपाध्याय ने पिछले साल दिसंबर में सीनियर महिला एक दिवसीय ट्रॉफी में 18 विकेट लेकर अपनी टीम मध्य प्रदेश को टूर्नामेंट जितवाया। शुचि को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी भी चुना गया था।

शेफाली वर्मा को नहीं मिली जगह

भारतीय टीम में कुछ अहम खिलाड़ी चोटिल हैं, जिनकी वजह से उन्हें टीम में शामिल नहीं किया गया है। रेणुका सिंह ठाकुर और तितास साधु दोनों ही चोटिल हैं। उनकी जगह किसी अन्य खिलाड़ी को मौका दिया गया है। इसके अलावा, शेफाली वर्मा को एक बार फिर से टीम में जगह नहीं मिली है, जबकि उनके नाम पर लगातार चर्चा हो रही थी।

भारत का ऑस्ट्रेलिया दौरा अनूठा हर मुकाबला, अलग मैदान पर

नई दिल्ली। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम इस साल अक्टूबर-नवंबर में ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेगी, जहां वह तीन वनडे और पांच टी-20 मैचों की श्रृंखला खेलेगी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया द्वारा जारी किए गए कार्यक्रम के अनुसार, यह सीरीज विशेष रूप से अनूठी होगी क्योंकि भारत के सभी आठ मुकाबले आठ अलग-अलग स्थानों पर खेले जाएंगे। भारतीय टीम के ऑस्ट्रेलिया दौरे को लेकर क्रिकेट प्रेमियों में भारी उत्साह है. यह देखना दिलचस्प होगा कि टीम इंडिया इस चुनौतीपूर्ण श्रृंखला में किस तरह प्रदर्शन करती है.

दो यूनियन टेरिटरीज व 6 राज्यों होंगे मुकाबले

ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट बोर्ड ने 2025-26 सीजन के अपने अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम की घोषणा की है, जिसमें पहली बार सभी छह राज्यों और दो यूनियन टेरिटरीज में अंतरराष्ट्रीय मैच आयोजित किए जाएंगे। इससे क्रिकेट प्रशंसकों को पूरे देश में अपने पसंदीदा सितारों को देखने का अवसर मिलेगा। भारत के अलावा, दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड की टीमें भी इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेंगी।

मार्च में खूब चला श्रेयस का बल्ला, बने आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ

एजेंसी ▸▸ दुबई

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने मार्च 2025 महीने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम के श्रेयस अय्यर को नामित किया। उनके साथ-साथ न्यूजीलैंड के जैकब डफी और रचिन रविंद्र भी इस पुरस्कार के लिए नामांकित हुए हैं। बता दें कि इन तीनों खिलाड़ियों ने मार्च 2025 में अच्छा प्रदर्शन किया था। दूसरी तरफ महिलाओं में अमेरिका की चेतना प्रसाद, ऑस्ट्रेलिया की एनाबेल सदरलैंड और जॉर्जिया वॉल को नामित किया गया है।

चैंपियंस ट्रॉफी में जमकर बटोरे थे रन

अय्यर चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय बल्लेबाजी क्रम में संकटमोचक बनकर उभरे थे। उन्होंने फाइनल में 62 गेंदों पर 48 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेली थी। अय्यर इस संस्करण में दूसरे सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे थे। उन्होंने 5 पारियों में 48.60 की औसत और 79.41 की स्ट्राइक रेट के साथ 243 रन बनाए थे।

मार्च में ऐसा रहा रचिन रविंद्र का प्रदर्शन

रचिन रवींद्र ने अपनी ऑलराउंड क्षमता के साथ न्यूजीलैंड को चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल में पहुंचाया था। मार्च में उन्होंने 3 वनडे मैचों में 50.33 की शानदार औसत और 106.33 की प्रभावशाली स्ट्राइक रेट से 151 रन बनाए थे। दूसरी तरह गेंदबाजी में उन्होंने 4.66 की इकॉनमी रेट के साथ 3 विकेट भी चटकाए थे। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सेमीफाइनल में उन्होंने 108 रन की पारी खेली थी।

ऐसा रहा कीवी गेंदबाज डफी का प्रदर्शन

न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज जैकब डफी ने मार्च में शानदार प्रदर्शन किया था। पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू मैदान पर 5 मैचों की टी-20 सीरीज में 8.38 की औसत और 6.17 की इकॉनमी रेट से 13 विकेट लिए थे। उनके अविश्वसनीय प्रदर्शन के चलते ही न्यूजीलैंड ने 4-1 से सीरीज अपने नाम की थी। डफी ने मार्च के अंत में पाकिस्तान के खिलाफ पहले वनडे में भी 2 विकेट लिए थे।

तीन माह होंगे रोमांचक मुकाबले, शेड्यूल हुआ जारी

टीम इंडिया का द.अफ्रीका और वेस्टइंडीज से मुकाबला

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम का अक्टूबर से दिसंबर का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। इस दौरान भारतीय टीम वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका के साथ सीरीज खेलेगी। पहली बार किसी टेस्ट मैच की मेजबानी गुवाहाटी के बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम को दी गई है। इस मैदान पर भारत और साउथ अफ्रीका के बीच मुकाबला खेला जाएगा। वहीं, पहली बार कोई मेन्स इंटरनेशनल मैच मोहाली के मल्लापुर स्टेडियम में खेला जाएगा।

जून में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज

जून में भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलेगी। उसके बाद अक्टूबर से दिसंबर का यह समय भारतीय क्रिकेट टीम के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहेगा क्योंकि

इन तीन महीनों में भारतीय टीम पूरी तरह से इन दोनों सीरीज में व्यस्त रहेगी। इससे पहले भारतीय टीम को और भी कई महत्वपूर्ण सीरीज खेलनी हैं।

तीन माह के भीतर होगी दोनों से भिड़ंत

भारतीय टीम के वेस्टइंडीज के खिलाफ मुकाबले अक्टूबर में होंगे। भारत और वेस्टइंडीज के बीच दो टेस्ट मैच खेले जाएंगे। वहीं साउथ अफ्रीका के साथ भारतीय टीम दो टेस्ट, तीन वनडे और पांच टी20 मैच खेलेगी। साउथ अफ्रीका के खिलाफ मुकाबले नवंबर-दिसंबर में खेले जाएंगे।

वेस्ट इंडीज के खिलाफ शेड्यूल

वेस्टइंडीज के खिलाफ अहमदाबाद और कोलकाता में मुकाबले खेले जाएंगे। पहला मुकाबला 2 अक्टूबर से अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होगा, जबकि दूसरा मुकाबला 10 अक्टूबर से कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में खेला जाएगा।

द.अफ्रीका के खिलाफ शेड्यूल

पहला टेस्ट	नई दिल्ली 14 से 18 नवंबर
दूसरा टेस्ट	गुवाहाटी 22 से 26 नवंबर
पहला वनडे	रांची 30 नवंबर
दूसरा वनडे	रायपुर 3 दिसंबर
तीसरा वनडे	वाइजैग 6 दिसंबर
पहला टी-20	कटक 9 दिसंबर
दूसरा टी-20	मुल्लांपुर 11 दिसंबर
तीसरा टी-20	धर्मशाला 14 दिसंबर
चौथा टी-20	लखनऊ 17 दिसंबर
पांचवां टी-20	अहमदाबाद 19 दिसंबर

रात के अंधेरे में ही क्यों दिखते हैं भूत-प्रेत? यहां जानिए इसके पीछे का रहस्य...

नई दिल्ली। दुनियाभर में भूत-प्रेत को लेकर लोगों की अलग-अलग राय है। दुनिया में कई लोग भूत-प्रेत पर विश्वास करते हैं। दुनिया की कई संस्कृतियों में आत्माओं और मृत्यु के साथ ही दूसरी दुनिया में रहने वाले लोगों पर भरोसा किया जाता है। बहुत लोगों को भूतों की कहानियां पढ़ना और भूतों पर बनी फिल्में देखना पसंद है। इनसे जुड़ी कई कहानियां पढ़ने और सुनने को भी मिलती हैं।

कई हैरान करने वाली होती हैं घटनाएं

कुछ लोगों का मानना है कि जिस प्रकार भगवान होते हैं, उसी तरह भूत-प्रेत भी होते हैं। भूत-प्रेत के होने के कोई सबूत नहीं हैं, लेकिन इनके होने के दावा किए जाते हैं। इस तरह के कई मामले सामने आते हैं, लेकिन इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। दुनिया में कई हैरान करने वाली घटनाएं होती हैं। कभी-कभी कुछ ऐसा होता है जिस पर यकीन नहीं होता है। उदाहरण के लिए दरवाजे का अपने आप बंद हो जाना है या किसी के शरीर में किसी का प्रवेश कर जाना है। इन बातों का समझना बेहद मुश्किल होता है।

रात में होती है काफी शांति

बता दें कि अभी तक जितने भी लोगों ने भूत- प्रेत देखने का दावा किया है। उन्होंने उन्हें रात के समय में ही देखा है। दिन के समय उनका प्रभाव क्यों कम हो जाता है? इसके पीछे की वजह को लेकर पैरानॉर्मल एक्सपर्ट्स ने एक थ्योरी दी है। उनके मुताबिक भूत-प्रेत रात के समय इसलिए दिखते हैं, क्योंकि उस दौरान काफी शांति होती है। रात के वक्त इलेक्ट्रॉनिक डिस्टरबेंस भी काफी कम होता है। पैरानॉर्मल एक्सपर्ट्स का ये भी कहना है कि दिन के समय अत्यधिक इलेक्ट्रॉनिक डिस्टरबेंस भूतों की ऊर्जा को डिस्टर्ब कर देती है। यही एक बड़ा कारण है, जिसके चलते भूत -प्रेत रात के समय सक्रिय होते हैं।

इंसान की आत्मा रहती है जिंदा

हालांकि, भूत-प्रेत और आत्माओं के रहस्य से अब तक पर्दा नहीं उठ पाया है। वहीं, देश-दुनिया में ऐसे कई लोग हैं, जो इस बात का दावा करते हैं कि उन्होंने भूतों को देखा है। पैरानॉर्मल एक्सपर्ट्स के मुताबिक, मरे हुए इंसान की आत्मा उसके शरीर के खत्म होने के बाद भी जिंदा रहती है। यही आत्मा अपने अस्तित्व को अजीबोगरीब ढंग से व्यक्त करने की कोशिश करती है। इसे ही भूत-प्रेत कहा जाता है। भूत प्रेत को लेकर विभिन्न मान्यताएं और दृष्टिकोण हैं। भूतों पर यकीन करने वाले लोगों की मानें तो जिन लोगों की कोई महत्वपूर्ण इच्छा पूरी नहीं हो पाती या उनकी असमय मृत्यु होती है, वही लोग भूत बनकर भटकते हैं। लंबे समय से कई पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर रहस्यमय स्थानों पर जाकर भूत-प्रेतों की तफ्तीश करते आ रहे हैं।

रोचक खबरें

आसमान में 'V' शेप में क्यों उड़ता है पक्षियों का झुंड?

लंदन। दुनियाभर में पक्षियों की 9000 से भी ज्यादा प्रजातियां हैं, जिनमें से 1000 से ज्यादा प्रजातियां तो केवल भारत में ही मौजूद हैं। आसमान में उड़ते हुए पक्षियों के झुंड में क्या आपने कभी नोटिस किया है कि वे 'V' शेप में ही क्यों उड़ती हैं?

पक्षियों के 'V' शेप में उड़ने को लेकर कई कारण बताए जताए हैं। कई रिसर्च के मुताबिक वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे पक्षियों को उड़ने में बेहद आसानी होती है और वे आपस में टकराने से भी बच जाते हैं। वहीं, झुंड में सबसे आगे उड़ रहा पक्षी सभी को लीड कर रहा होता है। 'लंदन कॉलेज' के 'वेटरनरी कॉलेज' के प्रोफेसर जेम्स उशरवुड के मुताबिक पक्षियों के लिए 'V' शेप में उड़ने से हवा को काटना आसान हो जाता है। साथ ही इससे अन्य पक्षियों को भी उड़ने में आसानी होती है। पक्षी जब उड़ना सीखते हैं तो वह इसी आदत में ढल जाते हैं।

तेज उड़ने को लेकर नहीं मचती होड़

कई वैज्ञानिकों का तर्क है कि झुंड में आगे उड़ने वाला पक्षी जब थकने लगता है तो कोई दूसरा पक्षी बाकी पक्षियों को लीड करने के लिए आगे आता है, जिससे सभी पक्षी एकसाथ और एक के पीछे एक करके उड़ते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि पक्षियों में सबसे आगे या तेज उड़ने को लेकर कोई होड़ नहीं मची रहती है। सभी पक्षियों के पास बराबर अधिकार होते हैं। वहीं जो पक्षी सबसे पहले उड़ना शुरू करता है, वह आगे होता है और बाकी उसके पीछे ही उड़ने लगते हैं।

उड़ान भरने में होती है आसानी

जेम्स उशरवुड के मुताबिक 'V' फॉर्मेशन में उड़ने से पक्षियों को उड़ान भरने में काफी आसानी भी होती है। इससे बाकी पक्षियों को उड़ते समय एक दूसरे के पंखों के टकराने की समस्या नहीं होती. साथ ही उनकी एनर्जी भी बची रहती है। इसके अलावा इससे वे सामने की हवा को भी कंट्रोल कर सकते हैं।

धीरे-धीरे जमीन में धंस जाएगा अमेरिका का ये बड़ा क्षेत्र? नई स्टडी में चौंकाने वाला खुलासा

न्यूयार्क। ऑस्टिन में मौजूद टेक्सास यूनिवर्सिटी के रिसर्चर ने एक अहम जानकारी जुटाई है। उन्होंने अपने नए अध्ययन पाया है कि मध्य-पश्चिम के नीचे गहराई में दबा हुआ पृथ्वी की पपड़ी का एक टुकड़ा एक्टिव है और आज के उत्तरी अमेरिकी पपड़ी के बड़े हिस्से को मेंटल में खींच रहा है। इसे वैज्ञानिक 'क्रैटोनिक थिनिंग' कह रहे हैं। भूकंपीय इमेजिंग का इस्तेमाल करते हुए वैज्ञानिकों ने मध्य अमेरिका के नीचे विशाल, टपकन-जैसी स्ट्रक्चर्स का अवलोकन किया, जिससे पता चलता है कि लिथोस्फीयर (पृथ्वी की कठोर बाहरी परत) पतला हो रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह से महाद्वीप के प्राचीन कोर, या क्रेटन के आधार से मैटेरियल मेंटल संक्रमण क्षेत्र में डूब रही है। यह पहली बार है जब शोधकर्ताओं ने क्रैटोनिक थिनिंग की क्रिया को संभावित रूप से पकड़ा है, जैसा कि नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित एक पेपर में विस्तार से बताया गया है।

रिसाव क्यों हो रहा है?

जियो डायनामिक्स मॉडल बताते हैं कि उत्तरी अमेरिका के नीचे विशाल भूमिगत 'टपकन' संभवतः बड़े पैमाने पर मेंटल प्रवाह के कारण होता है, जो लंबे समय से उप-प्रवाहित फैरालोन स्लैब द्वारा गतिमान होता है, जो अब निचले मेंटल में गहराई में है। यह प्राचीन स्लैब ऊपरी लिथोस्फीयर को कमजोर कर सकता है, जिससे यह मेंटल में टपकने के लिए तिरछा हो जाता है। रिसर्चर ने अपने शोध में पाया कि ये टपकने जैसी स्ट्रक्चर्स करीब 640 किलोमीटर (400 मील) भूमिगत फैली हुई हैं और मिशिगन, नेब्रास्का और अलबामा सहित एक विस्तृत क्षेत्र के नीचे मौजूद हैंय हालांकि ये मध्य-पश्चिम में केंद्रित हैं, लेकिन इनका जियोलॉजिकल इफेकक्ट्स उत्तरी अमेरिका के अधिकांश भाग तक फैल सकता है। स्टडी इन बूंदों के निर्माण को फरालोन प्लेट से भी जोड़ता है, जब एक बार सक्रिय समुद्री प्लेट जो उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी किनारे के नीचे धंस गई थी।करीब 20 मिलियन साल पहले, जब प्रशांत प्लेट आगे बढ़ी, तो फरालोन प्लेट टूट गई। बचे हुए स्लैब मेंटल में उतरते रहे और धीरे-धीरे उत्तरी अमेरिकी लिथोस्फीयर के टुकड़ों को अपने साथ खींचते रहे।

एक ग्रह लंबे समय में कैसे विकसित हुआ

यह स्टडी महाद्वीपों के विकास की खोज करने वाले भूवैज्ञानिकों के लिए खासतौर पर बहुत कीमती है। जैक्सन स्कूल के प्रोफेसर और सह-लेखक थोरस्टन बेकर ने कहा,'अगर हम यह समझना चाहते हैं कि एक ग्रह लंबे समय में कैसे विकसित हुआ है, तो इस तरह की चीजें महत्वपूर्ण हैं। इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि आप महाद्वीप कैसे बनाते हैं, उन्हें कैसे तोड़ते हैं और उन्हें (पृथ्वी) में कैसे रीसाइकिल करते हैं।'

ये क्षेत्र कैसा दिखता है?

रिसर्चर ने पाया कि मिडवेस्ट के नीचे एक बड़ा फ़नल के आकार का क्षेत्र उत्तरी अमेरिका से चट्टानों को अपनी ओर खींच रहा है, इससे पहले कि वे पृथ्वी के मेंटल में डूब जाएं। इस प्रक्रिया के कारण महाद्वीप के कुछ हिस्सों में उनकी पपड़ी के नीचे की मैटेरियल कम हो रही है। यूटी के जैक्सन स्कूल ऑफ जियोसाइंसेज में पोस्टडॉक्टरल फेलोशिप के दौरान शोध करने वाले चीफ लेखक जुनलिन हुआ ने कहा, 'हमने पाया कि क्रेटन के नीचे कुछ हो सकता है।' 'सौभाग्य से, हमें इस बात पर विचार करने का भी मौका मिला कि इस पतलेपन का कारण क्या है।' हालांकि यह घटना अहम है, लेकिन रिसर्चर ने जोर देकर कहा कि चिंता का कोई तत्काल कारण नहीं है - टपकने की प्रक्रिया धीरे-धीरे होती है और फ्यूचर में लैंडस्केप को प्रभावित नहीं करेगी। उम्मीद है कि यह आखिरकार बंद हो जाएगी, क्योंकि प्राचीन टेक्टोनिक प्लेट का टुकड़ा गहराई में डूब जाएगा और क्रेटन पर अपना इफेक्ट खो देगा।

पत्नी को सबक सिखाने के लिए शख्स ने अपने दुधमुंहे बच्चे के साथ जो किया वो है शॉकिंग

बैंकाक। थाईलैंड से एक बेहद परेशान करने वाली खबर सामने आई है, जहां एक शख्स ने अपने दुधमुंहे बच्चे को जंगल में सिर्फ इसलिए मरने के लिए छोड़ दिया, क्योंकि वह अपनी पत्नी से एक बात का बदला लेना चाहता था। यही नहीं, शख्स ने जंगल में पड़े अपने बच्चे की तस्वीर खींची और उसे पत्नी को भेज दिया। मामला पुलिस तक पहुंचने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

एक रिपोर्ट के अनुसार 21 वर्षीय वुट्टीचाई अपने दो हफ्ते के बेटे को लेकर जंगल गया। जहां उसने बच्चे को जमीन पर रखकर उसकी कुछ तस्वीरें खींची और फिर अपनी 22 वर्षीय पत्नी ओराथाई को भेज दिया। महिला तब अपने दोस्तों के घर पर थी। बच्चे की तस्वीर देखते ही वो बुरी तरह घबरा गई और फौरन मुखिया को इस घटना की सूचना दी। वहीं, मामले को तूल पकड़ता देखकर वुट्टीचाई बच्चे को वापस घर लेकर आ गया। लेकिन, तब तक ओराथाई थाने में पति की शिकायत कर चुकी थी। ओराथाई ने आरोप लगाया कि उसका पति ड्रग्स का आदी है। जुआ खेलता है और उसके साथ मारपीट करता है। महिला ने बताया कि बच्चे के जन्म के तुरंत बाद जब उसने फिजिकल होने से मना किया, तो पति नाराज हो गया और इसी बात को लेकर दोनों के बीच काफी झगड़ा भी हुआ था।

13000 साल पुराने दांत, 72,000 साल पुरानी खोपड़ी का किया रिसर्च, फिर जो बना उसकी पूरी दुनिया में हो रही चर्चा

न्यूयार्क। अमेरिका में वैज्ञानिकों ने एक कमाल कर दिखाया है। उन्होंने आनुवंशिक बदलाव के जरिए तीन भेड़िए शावकों को तैयार किया है, जो दिखने में 10,000 साल पहले विलुप्त हो चुके 'डायर वुल्फ'जैसे लगते हैं। ये शावक अभी 3 से 6 महीने के हैं और किसी गुप्त, सुरक्षित जगह पर रह रहे हैं। ये खबर 'कोलोसल बायोसाइंसेज'कंपनी ने दी है, जो विलुप्त प्रजातियों को फिर से लाने पर काम कर रही है।

बनाए गए तीन भेड़िए

एसोसिएटेड प्रेस में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक, रिसर्च करने वाले वैज्ञानिकों के मुताबिक, इन शावकों के बाल लंबे और सफेद हैं, जबड़े मजबूत हैं और अभी इनका वजन 80 पाउंड (36 किलो) है। बड़े होने पर ये 140 पाउंड (63 किलो) तक पहुंच सकते हैं। 'डायर वुल्फ'अपने समय में आज के 'ग्रे वुल्फ'से कहीं बड़े और ताकतवर थे, जो इनके सबसे करीबी रिश्तेदार हैं।

विलुप्त प्रजातियों को दोबारा पैदा करने की हो रही कोशिश

'कोलोसल बायोसाइंसेज'का कहना है कि ये शुरुआत है। कंपनी पहले से ही वूल्ली मैमथ और डोडो जैसी विलुप्त प्रजातियों को लाने की कोशिश कर रही है। लेकिन, कुछ वैज्ञानिकों को शक है कि क्या ये भेड़िये सचमुच उत्तर अमेरिका के जंगलों में फिर से रह पाएंगे। अभी इन तीन शावकों को सुरक्षित जगह पर रखा गया है, जहां इनकी देखभाल हो रही है।

जानें कैसे बनाए गए भेड़िए

डायर वुल्फ 10,000 साल से अधिक समय पहले विलुप्त हो गए थे। इसके बाद 'कोलोसल'की मुख्य वैज्ञानिक बेथ शापिरो ने बताया कि वैज्ञानिकों ने पुराने जीवाश्मों से डीएनए निकाला। ओहियो में मिले 13,000 साल पुराने दांत और इदाहो में मिले 72,000 साल पुराने खोपड़ी के टुकड़े से 'डायर वुल्फ'के खास गुणों का पता लगाया गया।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

बफेलो विश्वविद्यालय के जीवविज्ञानी विन्सेंट लिंच, जो इस शोध का हिस्सा नहीं थे उन्होंने कहा कि ये कोशिश बड़ी है, लेकिन अभी हम सिर्फ सतही तौर पर 'डायर वुल्फ'जैसा कुछ बना सकते हैं। इन्हें पूरी तरह वापस लाना मुमकिन नहीं है। उनका मानना है कि ये भेड़िये दिखने में तो पुराने 'डायर वुल्फ' जैसे हो सकते हैं, लेकिन इनका व्यवहार और असली गुण वैसा नहीं होगा।

किराए की कोख में पैदा हुए भेड़िए के बच्चे

इसके बाद एक जिंदा 'ग्रे वुल्फ'की खून की कोशिकाओं को लिया गया और सीआरआईएसपीआर तकनीक से उसमें 20 जगहों पर बदलाव किए गए। सीआरआईएसपीआर एक ऐसी तकनीक है, जिससे जीन में सटीक बदलाव संभव हैं। फिर इस बदले हुए डीएनए को एक घरेलू भेड़िए के अंडे में डाला गया। इस अंडे को एक सरोगेट (किराए की कोख) मादा भेड़िए में डालकर 62 दिन बाद इन शावकों का जन्म हुआ। ये शावक दिखने में 'डायर वुल्फ'जैसे हैं, लेकिन वैज्ञानिकों का कहना है कि ये पूरी तरह वही नहीं हैं।

'अमीर' लड़के पटाना सिखाती है महिला

बीजिंग। आपने देखा होगा कि लोग अच्छी तरह व्यवहार करने की ट्रेनिंग लेते हैं, लेकिन शायद ही कभी ऐसी क्लास के बारे में सुना हो, जिसमें ये सिखाया जाए कि कैसे लड़के पटाए जाएं. चीन में एक महिला ऐसी ही क्लास दे रही है। हमारे आसपास बहुत से लोग हैं, जो अपनी स्किल्स को बढ़ाने के लिए अलग-अलग क्लासेज लेते हैं। आमतौर पर वे ऐसी चीजें सीखते हैं, जो उन्हें नहीं आतीं या उन्हें बेहतर करनी हैं। कोई डांस क्लास जाता है तो कोई स्पीच क्लासेज लेता है। हालांकि, शायद ही आपने किसी को पार्टनर पटाने की क्लास लेते या देते हुए देखा होगा। पड़ोसी देश चीन में इसकी क्लासेज भी चल रही हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक महिला का नाम ली चुआनकू है, जो एक सोशल मीडिया एनफ्लुएंसर है।

प्रेमिका ने तोड़ा रिश्ता, बदला लेने प्रेमी चुरा ले गया पालतू मुर्गा!

वॉशिंगटन। प्यार की कहानियां भी कमाल होती हैं। कोई प्यार में इस हद तक पागल हो जाता है कि अपना सब कुछ खोने को तैयार हो जाता है। वहीं, कुछ लोग प्यार में मिले धोखे के बाद यूं बावले हो जाते हैं कि वो कुछ भी करके अपने पार्टनर से बदला लेना चाहते हैं। एक ऐसी ही दिलचस्प कहानी अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन से सामने आई है।

चोरियां बहुत सुनी होंगी आपने लेकिन शायद ही कभी ऐसा कुछ सुना हो। एक प्रेमी ने अपनी प्रेमिका से ब्रेकअप का बदला लेने के लिए उसका पालतू मुर्गा ही चुरा लिया। दिलचस्प ये था कि पुलिस ने उसे ढूंढ भी लिया। खुद किटसैप काउंटी शैरिफ ऑफिस की ओर से इस वाक्ये को शेयर किया गया है, जो सुर्खियों में है। एक रिपोर्ट के मुताबिक एक महिला ने पुलिस को फोन करके कहा कि उसके पूर्व प्रेमी ने उसके घर में आकर पिछला दरवाज़ा तोड़ दिया और घर से पालतू मुर्गा चुरा ले गया। पुलिस ने इस पर तत्काल एक्शन लेते हुए शख्स को जंगलों के बीच से पकड़ा। पुलिस के मुताबिक वो लगातार चिल्ला रहा था 'मुझे पॉली मिल गया'। जब पुलिस को शख्स मिला, तो बहुत ही अलग सीन था। पुलिस ने बताया कि शख्स वहां मुर्गे को पकड़कर रो रहा था। उसने ऑफिसर्स से कहा – मेरे मुर्गे को चोट मत पहुंचाइएगा। पुलिस ने उसे शांत करते हुए कहा कि तुम अपने मुर्गे को पकड़े रहो, हम उसे चोट नहीं पहुंचाने वाले हैं। उसने पुलिस की बातें मानीं और आखिरकार मुर्गे को पेट्रोलिंग वाले वाहन में बिठाया। शख्स को अरेस्ट करने के बाद मुर्गा उसकी मालकिन को लौटा दिया गया। इस पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है।

यह कॉम्पाउंड सिर्फ लीवर कैंसर के केस में है कारगर

चीन ने खोजा ऐसा फॉर्मूला कि तुरंत लग जाएगा कैंसर पर ब्रेक

बीजिंग। चीनी वैज्ञानिकों ने लीवर कैंसर के उपचार में एक महत्वपूर्ण खोज की है। उन्होंने पाया है कि सिलीबिन नामक प्राकृतिक यौगिक एमसीटी1 प्रोटीन को रोककर कैंसर कोशिकाओं में लैक्टेट के संचय को बढ़ाता है, जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है। यह खोज कैंसर के प्रभावी उपचार के विकास में मील का पत्थर साबित हो सकती है। सस्ता उपचार खोजने के बाद चीन के वैज्ञानिकों ने कैंसर को लेकर एक और नई खोज की है। चीनी वैज्ञानिकों ने लैक्टेट के परिवहन तंत्र की खोज की है, जिस दौरान ऐसे तत्व के बारे में पता चला जो कैंसर जैसी घातक बीमारी को पहली स्टेज में ही रोक सकता है। सीजीटीएन के मुताबिक लैक्टेट जो कैंसर कोशिकाओं के लिए महत्वपूर्ण ईंधन है और कैंसर की बढ़ने में मदद करता है, उसे खोजे गए सिलीबिन नामक एक प्राकृतिक यौगिक के जरिए रोका जा सकता है।

लीवर कैंसर के बारे में जानिए

लीवर कैंसर एक ऐसी स्थिति है, जिसमें लीवर की कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ने लगती हैं और ट्यूमर बना लेती हैं। यह कैंसर प्रथम चरण (लीवर से शुरू होने वाला) या दूसरा चरण (किसी अन्य अंग से फैलकर लीवर में पहुँचना) हो सकता है। लीवर कैंसर के लक्षण धीरे-धीरे उभरते हैं और शुरुआत में बहुत सामान्य लग सकते हैं, जिससे पहचान करना मुश्किल होता है। आम लक्षणों में पेट के ऊपरी दाएं हिस्से में दर्द या सूजन, अचानक वजन घटना, भूख न लगना, लगातार थकान, मतली, उल्टी और आंखों या त्वचा का पीला पड़ना (पीलिया) शामिल हैं।

नए उपचार विकसित करने में मिलेगी मदद

तिआनजिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ये शेंग और उनकी टीम ने एक रिसर्च में यह पता लगाया कि एमसीटी1 एक ट्रांसपोर्टर प्रोटीन कैंसर कोशिकाओं से लैक्टेट बाहर निकालता है। उन्होंने पाया कि सिलीबिन इस ट्रांसपोर्टर को रोक सकता है।

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक प्रियंक सिंह परिहार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से मुद्रित एवं हरिभूमि कार्यालय, रिंग रोड नं. 2, गौरव पथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादकः प्रवीण शुक्ला। RNI No. CHHHIN/2001/03764, फोन : 07752-401050, फैक्स : 07752-401052. e-mail : bilaspur@haribhoomi.com